आचार्य श्री प्रवचन

(23.10.2020 से 07.03.2021 तक)

भाग - 16

गुरुवर की वाणी,
बने सबकी कल्याणी

अन्य भाग हेतु : 108guruvani.blogspot.com

संकलन :
मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज

नेमी नगर,
जैन कॉलोनी
प्रवेश

२३-१०-२० भारतीय संस्कृति - स्वस्थ संस्कृति शुक्रवार

- कर्मों के आगे किसी की भी नहीं चलती। दीक्षा के बाद प्रथम चातुर्मास है जब स्थापना के बाद जैन नगर की ओर आ गये।
- कोरोना के कारण सामुहिक असाता का ऐसा उदय आया जो वर्ष भर तक चल रहा है।
- असंयमी होकर भी कोरोना ने सबको संयम का पाठ पढ़ा दिया, आप लोग संयम महोत्सव मना रहे हैं। छविगृह, होटल, रात का सब छूट गया।
- भारतीय संस्कृति में ही संयम की आराधना होती है, विश्व के लिए एक मिशाल है।
- सारे विश्व में जब हाहाकार मच रहा था - भारत सबको आयुर्वेद का काढ़ा पिला रहा है।
- शाकाहार एवं शुद्ध औषधी भारत के पास ही है।
- रोग हो और चिकित्सा न हो ऐसा हमारे आयुर्वेद में है ही नहीं, अब सब मानने लगे हैं।
- भारत में आहार ही औषध है, जो शक्तिप्रद, वीर्यप्रद, एवं बुद्धि के विकास में सहायक होता है।
- ऐलोपैथी में जहाँ एक माह लगता है वहीं आयुर्वेद से स्वस्थ होने में 7 दिन मात्र लग रहे हैं।
- अध्यात्म को सबके सामने रखने वाला भारत ही मात्र देश है
- प्रवचन न सही दर्शन ही मिल जाये। उपयोग हो जाये। हम आगे
- ड्राइवर (चालक) गाड़ी को चलाकर पहले देख लेता है।

०००

शरद्पूर्णिमा

31-10-20 संकल्प से परिवर्तन शनिवार

संस्मरण - देहली के तिहाड़ जेल के कैदियों ने आचार्य श्री के नाम एक खुला पत्र लिखा। जो प्रतिदिन गुरुजी की फोटो के सामने प्रार्थना-पूजा-भक्ति करते थे। उन्होंने लिखा - "बाबा आप कब आओगे?" तब आचार्य श्री ने तात्कालिक बुद्धि को आशीर्वाद भेजूं ऐसा सोचकर एक हायकू बनाया - "भले ही दूर हूँ, निकट भेज देता, अपनापन।"

विद्या-वाणी

- जैसा पत्र कैदियों ने लिखकर भेजा, वैसा कोई जैनी भाई लिखकर नहीं भेज पाता।
- भीतरी परिवर्तन ही एक मात्र धर्म का प्रतीक होता है।
- दूर भले ही रहो परन्तु आप अपनापन को भेज ही सकते हो।
- जो भी संकल्प लो उसका पालन जीवन पर्यन्त करना है। उसी संकल्प से जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन आये बिना नहीं रहता।
- जेल में कैदियों के इस परिवर्तन को देख मुझे इस युग में भी सतयुग का नजारा दिख रहा है।
- यहाँ जड़ को नहीं चेतन को महत्व दिया जाता है। हाँ! पैसे वालों की ओर इसलिए देखते हैं ताकि उनका परिग्रह सदुपयोग हो सके।

ooo

विजयनगर

5-11-20 नौकर नहीं, उद्योगपति बनें गुरुवार

- अब वन टू थ्री की संस्कृति छोड़ दो और एक दो तीन की संस्कृति अपनाओ जो रत्नत्रय का प्रतीक है।
- नौकरी की अपेक्षा से विदेशी संस्कृति पर श्रद्धान है, जहाँ न तो भगवान हुये हैं, न ही आगे होंगे।
- भारत में नौकरी नहीं कामकाज देकर उद्योगपति बनाये जाते हैं। स्वाश्रीत बनने की कला सीखायी जाती है।
- विदेशों में जीवन व्यसनों से ही ग्रसित हो जाता है, जब की निर्व्यसन होने का पाठ भारतीय संस्कृति में घूटी में पिलाया जाता है।
- आदर्श पुरुषों को जिस समय याद करो वही समय दिपोत्सव का कहलाता है।
- लक्ष्मी तो मखमल की गादी पर सोती है और आपको सर्दी में भी कम्बल भी नसीब नहीं होता।
- भारतीय संस्कृति में जड़ का महत्त्व नहीं-चेतन का है।
- विश्वास मस्तिष्क में नहीं दिल में रहता है। ज्यादा सोचते हैं तो बहक जाते हैं।
- जितनी राशी दान में दे रहे हैं उससे भी कई गुना वर्षों तक यहाँ मन्दिर बनने आ रहा है।
- हमारा इतिहास राग का नहीं वीतराग का इतिहास है।
- समय मिलने पर नहीं, समय निकालकर धर्म करना चाहिए।

6-11-20 श्वान से लें शिक्षा शुक्रवार

जिस प्रकार कुत्ता कृतज्ञता से भरा होता है, स्वामीभक्त होता है, रात्रिजागरण भी कहलाता है उसीप्रकार एक साधक को साधना हेतु इन बातों का ध्यान रखना परम आवश्यक है।

अनमोल - वचन

- कैमरा बाहर का चित्र उतारता है किन्तु एक्सरा भीतर का चित्र लेता है। हमें एक्सरे की तरह भीतरी भावों पर नजर रखना चाहिए तभी पता लगेगा कि हमारे भीतर क्या-क्या विकृति है।
- संस्मरण- जंगल जाते समय एक-दो कुत्तों को देखा जो ठेले पर फल (केले आदि) रखे थे पर उधर देखा तक नहीं मतलब बिना दिये लेंगे नहीं। इसी तरह व्यक्ति करें तो सर्वत्र शान्ति स्थापित हो जाये।
- साधु भी स्वयं तो बनाते ही नहीं। दाता प्रसन्नता से बुलाता है तब जाते हैं, वहाँ भी बिना दिये कुछ भी ग्रहण नहीं करते।
- पराथी वस्तु पर अधिकार जमाना ही संसार का कारण है।
- थोड़ा भी निकालेंगे तो आसमान सा बहुत बड़ा फल मिलेगा।
- श्वास भिदा नहीं लेता और आप खुर्राटे भरते रहते हैं, ऐसे में आपकी एवं आपके सामान की रक्षा कौन करेगा?
- प्रकाश पहुँचाना हमारा कर्तव्य है परन्तु आँखे खोलना आपका परम कर्तव्य है।

o o o

7-11-20 बीजत्व नष्ट करने का उपाय • शनिवार

जिस प्रकार से वृक्ष एवं फल अथवा बीज का अनादि से संबंध है उसी प्रकार से इस देह एवं आत्मा का भी अनादि से सम्बन्ध है।

जिस प्रकार एक बार बीज को भुन दे, जला दें तो वह पुनः अंकुरित नहीं होता उसी प्रकार यदि एक बार कर्मों को समूल नष्ट कर दें तो पुनः जन्म-मरण नहीं होगा। राग-द्वेष रूपी बीजत्व को जलाना होगा।

विद्या-वाणी

- राग-द्वेष से बंध, बंध है तो उदय, उदय में पुनः राग-द्वेष यही संसार परिभ्रमण का कारण है।
- हमारे राग-द्वेष जल जाये ये इरादा भीतर से होना चाहिए। अभी तो हम राग-द्वेष से जल रहे हैं।
- वीतरागता के सामने पुण्य-उदय से बैठे हो तो सार्थक तभी होगा जब बीजत्व को जला दें - सुखा दें - अंकुरण होने की शक्ति को नष्ट कर दें।
- आपको दुनिया नहीं छोड़ना, दुनिया से मतलब छोड़ना है।
- भगवान कोई गतिविधि नहीं करते और हम कभी भी गतिविधि से रहित नहीं होते, यही संसार दशा है।
- भगवान के पास जाने का सौभाग्य पाना चाहते हो तो उस प्रकार का टिकिट हाथ में लेना होगा। इरादा तो पक्का रखो तभी उन जैसा बन पाओगे। ०००

8-11-20 भाव प्रधान है धर्म, रविवार

"अष्ट द्रव्य यदि पैर में रखायें तो पुण्य नहीं लेकिन गुरु चरणों में चढ़ायें तो महापुण्य है। इसी तरह गन्ध भी है और उदक भी पर वह गन्धोदक नहीं जब कि गुरु चरणों की धूल भी उस गन्धोदक से बहुत पवित्र मानी जाती है।"

गुरु-वाणी

- पीछे से आये हो, पीछे ही रहीयो। पंक्तिबद्ध होकर आना है।
- धर्म हमेशा-हमेशा भाव-प्रधान ही होता है द्रव्य प्रधान नहीं।
- प्रभु ने मान को जीता, हमें भी जीवन पर्यन्त उसे जीतने का पुरुषार्थ करना है।
- कषायों से ही संसार बढ़ रहा है।
- एक हाथ से देते हो तो हमारा एक हाथ से आशीर्वाद, यदि दोनों हाथ से दोगे तो दोनों हाथों से आशीर्वाद मिलेगा।
- बाजार में उसे अहोभाग्य मानते है जिसके पास पैसा रहता है, यहाँ उल्टा है जिसके पास प्रभु चरणों में चढ़ाने के बाद कम रह गया वह अहोभाग्य है और पुरा ही चढ़ा दिया वह महाभाग्यवान् है।
- वापस नहीं जाना, यदि मेरे जैसे बनना है तो संकल्प से भी वापस नहीं जाना है।
- बिना भगवान के मन्दिर नहीं वैसे ही बिना भक्ति के भक्त नहीं।

9-11-20 "दान करो अगरबत्ती सा" सोमवार

कुवत कम गुस्सा ज्यादा
लक्षण है पिट जाने का।
आमद कम खर्चा ज्यादा
लक्षण है मिट जाने का।।

"जिस प्रकार छोटी सी अगरबत्ती को जलाने से पूरा कमरा सुवासित हो उठता है उसी प्रकार हमें स्वयं जलकर भी दूसरों को सुख-शांति आनन्द प्रदान करना चाहिए।"

"अनमोल-वचन"

- अगरबत्ती में आग रहते हुये भी भीतरी आग को शांत करने में कारण बनती है।
- द्वेष रूपी आग को मत फैलाओ।
- ऐशो-आराम को चाहने वाला व्यक्ति कभी भी प्रभु के निकट नहीं आ सकता। वह तो भगवान से बहुत दूर चला जाता है।
- हओ बोलना सीखो। बुन्देलखण्ड का बहुत ही प्रिय शब्द है हओ।
- जितना कष्ट सहन करोगे उतना ही मीठास का अनुभव होगा।
- हम लेन को तो भूल जाये मात्र देन को ही याद रखो। कड़वाहट नहीं मीठास डालो।

10-11-20 "हथकरघा के वस्त्रों का लाभ" मंगलवार

अहिंसक वस्त्र ही पहनने एवं छूने के योग्य हैं किन्तु आज हिंसक वस्त्रों का ही बोलबाला है। वस्त्र पहनने से ही व्यक्ति सभ्य माना जाता है। इस सभ्यता को भूल गये और हर कोई भी वस्त्र, फटा हुआ, कटा हुआ अपना लेते हैं।

पाँच लाभ अथवा महत्व

1. मन्दिर में प्रक्षाल का छन्ना हो तो मात्र शुद्ध हथकरघा का वस्त्र है।
2. जिनवाणी का वेष्ठन
3. पानी छानने का छन्ना
4. चोट लगने पर पट्टी
5. अन्तिम समय में कफन

उपरोक्त पाँचों में हमेशा शुद्ध सूती अहिंसक वस्त्र काम में लेते हैं फिर पहनने में भी हथकरघा के वस्त्र ही काम में लें।

- वैदिक परम्परा से भी पूर्व की परम्परा है घर में सूत कातना एवं वस्त्र बुनना।
- मैं व्हाट्सअप को याद नहीं करता परन्तु आप लोगों को व्हाट्सअप मानकर अपनी बात सब तक पहुँचाना चाहता हूँ।

ooo

11-11-20 ऐसे बनेगा जिन मन्दिर बुधवार

- मन्दिर शिलान्यास की बात आयी है, अभी भी सोच लो फिर वापस नहीं लौटना है।
- मंगलाचरण होने के बाद चरण पीछे नहीं बढ़ाना।
- निरन्तर चलते रहना है मतलब रुकना नहीं, लौटना नहीं एवं अति विश्वास में भागना भी नहीं है।
- समाज-कमेटी एवं कार्यकर्ता सब मिलकर काम करने से ही सफलता मिलती है।
- कंधों पर भार लें एवं हाथों से कर्तव्य करें तभी कार्य होगा।
- कर्तव्यनिष्ठ ही दिन-रात संकल्प (लक्ष्य) को सामने रखता है।
- कार्यकर्ताओं का उत्साहित होना जरूरी है।
- भगवान एवं मन्दिरों को विभाजित न करें, इसलिए विजयनगर का नहीं यह मन्दिर पूरे इन्दौर का है।
- धनतेरस का शुभ मुहूर्त, स्वयं कह रहा है - मैं आ रहा हूँ।
- सांसारिक विजय से कोई प्रयोजन नहीं, आत्मा पर विजय पाना ही सच्ची विजय है फिर दुनिया की सम्पदा की कोई जरूरत ही नहीं पड़ेगी।
- शुभ दिन, शुभ भावों से जो शुभ प्रयास हो रहा है, हम भी उसमें भागीदार बन जायें, ऐसी भावना है।

०००

12-11-20 लाभ देशी वस्त्रों के गुरुवार

- वन के पास जो होता है उसे उपवन कहते हैं, नगर के पास जो होता है उसे उपनगर कहते हैं। उपवन में जैसे शुद्ध हवा, बाग-बगीचा होते हैं वैसे ही यहाँ का वातावरण वातानुकूल है, बातानुकूल नहीं।
- व्यवस्था का अर्थ है आस्था को व्यवस्थित करने का उपक्रम।
- दो तरह के सूत (वस्त्र) होते हैं- देशी-विदेशी। देशी वस्त्र जितने लाभप्रद हैं उतने ही विदेशी सूत से बने वस्त्र हानिकारक। एक आरोग्य का हरण करने वाला है तो दूसरा आरोग्य को धारण। एक वाता-नुकूल है तो दूसरा बातों के अनुकूल
- विदेशी वस्त्र आरोग्य के सामने घुटने टेक देते हैं, अर्थात उनमें घुटन होने लगती है।
- विदेशी सूत के वस्त्र फटने के बाद जलाने पर दुर्गन्ध एवं पर्यावरण प्रदूषित होता है जब कि देशी सूत से बने वस्त्र को जलाने के बाद राख भी औषधी बन जाती है और कपूर की भाँति उड़ जाती है।
- देशी सूत फटने के बाद भी गुदड़ी के लाल की तरह काम आता रहता है।
- भारतीय वस्त्र भारी नहीं, हल्का रहता है किन्तु सबका प्रभारी बनी रहता है। आप भी भारी नहीं-प्रभारी (श्रेष्ठ) बनो।

□□□

प्रातः
13-11-20 पहली रोटी गैया की शुक्रवार

- चातुर्मास के बीच में मन्दिर का शिलान्यास होगा कभी सोचा भी नहीं होगा।
- कार्यकर्ता रात-दिन एक करते है तभी लक्ष्य में सफलता की प्राप्ति होती है।
- नाम इन्दौर का है विजय तो विजयनगरवालों को ही मिलेगी।
- 13 मन्दिरों के पंचकल्याणक में राजस्थान के अजमेर से भी मूर्तियाँ आयी। बहुत सुन्दर सभी देखकर प्रमुदित हो जाते हैं।
- शिलान्यास में कुवत के अनुसार पहले से ही नक्की - पक्का - (परिपक्व) करके आना है।
- पहली रोटी गैया की वैसा ही इस धर्मार्थ कार्य के लिए निकालना है।
- जैसे किसान सिट्ठों में से पहले ही दाने चुनचुनकर निकाल लेता है उसी तरह आप भी अपनी आय में से कुछ हिस्सा मन्दिर के लिए निकालेंगे।
- विषय - कषाय से हटाकर विषयातीत होने का जिन मन्दिर एक सेतु है। साधन है।
- गगन चुंबी शिखर देख लोगों की पगड़ीयाँ नीचे गिर जायेगी।
- उत्साह - उमंग हो तो 1-2 घन्टे में ही काम, स्मृतिनगर, आवासा वालों की तरह कर सकते हैं।

०००

13-11-20 मन्दिर शिलान्यास मध्याह्न

- तीन काल होते हैं - अतीत, अनागत एवं वर्तमान किन्तु एक चौथा काल भी होता है वह है - आपत्तिकाल।
- नाम लिखवाते हैं पर मरणोपरांत गुमनाम हो जाते हैं। यहाँ का नाम स्वर्ग में नहीं चलता। वहाँ का नाम कथंचित् बोलियों में यहाँ चलता है।
- जब तक पुतपूर्व न हो तब तक नाम चलता ही रहता है।
- जिस प्रकार से सरीता जब प्रारम्भ होती है तो पतली सी होती है फिर धीरे-धीरे अन्य सरीता से मिल विशाल सागर का रूप ले लेती है। अब सागर है सरीता नहीं। पर सागर का अस्तित्व बिन सरिता के नहीं।
- आप लोग भले ही बूंद हो पर सागर से बात करते हो।
- सागर का अस्तित्व तभी जब बूंद का अस्तित्व दिमाग में होगा।
- प्रभु सागर है और हम बूंद। बस बूंद ये ध्यान रखें कि मैं भी विराट सागर का रूप ले सकती हूँ।
- पाई का - इकाई का अस्तित्व ऐसे कुछ नहीं पर मूल तो यही है इसी से रुपया बनता है।
- स्वर्ग की पूरी सम्पदा के बराबर सौधर्म इन्द्र के मुकुट के मध्य में स्थित वह हीरे की कणिका है परन्तु हमारे पास उससे भी बढ़कर सम्पदा है - मूल्य पहचाने तो।
- मूल्य न जानने से कॉच - कोडीयों में हम कीमत लगा रहे हैं। बर्बाद कर रहे हैं।

o जो उस हीरे का मूल्य समझता है, वह कभी भी मोल-भाव नहीं करता क्यों कि वह तो अनमोल है, मौलिक है, उसे तो जौहरी ही जानता है।

o जो आत्मा के सही स्वरूप को नहीं पहचानता वह सामने-सामने ही अवमूल्यन कर बैठता है।

o जब खोट निकालते जाते है तो अपने आप ही मूल्य सामने आने लग जाता है।

o जैसे-जैसे हीरे को जो खान से मिला था उसे शान पर चढ़ाते जाते है उसमे पहलु निकलते जाते है तो देखने वाले के मुंह में पानी आये बिना रह ही नहीं सकता है।

o हीरे की परख वाला ही उसका मूल्य जानता है उसी तरह आत्मा की परख वाला ही उसकी व्यापकता को जान सकता है।

o हम अभी खान के नग एवं बूंद की भांति है किन्तु हीरे एवं सिन्धु को ~~अ~~ भीतर लिये हुये है।

o अभी भी खान में खनन कार्य जारी है हमें खोदते एवं खोजते जाना है। जो खोजेगा उसी को मिलेगा। दूसरों के लिए मैं नहीं खोज सकता।

o अपने आप के बारे में ही सोचना, जानना, अध्ययन करना है और पुरुषार्थ भी अपने आप से ही करना है।

o मेरी दशा क्या है, कैसी है, क्यों है इसको सोचेंगे तो प्रभु बनने का रास्ता अवश्य प्रशस्त होगा।

- दुनिया के उद्योग से हम मालामाल नहीं होंगे। हमें मालामाल बनना है तो ताला-कुंची बंद करके अपना उद्योग स्वयं करना होगा।
- प्रभु ने ऐसा ही उद्योग किया तभी आज हमारे आदर्श बन गये हैं।
- प्रत्येक के पास वह मौलिकता विद्यमान है, जो प्रभु ने प्राप्त किया है।
- मौली का व्याकरण में अर्थ मुकुट होता है और मुकुट कभी भी हाथ में नहीं रखते सिर पर धारण करना होता है। उसी तरह भीतर के उन भावों को शिरोधार्य करें।
- हमारी इच्छा - मांग ही हमारी बाधा का कारण है। बाधा से ऊपर उठना है तो इच्छा-क्षुधा-प्यास सबको समाप्त करना होगा।

"उदाहरण"

"जैसे प्रतिदिन बर्तन मांजते हो। साफ हो जाने पर सुखाते हो (धूप में या अग्नि पर) ताकि पुराने संस्कार न रह जाये तभी आप उस बर्तन में घी, दूध, दही आदि रखते हो इसी प्रकार संसारी प्राणी की दशा होती है। उसे सुन संस्कारों को सुखाना अनिवार्य है। बिना सुखायें काम में नहीं ले सकते।"

महावीर निर्वाणोत्सव के पूर्व (चतुर्दशी)

15-11-20 बिन पानी सब सून शनिवार

- कल धन्य तेरस थी, आज चतुर्दशी सांवत्सरिक प्रतिक्रमण का दिन शनिवार, सर्वार्थसिद्धि योग, कल रविवार वीर निर्वाण का दिन, ये त्रिदिवसीय संशोधित मुहूर्त काल का योग आपको प्राप्त हुआ।
- स्थापना रेवतीरेंज में और निष्ठापना विजय नगर में ऐसा पहली बार ही हुआ है।
- भारत के मध्य में मध्य प्रदेश है, मध्य प्रदेश के मध्य में इन्दौर है और इन्दौर के मध्य में यह विजय नगर है।
- जिस प्रकार समोशरण में अलग-अलग खाने बने होते हैं उसी प्रकार इन्दौर महानगर में अलग-अलग उपनगर बने हैं। सबने लाभ लिया।
- बिन पानी सब सून - लगभग 20 वर्ष से रेवतीरेंज में जमीन लेकर रखी हुयी थी पर केवल गौशाला थी अन्य कोई योजना नहीं थी। जब प्रतिभास्थली खोलने की बात आयी तो हमने कहा पहले पानी तो निकालो तभी तो व्रती बहनों, जिनालय आदि को कर पायेंगे। योग से इन लोगों ने पानी खोजा एवं खोदा भी। अच्छा मीठा पानी फूट पड़ा, मैं समझ गया यहाँ की धरती फलदायी है।
- मनुष्य का सबसे प्रबल शत्रु आलस होता है।
- कछुआ की भांति चलें खरगोश की तरह नहीं। ०००

वीर निर्वाण लाडू

15-11-20 कैसे हो भगवान के दर्शन रविवार, प्रातः

o आज भगवान महावीर के विदा होने का दिवस है, आप कह रहे हैं कहाँ गये-3, वे कहते हैं - मैं यहीं हूँ-3

o मुझे देखना चाहते हो तो इन नयनो, उपनयनों (चश्मा) को बंद कर देना होगा तभी मेरा दर्शन होगा।

o शिष्य एवं शीशी दोनों पर डॉट जरूरी है पर ज्यादा जोर से नहीं अन्यथा भीतर का घी बाहर नहीं निकल पायेगा

o शुद्धि-पत्र लिखा मतलब भीतर जो भी है वह अशुद्ध है। अशुद्धि-पत्र लिखे तो फिर भी ठीक और आज तो जो शुद्धि पत्र लिखा गया उसमें पहले से भी ज्यादा अशुद्धि देखने को प्राप्त होती है।

o अभी भारत में शुद्धि आयी। 9-10 महिने घर से बाहर ही नहीं निकलें क्यों कि कोरोना न हो जाये? कोरोना आता है तभी संयम पालन होता है।

o भगवान महावीर कहीं गये नहीं, बस हमारे पास वो साधन नहीं जिससे उन्हें देख सकें। जो हाथ में है उन्हें फेंकना पड़ेगा।

o जैसे बैंक के लॉकर का एक ही (पासवर्ड) नम्बर तभी खुलता है वैसे ही भगवान महावीर के उस नम्बर को याद रखो तभी मोक्षमार्ग का दरवाजा खुलेगा।

o भगवान महावीर अच्छा चौड़ा साफ-सुथरा रास्ता देकर गये है। आपको मार्ग बनाना नहीं है बस बना है उस पर चलना है।

ooo

विजयनगर
15-11-20 पिच्छिका परिवर्तन समारोह मध्याह्न

0 सोचने मात्र से कार्य नहीं, संकल्प लेकर चलने से कार्य होता है।

0 आयानुसारी व्यय = आय के अनुसार व्यय हो। उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य यही सत् है।

0 भावना भव नाशनी कही गयी; आपकी भावना भव का नाश करने वाली हो।

0 कार्य को जो प्रारम्भ कर देता है वही अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने में सफल हो सकता है।

0 रोटी कोई नहीं खाता, ग्रास-ग्रास करके ही रोटी खायी जाती है इसी प्रकार यहाँ जिनालय का कार्य शुरु हो गया अब धीरे-धीरे करके पूर्ण करना है।

0 रोटी खाने से नहीं उसका पाचन सही से होने पर शरीर चल रहा है। अद्भुत सिद्धान्त है यह। दान आया पर सदुपयोग से ही कार्य होगा।

0 अपव्यय से बचें। व्यय से काम होता है अपव्यय से नहीं।

0 कुछ हाथों से - कुछ दांतो से, कुछ आंतो से, कुछ बातों से चर्वण करते हैं तब जाकर भोजन का पाचन होता है।

0 शास्त्र का अध्ययन करना मात्र स्वाध्याय नहीं, स्व का अध्ययन करना ही वास्तविक स्वाध्याय है।

0

प्रातः विहार 3 Km. महालक्ष्मी

महालक्ष्मीनगर

16-11-20 पशुपती की अर्चना सोमवार

- रेवतीरेंज से प्रवेश किया - महालक्ष्मी नगर से बाहर निकल रहे हैं।
- इन्दौर नगर एवं उपनगरो में संस्कार, नीति-न्याय के साथ रहते हुये वीतरागता की उपासना कर रहे हैं।
- देहातीत होने की भावना से कर्तव्य हो पुराण पुरुषों ने अपने जीवन काल में ऐसे ही कार्य किये।
- नगर-घर भले ही नूतन बन रहे हैं, बनें कोई बाधा नहीं पर संस्कार तो प्राचीन ही रहें। हमारी संस्कृति, रीति-रिवाज को कभी न छोड़ें।
- नूतन संस्कृति विदेशी हवा से पल्लवित एवं उत्पन्न होती है जब कि प्राचीन संस्कारों में भारत की गंध झलकती है।
- मनुष्य ही नहीं तिर्यञ्च भी अपनी जाति के संस्कार अड़ोस-पड़ोस पर डालते रहते हैं।
- एक चित्र देखा - बहुत सारे कुत्ते एक गड्ढे को मिट्टी से भर रहे हैं, क्यों कि उस गड्ढे में एक कुत्ते का शव दफनाया गया है। मिट्टी डालने से उसे अन्य पशु-पक्षी क्षत-विक्षत नहीं करेंगे। ऐसे संस्कार/संवेदना जब पशु में भी है तो फिर आप तो पशुपति की उपासना करने वाले हो।
- जैसे एक-एक दिवस मनाया जाता है उसी प्रकार आज भी एक दिवस गाय-बैलों का होता है। (गोवर्धन पूजा)

o आज कंधो पर उनके जुआली आदि नहीं डालते, नहलाकर, सजाकर उनकी पूजा करते हैं।

o मनुष्यवर्धन कोई त्यौहार नहीं गोवर्धन कहा।

o सरकार भी मनुष्यों की संख्या कम हो ऐसे प्रयास करती है पर पशुओं की तो दिन दुनी रात चौगुनी वृद्धि ही हो।

o ध्यान रखना - पशुओं का पालन मनुष्य नहीं करते अपितु मनुष्यों का पालन पशु ही करते हैं। शास्त्रों में "पशुपाल्यो पेता" कहा।

o भगवान मनुष्य पति कम, पशुपति ज्यादा है।

o पुरे विश्व में मनुष्यों की संख्या कम हो जावे, इसके लिए अभियान चलाता है मतलब मनुष्य ही सब प्राणीयों के लिए कांटा है।

o मनुष्य को संयमित करना पड़ता है पशु तो सदैव संयमित ही (प्रकृति के अनुसार) रहते हैं।

o किसी भी तीर्थंकर का चिन्ह मनुष्य नहीं परन्तु वृषभ (बैल) आदि कई हैं। सर्प भी है।

o मनुष्य की पूजा नहीं पर सर्प की - नाग पंचमी कहते हैं

o कृषि, वाणिज्य, पशुपाल्योपेत्या इथं वार्ता लोके ऐसा शास्त्रों में लिखा है। अतः पशुपालन से ही देश की समृद्धि होगी।

o कार्य सम्पन्न करना है तो अपव्यय बंद कर दो।

शान्ति - बड़जात्या काम o o o

कुंडलपुर-दमोह

बरफानी विद्यालय

17-11-20 (जाने मतलब ऋषभ विहार का) मंगलवार

- भूख कितनी भी लगे पर परोसने वाला (माँ) जानता है कि इसकी वास्तविक भूख कितनी है। वह भूख को मारता नही उपशमन करके उसे और जागृत करता रहता है।
- नहीं जा पाये देहली - जब महावीरा जी से विहार हुआ तो हम कामाँ - कोशी होते हुये देहली जा रहे थे। मार्ग में ही पता चला, वहाँ तो आपातकाल लग गया। तीनकाल तो सुने थे यह कौनसा चौथा काल आ गया। बस वहीं से मथुरा-गोवर्धन होते हुये फिरोजाबाद में चातुर्मास हेतु आ गये। फिर बड़े बाबा के पास आये तो इन्होंने ही पकड़ लिया।
- ऋषभ विहार वाले आये हैं - बड़े बाबा भी ऋषभ नाथ हैं एवं विहार तो चल ही रहा है मतलब महाराज एक जगह रुकते नहीं विहार करते रहते हैं।
- केन्द्र में बड़े बाबा विराजमान हैं फिर केन्द्र की अलग से क्यों बात कर रहे हैं।
- जैसे माँ की गोद या पालना में जब बच्चा करवट लेने लगता है तो सजग हो जाते हैं वैसे ही दानदाता भी आगे से ही तैयार हो जाते हैं।
- हल को ऋषभ ही खेंचते हैं पाड़ा नहीं, इसलिए ऋषभनाथ से हल निकलेगा।
- हार पिपल्या वालों के हाट (बाजार) में हमारा कोई सौदा नहीं हुआ।

रात्रि - मालवा विश्वविद्यालय - खुड़ैल

डबलचौकी

18-11-90 बचे विरुद्ध राज्यातिक्रम से बुधवार

- गाड़ियां कॉपी हो तो एक चौकी से काम नहीं चलता, डबल चौकी रख दो।
- कर (tax) की चोरी न हो इसलिए डबल चौकी है।
- आचार्यों ने विरुद्ध राज्यातिक्रम का एक अतिचार रखा
- राज्य के विरुद्ध नहीं जो देना अनिवार्य है, वह देना है।
- सरकार का मतलब ही है आपके ही योगदान से आपके जीवन को उन्नत बनाना।
- एच्छिक प्रश्न तो छोड़-छाड़कर जा सकते हैं पर अनिवार्य प्रश्न को छोड़ नहीं सकते। tax (कर) देना अनिवार्य है।
- किसानों के लिए कर में छूट रखी क्योंकि अतिवृष्टि अनावृष्टि, रोग आदि से फसल नष्ट हो जाती है पर उद्योग वालों को तो कर चुकाना चाहिए।
- आज उद्योग वाले भी सरकार के सामने किसान बन जाते हैं, यह ठीक नहीं।
- सरकार के सामने कभी भी रोना नहीं चाहिए।
- कमाते हो तो कम क्यों देना? पूरा देना।
- इस प्रकार विरुद्ध राज्यातिक्रम का अर्थ डबलचौकी से हमने अर्थ निकाला।

संस्मरण 0 0 0

"50 वर्ष एवं चश्मे की बात आयी। हमने कहा हम चश्मा नहीं पहनेंगे अनुसंधान किया। नींबू रस, शुद्ध घी, शुद्ध सरसों तेल, त्रिफला का उपयोग किया। आज भी आँखों से अच्छा दिखाई देता है।"

रात्रि - कर्णावटफार्म

भमोरी

19-11-20 विश्व ने माना- आयुर्वेद की शक्ति को गुरुवार

o भारत की पहचान, अस्तित्व, शासन-पद्धति आदि पूरे विश्व के सामने अलग ही रूप में है।

o वैश्विक महामारी - कोरोना के सामने पूरे विश्व ने घुटने टेक दिये किन्तु भारत का काढ़ा सबके लिए अमृत बन गया।

o अमेरिका एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसीलिए भारत में दो देहली एवं जयपुर में बड़े आयुर्वेद शोध संस्थान खोलने का सोचा है।

o कक्षा एवं परीक्षा में अंतर है। परीक्षा में जो किया है उसका प्रयोग करना होता है। भारत परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ है।

o संत-समागम एवं अहिंसा से ही हम भारत की रक्षा कर सकते हैं।

o भारत अपना स्वाभिमान रखता है, अभिमान नहीं करता एवं सदैव दूसरों का सम्मान करता है।

o कैंसर जैसे भयानक रोग का भी आयुर्वेद से इलाज संभव है, ये बात अब विदेश की संस्थायें एवं अमेरिका ने भी स्वीकार कर ली है।

o विश्व की जो भी चिकित्सा प्रणाली है उसमें किसी न किसी रूप से आयुर्वेद का हाथ होता ही है।

o चश्मा हटा लो, आँखें खोल लो। पश्चिमी हवा से बचना है।

o शाकाहारी ही नहीं मांसाहारी को भी यह विश्वास हो गया कि इस महामारी का कारण माँस का उपयोग था। 000

रात्रि-अमरापुरा

बेडामक

20-11-20 राम-राज्य लाना है तो.... शुक्रवार

- वैभव के सामने रहने वाले राम एक कुटिया के सामने शोभा दे रहे हैं। उनके मुखमण्डल पर सदैव कमल की तरह प्रसन्नता रहती है।
- जगत की नश्वरता एवं परायेपन की अपेक्षा, विचार करने से महापुरुष कभी भी आकुल-व्याकुल नहीं होते।
- एक वो राम राज्य था जब राम कहते हैं मेरा नहीं भरत का राज्य है, भरत कहते हैं- मेरा नहीं ये तो राम का राज्य है और आज विधायकों का अपहरण हो रहा है। कहाँ छिपाकर रखा पता तक नहीं लगता।
- जो संसार की नश्वरता के बारे में सोचता है वह सर्वत्र सुख और शान्ति का अनुभव करता है।
- संसारी प्राणी कर्मों से जकड़ा है- जब चाहें, जो चाहें, जितना चाहें नहीं मिल सकता।
- जीवन कोहरे की भांति कब उड़ जाये, ओस की बूंद के समान है कब मिट जाये कोई पता नहीं।
- अपने को ही बड़ा मानना अज्ञान की परिणति है।
- आप बड़े पुण्यशाली हो जो आपका जन्म भारत जैसी पवित्र भूमि पर हुआ है। जहाँ ऋषि/मुनियों की पावन रज प्राप्त होती है।
- यहाँ तो शान्ति से बैठे हैं, आँगन में (आहार के समय) कोई भी विवेक नहीं रख पाता।
- जिसके जीवन में संतोष है, वही कभी दुःखी नहीं होता।

रात्रि- धनतालाब धार

हतनौरी

21-11-20 भावों का परिणाम शनिवार

- गाय मात्र सामान्य नहीं विशेष होती है, भेदोपभेद की अपेक्षा उसे कामधेनु भी कहते हैं।
- संतों को कुछ चाह/अपेक्षा तो होती नहीं फिर भला वे झूठ क्यों बोलेंगे?
- वीणा की धुन सुनकर गाय अपने थन से दूध गिराती है, ये शास्त्रोक्त तो था ही, कल ही किसी ने विदेश की घटना भी सुनायी।
- आप मारेंगे तो वह दूध नहीं, सींग दिखायेगी और यदि आप प्रेम-वात्सल्य देंगे तो वह भी दूध अमृततुल्य आपको देगी क्यों कि उसमें संवेदना है - चेतना है।
- बुद्धि मिली है उसका सदुपयोग करो। शास्त्रों में जो कामधेनु कहा उससे सीख ले लो।
- भारत में तो आप बाजा बजाओ या नहीं बजाओ तो भी दूध की नदियाँ बहती थी क्यों कि पशुओं के प्रति इतनी संवेदना होती थी।
- गीता आदि पुराणग्रन्थों के सुनने से भी दूध में वृद्धि होती है।
- परोपकार-सेवा की भावना खत्म, तो गाय ने भी दूध देना बंद कर दिया।
- अब तो भारत बातें करता है जैसे पतझड़ में पत्ते बातें करते हैं।
- पत्ते मतलब तास के पत्ते भी होते हैं। शराब, मांस, ताश अर्थात् जुआ संस्कार छूट दें तो कैसे देश तरक्की करेगा।
- प्रकृति की सब चीजें प्रकृति में रहती हैं, आप सदैव कंडीशन में

ही रहते हैं।

- आज श्वांस हेतु वायु नहीं, शुद्ध पानी नहीं एवं ईंधन भी खत्म, अब तो गैस आ गयी इसीलिये गैस की बीमारी हो रही है। भयानक रोग हो रहे हैं।
- आधा भी नमोऽस्तु करोगे तो आशीर्वाद अवश्य मिलता ही है।
- सरकार को मतदान तो देते हो उसके कान भी पकड़ा करो
- कान पकड़ने से वहाँ के पॉइंट दबते हैं साथ ही कान पकड़ने से पश्चाताप के भाव भी होते हैं।
- इस प्रकार खान-पान, रहन-सहन, पहनावा के माध्यम से हम पुनः उसी संस्कारीत जीवन को ला सकते हैं।

0 0 0

रात्रि - कलवार

"नारीयल पानी हरी में"

"कुछ लोगों का जिनमें विद्वान एवं मुनिमहाराज भी हैं, उनके मत से नारीयल पानी को हरी नहीं मानते परन्तु आचार्य श्री का कहना है, अभी इन्हें जीवकाण्ड आदि ग्रन्थों का अच्छे से अध्ययन करना चाहिए। गोम्मटसार का कहना है नारिकेल सचित्त होता है। उसके भीतर का पानी भी सचित्त ही है, जब तक उसका स्वाद आदि कुछ डालकर नहीं बदलते। आ. श्री ने इसे हरी में गिनने को कहा साथ ही इसमें विशेष मिनरल होने से ज्यादा लंबे समय तक नहीं लेना चाहिए।"

बागन खेड़ा

22-11-20 दया को याद करता यादव रविवार

- सभी तीर्थंकर राजपूत अर्थात राजाओं के पुत थे, क्षत्रिय थे।
- जनता की सेवा करना, बदले में कुछ चाह नहीं रखना ये सभी का धर्म होता था।
- 22 वें तीर्थंकर यदुवंशी थे उन्हें दया की याद थी तभी तो बारात बीच से ही गिरनार को चली गयी।
- जो दयालु होता है वही याद करता है वही यादव कहलाता है।
- यादव अपने साथ-साथ पशु-पक्षीयों का भी पालन करते हैं ये उनकी दया का ही परिणाम है।
- जिससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाये, मन विकृत हो जाये ऐसे अण्डा-मॉस-शराब इत्यादि को दूर से ही छोड़ देना चाहिए।
- ताजा-ताजा तरकारीयाँ एवं शुद्ध भोजन गाँव वालों को ही नसीब होता है।
- दयालु लोग जहाँ खेलते रहते हैं उसे खेड़ा कहते हैं।
- जीवों की रक्षा करना हमारा मुख्य कर्तव्य होना चाहिए। जीवों का संरक्षण है तभी तक यह धरती है, जिस दिन पशु-पक्षी समाप्त तो मानव भी नहीं रह पायेगा, पुरी धरती जल जायेगी।
- कम दाम में लेकर ये बनिया लोग अधिक दाम में बेचते हैं। गाँव का किसान जो पुरी मेहनत करता है उसे ही लाभ भी ज्यादा मिलना चाहिए।

०००

रात्रि - कन्नौद - 7 Km.

कन्नौद

२३-११-९० नदी सम पवित्र, सागर सम विशाल सोमवार

- सिद्धोदय के प्रताप से आपको मांगने की आवश्यकता है ही नहीं; नदी बहकर स्वयं आपके दरवाजे तक आती है। आपको उसका स्वागत करना है।
- नर्मदा नदी के किनारे पर साधक साधना के स्थान बनाकर अपनी आत्मा को पवित्र करते रहते हैं। जिस प्रकार नदी कोई भी कूड़ा-कचरा नहीं रखती इसी तरह साधक भी आत्मा को पवित्र करता है।
- जैसे नदी का जल कल-कल बहता हुआ विशाल सागर का रूप धारण कर लेता है उसी तरह साधक भी साधना के बल से सागर सम विशाल बन जाता है।
- जैसे नर्मदा समुद्र का रूप धारण कर लेती है वैसे ही हमारी साधना हो ताकि संसार से दूर होने का लक्ष्य हमारा पूर्ण हो।
- करने योग्य जो कार्य है उसे करते जाओ।
- मांगते ही रहते हो, जो मिला है उसे क्यों भूल जाते हो।
- संसार के कार्य तो हम अनवरत कर रहे हैं, संसार-छेद का भी ध्यान रहे।
- विनति तो हम सुन लेते हैं, आमंत्रण-निमन्त्रण नहीं।
- धर्मध्यान की अपेक्षा श्रीफल चढ़ाकर बुलाना निमंत्रण नहीं, भावना रखते हैं ताकि धर्म ध्यान स्वयं भी कर सके।
- गृहस्थ को रुकने एवं रोकने में आनंद आता है पर साधु तो चलने एवं चलाने में आनंद मानते हैं।

रात्रि - एसारपेट्रोल पम्प
नानासा

खातेगांव
२५-११-२०   भला विराजो जी   मंगलवार

सभी महाराज जी का विहार उधर की ओर हो रहा है, हम विहार करते हुए इधर आ रहे हैं। अब अभी बोल रहे थे- "भला विराजो जी", विहार कर रहे हैं तो कहाँ विराजे? कहाँ विराजा? उन्हें विराजो। आई में उन्हें ही विराजो? अच्छा है। आप लोगों का पुण्य जोर मार गया भगवान से अनुबन्ध हो गया।

पूजन अब संक्षेप में की है तो हमारा भी इतना ही पर्याप्त है। आगे का कार्यक्रम क्या है? पहले बताया नहीं जाता। अपने-अपने इष्ट को याद करें, हम भी अपने इष्ट को याद करेंगे। कौन है-क्या है इष्ट ये तो सब जानते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

संस्मरण

पुण्य होता है तो आचार्य श्री सामने वाले के घर पर स्वयं खींचे चले आते हैं। कन्नौद में आहार पर उठना था। जहाँ रोका था वहीं शादीघर में भक्ति भी पढ़ ली। आ० श्री ने कहा - मन्दिर से उठ जाते हैं दर्शन भी हो जायेंगे। मन्दिर 700 मीटर था। चौके सभी यहीं लगे थे। किन्तु एक चौका बस्ती में लगा। प्रबल भावना थी, वह भी मन्दिर से 1 Km. दूर। आ० श्री का पड़गाहन हो गया। एक मात्र चौका लगा था बस्ती में बाकी सब ने वहीं धर्मशाला के पास लगाये। ऐसा होता है पुण्य योग से पड़गाहन।

खातेगांव

25-11-20 "भाव पलटने से पासा पलटता" बुधवार

- अज्ञान दशा में बाहरी पदार्थ का ही मूल्य दिखने में आता है, भीतरी पदार्थ का नहीं। जब कि भीतरी मूल्य ही मुख्य है शेष तो सब गौण है।
- बाहर का परिवर्तन भी भीतर पर ही आधारित होता है। इसलिए मुख्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।
- विश्वास मुख्य पर होता है - भीतर में होता है। बाहरी क्रियायें उसी अनुरूप दिखती रहती हैं।
- "ऊपर वाला पासा फेंके - नीचे चलते दांव" इन पंक्तियों को मैं इस प्रकार परिवर्तन करके कहता हूं - कोई स्वीकार करें या न करें। भीतर वाला पासा फेंके - बाहर चलते दांव"
- इससे भगवान को कर्तृत्व बुद्धि से भी ऊपर उठा देते हैं, वह किस - किस को देखेगा। वे तो आत्म केन्द्रित होते हैं।
- कोयला भी हीरा एवं हीरा भी कोयला, राजा, रंक बन जाता है तो रंक राजा बनते देर नहीं लगती, ये सब उसी भीतरी परिणाम / कर्मों की लीला है।
- भाव पलटा दो; पासा पलटने में देर नहीं लगेगी।
- न ही अभिमान करना, न ही दीन - हीन होना दोनों ही अज्ञान की दशा है।
- जैसे दिन में सूर्य को पूर्ण ढक नहीं सकते उसी तरह भारत में भी कोरना के कारण ज्यादा असर नहीं हुआ। ये सब प्राचीन संस्कारों, आयुर्वेद, नियमित दिनचर्या से ही संभव हो पाया। ०००

26-11-20 जड़ कर्मों की शक्ति जानो गुरुवार

0 महापुराणकार ने तो नहीं कहा पर श्वेताम्बर में ऐसा मिलता है कि आदिनाथ भगवान ने बैलो पर मुसिका बांधने को कहा, इसी कर्मबंध से उन्हें 6 महिने तक आहार नहीं मिला।

0 कोरोना के कारण सभी मास्क लगाकर रखते हैं, शायद पूर्व में कभी न कभी किसी को अंतराय जरूर डाला होगा। जैसा करेंगे- वैसा ही फल मिलेगा।

0 अपना ही बहीखाता है, पुराना खाते में जो है उसे हमें ही चुकाना है।

0 अपनी गलती को जो मन वचन काय, कृत कारित अनुमोदना प्रत्यक्ष-परोक्ष से स्वीकार कर लेता है वह ऊपर की ओर उठता चला जाता है।

0 कर्म भले ही जड़ है पर इतनी शक्ति है जो आपको भी जड़ जैसे बनाये हुये है।

0 कर्म रुपी लोन लिया है तो चुकाना तो पड़ेगा ही। यहाँ डिफाल्टर व्यक्ति चल नहीं सकता।

0 परिणाम बिगड़ते ही फल भी बुरे रूप में मिलता है, हीरा भी कोयला हो जाता है।

0 लड़ना सीखो तो कर्मों से लड़ना सीखो, ऐसे ही आपस में क्या लड़ना?

0 द्रव्य क्षेत्र काल भाव मिला है- इसका उपयोग कर लो। अर्थात् अवसर मिला उसे चुको नहीं सिक्सर खेलो, जीवन तर जाये।

रात्रि - दुलवा 000

नेमावर
सिद्धोदयक्षेत्र

27-11-20 आन्तिम परीक्षा शुक्रवार

0 चातुर्मास के बाद तीसरी बार ऐसा योग मिला जब सीधे पांव सिद्धोदय की ओर बढ़ आये - पहले 1999 में गोम्मटगिरी से, फिर 2015 में विदिशा से एवं अभी इंदौर से। यहाँ के श्रावकों का भी पुण्य है।

0 अबकी बार कुछ विशेष मानसिकता को लेकर आप सब यहाँ आये हैं।

0 विशेष अवसर है कुछ विशेष पुण्य अर्जन करने का, इसलिए पीछे नहीं रहना है।

0 कार्य बड़ा है एवं कठिन भी परन्तु अनिवार्य प्रश्न को हल करते समय प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी इधर-उधर नहीं देखा करते।

0 मात्र प्रश्न को हल करने की ओर ही ध्यान हो, तभी सफलता कदमों में आती है।

0 मांगलिक वातावरण हो तो मंगल ही मंगल होता है फिर आज तो यह प्रथम दिन है।

0 आप लोगों की भी परीक्षा है। परीक्षा ऐसी हो कि बार-बार न देना पड़े। एक इतिहास की रचना आप सब करने जा रहे हो।

0 हम भी अन्तिम परीक्षा की ही अब तैयारी कर रहे हैं। जिन्होंने वह परीक्षा दे दी उन्हीं के चरणों में पहुँच गये हैं।

New Hindi - "मोक्षमार्ग तो, जटिल तो है किन्तु, कुटिल नहीं"

000

28-11-20, संगत का असर शनिवार

० सूर्य के आताप का प्रताप है कि गंदा जल हो या गंगा जल दोनों आसमान में भाप बनकर एक से हो जाते हैं। इसी प्रकार धरती पर नदियों का जल मीठा होता है पर समुद्र की सोबत में जाते ही सम्पूर्ण जल खारा हो जाता है। इसलिए संगत सोच-समझकर करना चाहिए।

० संगत का ही प्रभाव है जो अच्छाई भी बुराई में बदल जाती है और बुराई भी अच्छाई में परिवर्तित हो जाती है।

० आसमान में हैं अधर में हैं तब तक शुद्ध जल माना जाता है. ज्यों ही धरती के सम्पर्क में आया जीवों की उत्पत्ति हो गयी। अब छानकर, संशोधित करके ही काम में ले सकते हो। हमारी दशा भी लगभग इसी प्रकार की है। संसार दशा में अशुद्धता ही बनी हुयी है।

० जो निर्मल, उज्जवल, परिमल स्वच्छ हो चुके हैं उनकी शरण में जाना ही एक मात्र लक्ष्य है।

० ऐसा निर्मल जल बनें जो भगवान के चरणों में चढ़ जायें, दूसरों के गले में तो विकल्प ही हाथ लगेंगे।

० योग्यता हमारे पास है - जैसे फिटकरी (निर्मली) डालने से गंदा- कियड़ नीचे बैठ जाता है वैसे ही प्रभु चरणों के समीप बैठने से कषाय भाव शमित हो जाते हैं।

० हेय - उपादेय का ध्यान रखकर हम आगे बढ़ते जायें।

० ० ०

केशलोंच

२१-११-२० मॉंगने की आदत रविवार

○ काल अनंत चला गया, कब तक वर्ष आदि की गिनती गिनते रहोगे।

○ शिखर जी जाने के बाद आने की तो कोई बात ही नहीं होती।

○ मांगने से नहीं मिलता पर हम बिना मांगे रहते भी नहीं। हाँ भावों का प्रभाव तो पड़ता ही है छोटे बच्चे को भी मांगने पर दूध मिलता है।

○ भगवान को भी हमारी पूजा या निन्दा से कोई फर्क पड़ने वाला नहीं किन्तु उनकी भक्ति से हमारा तो संसारच्छेद हो ही जाता है।

○ सबसे सस्ता है भक्ति करना - अनादि का मटमैला - कियड़ भक्ति - स्तुति रूपी निर्मली से साफ हो जाता है।

○ पंच परमेष्ठी को याद करना, अपनी आत्मा को ही ध्यान में लाना है।

○ "न पूजयार्थ........ पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्य:" स्वयम्भु स्तोत्र की बहुत ही मार्मिक पंक्तियां है। यहाँ पर पुनातु = आज्ञावाचक है, भगवान आपकी स्तुति हमारे पाप मल को धोये। अत: पुनाति (सामान्य वर्तमान) न कहकर गुरुजी पुनातु बोलते थे।

○ सांसारिक अपेक्षा से प्रेरित पुण्य कर्म न हो संसारातीत जो है उनसे प्रेरित होकर कर्म करें।

○ हे भगवन् आपको मतलब नहीं किन्तु हमें तो आपसे मतलब है!

○○○

30-11-20 अब तो आँखें खोलो सोमवार

० देव गति को इसलिए श्रेष्ठ माना क्योंकि वहाँ सम्यग्दर्शन की भूमिका एवं तीर्थंकरों जैसी विभूतियों के दर्शन अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं। एक सेकेण्ड में पहुँच जाते हैं।

० जैसे यहाँ बड़े-बड़े सेठ साहूकारों के यहाँ नौकर के लिए अलग से कहने की आवश्यकता नहीं होती वैसे ही देव लोक में भी बड़े इन्द्रों के परिवार में अन्य सबको जाना ही होता है। वहाँ पहुँचकर जब अपने से बड़े देवता (Boss) को वीतराग की वंदना करते देखते हैं तब उनकी आँखें खुल जाती हैं ऐसे ही जिन महिमा दर्शन बोलते हैं।

० संसार के वैभव से ही रोशनी न आये, संसार से पार होने के लिए भी आँखों में रोशनी चाहिए।

० सभी को स०द० की प्राप्ति हो ये कोई नियम नहीं है, क्योंकि मोह के राज्य में सब फँसे हैं, जो उस पर विजय पा लेते हैं, उन्हें फिर सब वैभव फीके लगने लग जाते हैं।

० जब समय मिले पंच परमेष्ठी की आराधना करते रहो, यही संस्कार कालान्तर में दृढ़ होकर काम आयेंगे।

० स०द० बिजली की भाँति उत्पन्न होकर नष्ट भी हो जाता है।

० अब तो मोह रूपी मदिरा पीना बंद कर दो।

New Hie - यही है हित, अहित न हो कभी, परापर का

० ० ०

(गोलाकोट वाले आये)

1-12-20 घर में रहें- नारियल की तरह मंगलवार

- दो तरह के नारियल होते हैं, कच्चा एवं पक्का। कच्चे में पानी रहता है अभी परिपक्वता नहीं है। पक्के में अलग ही गंध-स्वाद आदि होता है उसका तेल भी निकाला जाता है। सबसे महत्त्वपूर्ण तो है वह भीतर रहकर भी चिपका नहीं रहता अलग ही रहता है। आप भी घर में रहें पर चिपक कर नहीं, नारियल की तरह।
- चेतन की शक्ति को भूलो मत। जड़ तत्त्व के साथ आप भी जड़ बन जाते हैं।
- घर में रहें मगर मैं भिन्न हूँ, ये सब भिन्न हैं। नरेली एवं गोला की भांति। मैं तेलदार हूँ, ये तेल से रहित हैं। फिर गोला में भी ऊपर की कालिमा चाकू से अलग करते हैं मतलब शरीर भी भिन्न है। भीतर तेल की सुगन्ध है।
- घी की अपेक्षा खोपरे का तेल मस्तिष्क को अधिक ताजगी पहुँचाता है।
- आप घर बसाकर के घर में बसे हुये हैं जब कि घर में रहकर भी घर बसायें ये कोई नियम नहीं। वह गोला कहता है कि ये बाहर वाले तो भिन्न हैं ही, मेरा शरीर भी मेरे से पृथक है।
- गोले के तेल में बाती लगाकर जलाने से वह स्व-पर दोनों को प्रकाशित करता है तथा हजारों दिपक और जल सकते हैं।

०००

२-१२-२० संस्मरण- खरबूजा को देखकर.... बुधवार

० जब छोटा था तब खेत पर जाता था। वहाँ पड़ोस में जो किसान थे उनके यहाँ तरह-तरह की बेल थी। ककड़ी, करेला, खरबूजा आदि की बेल। मैंने देखा- वह किसान एक खरबूजा को केन्द्र में रख चारों ओर बहुत से खरबूजे रख रहा है। मैंने पूछा- ऐसा क्यों कर रहे हो तब उसने कहा - इस बीचों बीच में रखे खरबूजे का रंग, गंध, स्वाद, स्पर्श आदि बदल गये, अब ये चारों ओर के खरबूजे भी इसकी तरह पक जायेंगे। बस वह बात आज भी याद रहती है कि मोक्षमार्ग में भी एक व्यक्ति आगे बढ़ जाता है तो अन्य लोग भी उसके पीछे-पीछे अनुकरण करने लगते हैं।

० मुजफ्फरनगर वालों में एक ने धन दिखवाया, धीरे-धीरे अन्य खरबूजों से भी सुगंधी फूटने लगी।

० परिवार का एक सदस्य मोक्षमार्ग में बढ़ता है तो अन्य संबंधी, अड़ोस-पड़ोस, विद्यालय, सम्पर्क में आने वाले भी प्रभावित हुये बिना नहीं रहते।

० हमारी बात को बगार लगाकर के आगे सब तक पहुँचा देना। बगार मतलब होता है वह बिगड़ा हुआ भी स्वादिष्ट लगने लग जाता है।

० जो व्यक्ति आगे बढ़ जाता है उससे स्व एवं पर दोनों का ही मूल्य बढ़ जाता है। इसलिए धार्मिक अनुष्ठान में सदैव आगे रहा करो। ०००

3-12-20 धरती की महानता गुरुवार

- समय पर वर्षा एवं अनुपात से वर्षा होने पर ही धरती पर सुभिक्ष होता है।
- धरती मौलिक है - सोना नहीं क्योंकि धरती से ही सोना निकलता है। एक बीज हजारों गुना फल देता है। इसलिए धरती सोना उगलती है।
- इस अचल सम्पदा के सोने की परख तो करो।
- धरती सबका भार वहन करती है। इसी पर नदी-नाले, पहाड़, मैदान सब है। धरती न हो तो समुद्र भी नहीं होगा।
- सूर्य की तपन से जब धरती फट जाती है, वर्षा की बूंदों से वह धरती फूल जाती है, बीज को अंकुरित करने की क्षमता रखती है।
- वह आपको कितना देती है और आप उस पर अपना अधिकार जमाते हैं। जिसके लिए आपको नियुक्त किया वह वितरण न कर अपने ही हाथ में सब रख लेते हैं। धरती भी अपना हाथ खेंच लेती है। उदारता रखीये तभी सबको मिलेगा।
- वृक्ष को धरती का पूत (भूपूत) कहते हैं। आज वाहनों के कारण उसे भी काट रहे हैं, जो शुभजन पथिकानाम् खेदनोद समथे... राही के राह में हमसफर होता है।
- धरती पर तीर्थंकर जैसी चैतन्य शक्ति भी जन्म लेती है।
- भगवान तेरवें गुणस्थान में है और आप मेरे गुणस्थान में है

□ □ □

५-१२-२० आओ बदलो हाथ की रेखायें शुक्रवार

० आंसुओ से ही करुणा की अभिव्यक्ति मानना गलत है। प्रभु/गुरु, मे अपार करुणा है पर आपके आंसु से उनकी आंख में भी आंसु हो, ऐसा नहीं।

जिस तरह मरीज की आंख मे पानी होने पर भी चिकित्सक की आँखो मे पानी नहीं होता यदि पानी आये तो शल्य चिकित्सा हो ही नहीं सकती, इसी तरह भगवान कभी भी रोते नहीं, शोक से रहित होते हैं।

० भगवान शोकग्रस्त नहीं, हाँ जो शोकग्रस्त है, उन्हें अशोक बनाते हैं।

० अशोक वृक्ष एवं अशोक-चक्र मे अन्तर है। अशोक चक्र मे बहुत से पहलु होने से आंखे घुमती रहती है जब कि वह अशोक चक्र स्थिर है जो स्थिर है वह शोकग्रस्त नहीं अशोक है।

० अपना कर्त्तव्य करो। कर्त्तव्य करना हमारा रिवाज, परम्परा आम्नाय है। हमारे यहां ऐसा लाड-प्यार नहीं किया जाता जिसमें कृपांक देकर पास कर दो।

० अंक के अभाव मे शून्य का महत्त्व ही क्या? अंक सम्यग्दर्शन है तो शून्य ज्ञान-चारित्र।

० कोरोना मे छोटे बच्चो एवं वृद्धजनों को घर से बाहर जाने की सरकार की भी अनुमति नहीं है।

० हस्तरेखा को बदला भी जा सकता है। ललाट की रेखा (भाग्य, किस्मत) जीवन रेखा को भी कर्त्तव्य से बदल सकते हैं।

० आराम तो कर सकते है पर खुर्राटा नहीं ले सकते, सो नहीं सकते।

०००

८-१२-२० उपासना अहिंसा महादेवता की शनिवार

- जो भी समय का उपयोग हो रहा है वह अहिंसा महादेवता की उपासना में ही हो रहा है।
- अहिंसा महादेवता कुछ बोलती नहीं, जो गलत बोलता है उसकी जीभ पकड़ लेती है।
- सत्य सबको दिशा बोध दे देता है किन्तु पंचम काल की महिमा है जो उस सत्य को उद्घाटित करने में बहुत समय लगता है।
- रामायण में सीता की कथा से सबको पाठ मिल जाता है।
- अपने आत्मतत्व का ध्यान रखते हुये भी उसका प्रभाव अन्य (पर) पर पड़ता है। छाया की भांति।
- छाया में छाया नहीं पड़ती, प्रकाश में ही छाया पड़ती है। हाँ बड़ों की भी छाया पड़ती है। बड़ों की गवेषणा करें।
- बड़े प्रकाश में भी छोटे प्रकाश की छाया पड़ती है। इसे समझना भी अति आवश्यक है।
- घट में सत्य है तो बिना बोले भी वह उद्घाटित हो जाता है।
- धैर्य की बहुत आवश्यकता है, धैर्य का बांध पंचमकाल में टूटने जैसा हो जाता है।
- किसी की वजह से कर रहे हैं ऐसा नहीं है, अपने आत्म तत्व के लिए ही हम कर रहे हैं।

०००

रविवार

6-12-20 दर्पण बोलता है रविवार

- अरिहन्त परमेष्ठी को पहले इसलिए रखा कि हमारा काम अरिहन्तों से ज्यादा पड़ता है, स्वार्थी हैं क्योंकि काम इन्ही से हो सकता है इसलिए सिद्ध बाद में अरिहन्त को पहले रखा।
- अरिहन्त प्रभु दर्पण की तरह है तथा सिद्ध परमेष्ठी काँच की तरह। दर्पण में प्रतिबिम्ब दिखता है जब की ~~बिंदु~~ काँच में आर-पार। यदि चलना चाहते हो तो काँच की ही जरूरत है पर दर्पण के बिना चल नहीं पाओगे।
- आँखे न स्व को देख पाती है न पर को। आँखो के माध्यम से हम दर्पण में बिम्ब देख ~~अपना~~ जान सकते है।
- अरिहंत बोलते भी है इसलिए भी पहले रखा।
- सिद्ध परमेष्ठी देखने एवं दिखाने के योग्य नहीं है, केवल मानने के योग्य है, संवेदन के योग्य है। यह मात्र विश्वास से ही हो सकता है।
- जैसे नारियल विश्वास से खरीदते हो वैसे ही सिद्ध प्रभु पर भी विश्वास करके चलना प्रारम्भ कर दो।
- घंटी-चाहे सोने की हो या लोहे/तांबे की ध्वनि तो एक सी ही आयेगी। ध्वनि कभी दिखती नहीं-सुनाई पड़ती है।
- काँच में पारदर्शिता होती है, दर्पण में नहीं। साफ सुथरा काँच हो तो टकराना, अटकना-भटकना नहीं होता।

- मैं बोल रहा हूँ- ये आपके काम पहले आयेगा मेरे बाद में, क्यों कि मैं पर के लिए बोल रहा हूँ। भीतर बोलने की आवश्यकता ही नहीं है।
- प्रथम भूमिका में दर्पण चाहिए फिर काँच से पार देखकर चलना प्रारम्भ कर दें। इसके उपरान्त न ही दर्पण एवं न ही काँच मात्र संवेदन की ओर ध्यान रहना चाहिए।
- चश्मा लगाते हैं- दूर जाये, लज हो जाये, नं. बदल जाये, आँखों की ज्योति ही चली जाये पर संवेदन में इन सबकी आवश्यकता नहीं। आँखें बंद करें या खोलें..... एक सा लगता है।
- आप लोग चश्मे में ही उलझ जाते हैं फिर उसी को ओढ लो तो कहना ही क्या?
- पारदर्शिता सदैव प्रमाणिकता मानी जाती है।
- दर्पण में पारदर्शिता नहीं- टकराहट है पर अर्हन्त प्रभु को देखते ही मालुम पड़ जाता है कि हमें क्या करना है। इसीलिए स्वाध्याय से जो फलीत नहीं होता है वह वीतराग मुद्रा के दर्शन से होता है। हाँ, स्वाध्याय से हमें मार्ग का पता चलता है।
- जब चश्मे का काम नहीं होता तो उसे सिर पर (यूं) चढ़ा देते हैं, बस आप भी आंखों से सीमित ही काम लेओ। तभी स्व का संवेदन होगा।

ooo

7-12-20 अपनाओ सिंह की प्रवृत्ति सोमवार

"शास्त्रों में उदाहरण मिलता है। इस जगत में दो प्राणी है दोनों संज्ञी पंचेन्द्रिय परन्तु दोनों की प्रवृत्ति में बहुत अन्तर है। एक सिंह है तो दूसरा श्वान। श्वान पर पत्थर फेंको वह पत्थर की ओर भागता है तब तक 2-4 पत्थर और पड़ जाते है किन्तु सिंह पत्थर किसने फेंका, कहाँ से आया? उस ओर देखता है। बस संसार में भी दो तरह के प्राणी रहते हैं एक नोकर्म का निमित्त मानता है तो दूसरा नोकर्म को लाने वाले कर्म को। कर्म की ओर दृष्टि दो।"

अनमोल-वचन

- कर्म कभी देखने में नहीं आते, पर उसके बिना कुछ होता भी नहीं।
- जब करना हो तब कर लेना आज-कल, दिन में-रात में इसी पर श्रद्धान करना है।
- इस परीक्षा में अच्छे-अच्छे फेल हो जाते है जैसे-प्रशासन की परीक्षा में - प्रवेश, लिखित फिर साक्षात्कार। पुनः जाँच भी नहीं करा सकते।
- श्रद्धान के साथ-साथ संवेदना में भी सफल होना है।
- अज्ञान एवं मोह के कारण संसारी प्राणी की स्थिति श्वान की भांति हो रखी है। सिंह की प्रवृत्ति अपनाओ
- धन्य है वे गुरु, जिन्होंने प्रश्न-पत्र लिख आत्मसाक्षात्कार में सफल हुये।

○ ○ ○

8-12-20 विकृति से प्रकृति की ओर मंगलवार

- समय से पहले फल चखने वाला बाद में केवल पछताता ही है।
- समय से पूर्व बनाया भोजन या तो ठण्डा (बासा) होगा या दुष्पक्व। दोनों ही शरीर के लिए नुकसानदायक है।
- कोरोना ने Fast Food के बिना भी जीना सीखा दिया, बल्कि अच्छे से स्वस्थ जीना सीखाया।
- मनुष्य को ही नहीं सेव, आम आदि फलों में भी केंसर होता है।
- आचार्यों ने सूत्र दिया - "वर्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य" ये सब काल द्रव्य के उपकार है।
- हर द्रव्य (वस्तु) में प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है, आप उसे रोक नहीं सकते चाहे फ्रिज में भी क्यों न रखें। जो जीवन को फ्रिज कर दे उसका नाम है फ्रिज।
- आज के युग को वही पसंद है जिसमें अहित है।
- समय से पहले भी नहीं एवं समय के बाद भी नहीं चाहिए चाहे गृहस्थ हो या श्रमण।
- फास्ट फूड नहीं - धास्ट फूड अपनाओ। वह स्वादिष्ट, ताकतवर, मर्यादित एवं सहज सुलभ होता है।
- सभी शब्दों के भोजन की समीक्षा की गई किन्तु सभी ने दाल-भात को मुख्य आहार स्वीकारा। इसे खाने से उकताहट नहीं होती।

o व्यंजन कब तक, अब तो स्वर चाहिए।

o काव्य में भी बिना व्यंजन चल सकता है पर स्वर बिना नहीं चला जा सकता।

o बिना स्वर के गर्दन हिल नहीं सकती।

o हमारे यहाँ मर्यादा का ध्यान रखा जाता है- श्रावक ऋतु अनुसार 3-5-7 दिन की मर्यादा पालता है। चक्की को साफ करके ही आटा आदि पीसता है ताकि उसकी मर्यादा बनी रहे। यह मर्यादा उसकी समीति कहलाती है।

o श्रावक मर्यादा को पालता है तभी मन-वचन-काय शुद्धि आहार-जल शुद्धि बोलता है।

o कोरोना ने खाना ही नहीं बैठना भी सीखा दिया। आप लोगों के लिए गोले बनाये हैं उसी मे बैठें।

o समय से पहले नहीं, प्रतीक्षा करिये अन्यथा उसकी समीक्षा भी नहीं कर पाओगे।

o डाल से गिरा फल लेना शुक्ल लेश्या का प्रतीक है। वह समय पर ही पक कर गिरेगा।

o जीवन में हेय-उपादेय तथा ज्ञेय-ध्येय को समझें। ध्येय बनाकर जीवन में विवेक रखकर मर्यादा का पालन किया जाता है।

o काल से पहले किया विकृति में ही आयेगा वह संस्कृति अथवा प्रकृति नहीं है ये सार है आज का।

ooo

9-12-20 "नागरिक बनो - देश बनेगा" बुधवार

- ज्ञान मिला है उसका सदुपयोग करो दुरुपयोग नहीं, अन्यथा वह स्व एवं पर दोनों के लिए ही अहितकारक सिद्ध होगा।
- मंदाग्नि होना एवं भस्मक व्याधि होना दोनों में ही स्वस्थता नहीं है। समय पर भूख लगे एवं संतुलित आहार हो तभी स्वस्थ कहेंगे।
- बहुत जल्दी जवाब देना अच्छा नहीं माना जाता।
- जिस प्रकार वैद्य अतिभोजन की इच्छा होने पर और स्वादिष्ट भोजन दे देते हैं। धीरे-धीरे उससे अरुचि होना प्रारम्भ हो जाती है, ऐसे ही समन्तभद्र स्वामी के साथ हुआ/धीरे-धीरे भस्मक व्याधि शांत हुई और प्रायश्चित ग्रहण कर अच्छे ढंग से समाधी हुयी।
- सही ढंग से उपाय करने पर अपाय छूट जाते हैं।
- साता भी आकुलता पैदा करती है। ज्यादा पैसा होने पर भी नींद नहीं आती एवं कम होने पर भी नींद नहीं आती। संतुलित धन होना चाहिए।
- संतुलित धन अर्थात समय पर खर्च एवं समय पर आय नहीं होगी तो अनर्थ हो जाता है।
- लोकतंत्र के साथ लोकतंत्र की संहिता भी अच्छी बनी होती तो ये नौबत नहीं आती। (किसान आंदोलन पर)
- जीवन भले ही आपका है परन्तु उसका यद्वा-तद्वा उपयोग नहीं कर सकते।

- यद्वा - तद्वा उपयोग करने से न ही स्वयं का तथा दूसरों का तो भला हो ही नहीं पायेगा। इसलिए बुद्धि को मांजकर स्वपर के लिए उपयोग करो।
- साक्षरता अभियान द्वारा भले ही 95 प्रतिशत से अधिक साक्षर हो चुके परन्तु सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश महोदय कह रहे हैं कि खेद है हम साक्षर तो बना दिये, नागरिक एक भी नहीं बना पाये।
- ताली बजा रहे हैं, मतलब पढ़े-लिखे तो हो परन्तु नागरिक नहीं बन पाये।
- भोजन जिसने बनाया है उसने उदारता पूर्वक निमन्त्रण देकर बुलाया है किन्तु जब भोजन वितरण का समय आया तो आपस में लड़ने लगे, अभी भारत में ऐसा ही हो रहा है।
- सही को सही स्वीकार करने में हमें अभिमान को बीच में नहीं लाना चाहिए।
- समय का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए एवं कभी भी अपव्यय भी नहीं करना चाहिए।
- जब उन्नति का समय आ रहा है तो इस तरह की बीमारियाँ (अस्वस्थता), उसमें भी मानसिक बीमार नहीं होना चाहिए।
- जो व्यक्ति अपना काम करते हुये दूसरों के बारे में भी सोचता है वह व्यक्ति बहुत जल्दी महान् बनता है।

□□□

10-12-20 वीतरागता तैराती - राग डुबोता गुरुवार

"जिस प्रकार आसमान से गिरी एक बूंद जैसा निमित्त मिलता है वैसी हो जाती है। वह बर्फ का रूप बन ओला बन जाती है अथवा सीप के संबंध से मोती अथवा बांस के सम्पर्क में वंशलोचन (मुक्ता) अथवा ऊपर की ऊपर मेघ मुक्ता बन जाती है उसी तरह से हमारा जीवन है भी जैसा निमित्त मिलता है वैसा बन जाता है। अहंकार मत करो।"

- पूरे बादल बरस जाये तो प्रलय आ जायेगा इसी तरह से आपका धन भी पूरा कभी नहीं खर्च होता, बूंद की तरह धीरे-धीरे आता रहता है।
- बूंद का अस्तित्व अनिश्चित है। धरती पर आते-आते कई परिवर्तन संभावित है।
- कहीं तो बूंद रूप में जलकायिक और कहीं मोती रूप में पृथ्वी कायिक। यह है निमित्त का प्रभाव। संसारी प्राणी की भी यही दशा है।
- जल की वर्षा से सुभिक्ष होता है और ओलावृष्टि से सब नाश हो जाता है।
- मैं ऐसा करूंगा -3 तो बोलता है मैं मरूंगा ये क्यों नहीं सोचता?
- कर्त्तव्य को समझने वाला कभी भी अहंकार नहीं करता।
- "मैं करके ही रहूंगा" ऐसा सोचना तो बिल्कुल गलत है। संभावना भावना रूप हो तो ठीक, अहंकार रूप न हो।

- सही पुरुषार्थ कर्त्तव्य की धारा को और लम्बा बनाता है जब की अहंकार उस धारा को वहीं की वहीं रख देता है।
- जैसा निमित्त मिल जाता है वैसी ही धारणा-भावना सामने आने लग जाती है।
- योग्यता के अनुसार परिणाम सामने आते हैं।
- प्रशासन की परीक्षा कई बार दी पर उत्तीर्ण नहीं हुआ, इस बार प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया। कर्त्तव्य मानकर करता जा रहा था। उत्तीर्ण होने पर स्वयं को भी विश्वास नहीं हो रहा। ऐसे ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो रहा है, स्वयं को पता नहीं किन्तु परिणाम जब आता है तब पता चल जाता है।
- अहंकार प्रत्येक क्षेत्र में घातक होता है, प्रत्येक कार्य पर पानी फेर देता है।
- किसी भी कार्य की परिपक्वता के लिए काल चाहिए और काल की कभी भी फोटोग्राफी नहीं होती।
- आपकी चाल के अनुसार काल चले ऐसा नहीं, काल के अनुसार आपकी चाल होना चाहिए।
- महापुरुषों के संकेत अनुसार चाल बने तो काल भी साथ हो जायेगा। पुलिस सुरक्षा भी करती है और गलत कार्य करने पर हथकड़ी भी पहनाती है।
- राग की उपासना से डूबोगे, वीतराग की उपासना से तैरोगे।

- संसार में राग ही डूबोता है, इसलिये राग से बचो, वीतराग के चरणों मे आ जाओ।
- जैसी मति होती है वैसी ही गति होती है किन्तु अन्त-मता सो गता भी कहा है। अपनी मति को वीतरागता की ओर लाओ।
- आँख खोलो तो वीतराग की भक्ति करो एवं आँखे बंद करो तो ध्यान।
- ध्यान में आँखे खोलने की कोई जरूरत नहीं होती।
- आँखे बंद करो या खोलो दोनों में लाभ है।
- एक बंद एवं एक आँख खोलना चंचलता का प्रतीक है। स्थिरता के साथ भक्ति करो या ध्यान करो।

o o o

कुछ हटकर -

- आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने वस्तुओं का परिमाण न बनाकर इच्छाओं का परिमाण कहा जो ज्यादा व्यापक है।
- ज्ञानी जीव सदैव त्याग के पूर्व राग छोड़ने का प्रयास करता है।
- तव-मम, तव-मम इति संकल्प परिग्रह इसलिये थारं-म्हारी से बचो।
- अध्यात्म का मार्ग बहुत सीधा एवं सरल है आचार्यों ने स्वयं चलकर हमारे लिए भी यह मार्ग दिया है।

11-12-20 "अब तो दूर हो राग रूपी चिपकन" शुक्रवार

"जिस प्रकार दो कागज है उनके बीच में गोंद है तो वे एक-दूसरे से चिपके हुए है। गोंद अकेला तो चिपक नहीं सकता, कागज भी कागज से नहीं चिपक सकता। बस यही स्थिति आत्मा की है जो कर्मों से चिपका है। राग-द्वेष रूपी गोंद जो लगा है रसायन विशेष से उसे अलग किया जा सकता है ऐसे ही कर्मों को भी अलग किया जा सकता है।"

"जिस प्रकार दीवार पर यदि चिकनाई (स्निग्धता) लगी हो तो थोड़ी धूल भी होगी चिपके बिना नहीं रहेगी। खूब धूल हो पर चिकनाई नहीं तो दीवार का कुछ नहीं होगा। यही राग रूपी स्निग्धता आत्मा से कर्मों की धूल को चिपका रही है। उस दीवाल की कालीख उतारकर एक-दो नहीं ज्यादा हाथ रंग चढ़ाने पर कालीख दिखना बंद हो जाता है।"

जिस प्रकार छोटे बच्चे को पहले दूध फिर धीरे-धीरे अनाज देते है, अपथ्य सेवन से इसे माँ बचाती है बस इसी प्रकार प्रारम्भिक अवस्था में अभ्यास करते समय बाहर के अपथ्य से बचें।

- जीवन में आज तक दीवाली मनायी ही नहीं गयी होली के सिवाय।
- जो रास्ता अभी अपना रखा है, उसे छोड़ने का नाम ही मोक्षमार्ग है।

- वस्तु ने आपको नहीं पकड़ा, आप वस्तु को पकड़कर चिपके हुये हैं। आप जाननहारा है, वस्तु नहीं।
- समयसार में लिखा है- वस्तु बंध का कारन नहीं, वस्तु को अपनाना बंध का कारण है।
- धूल कभी धूल से नहीं चिपकती, स्निग्धता के कारण एक-दूसरे से चिपक जाते हैं।
- राग-द्वेष रूपी चिकनाहट ही संसार का मुख्य कारण है।
- संसार का कारण क्या है उसका स्वभाव समझकर कर्त्तव्य करते हुये युक्ति से उन कर्मों से बचने का उपक्रम करें।
- अपने आप पेपर कभी अलग नहीं होंगे, उसमें बार-बार रसायन डालने पर ही पृथक होंगे। विपरीत तत्वों को डालने से तो और चिपकेगा, खुलेगा नहीं।
- अपनी-अपनी स्थिति एवं परिस्थिति है इसलिए दूसरों को मत देखो, अपने से शुरुआत करो।
- वस्तु जहाँ है वहीं रह आये उसे छोड़ना नहीं मात्र आपको वस्तु से मुँह को मोड़ना है।
- इन्द्रियों से बंध नहीं उनके व्यापार से बंध होता है।
- जैनागम में मूर्छा को परिग्रह कहा और इच्छा परिमाण व्रत एवं स्वदार संतोष व्रत कहा। महाव्रती के लिए मूर्छा हटाना है आप लोगों को इच्छा घटाना है। स्वदार संतोष व्रत में एक के सिवाय अनंत का त्याग हो जाता है।
- समझाओ नहीं, समझने का प्रयास करो। ०००

12-12-20 स्वाधीन जीवन शनिवार

"जिस प्रकार मुर्गे को बाँग लगाने हेतु कोई घड़ी की आवश्यकता नहीं, समय पर उठता है समय पर सभी कार्य करता है, उसी प्रकार हमें भी प्रकृति के आधीन रहना चाहिए, अप्राकृतिक जीवन शैली में यंत्रों के सहारे (घड़ी) जीने का अभ्यास हो जाता है।"

गुरु-वाणी

o विशेष श्रम करने के कारण अब थोड़ा विश्राम करने के लिए कहा जाता है।

o मुर्गा किसी विद्यालय / विश्वविद्यालय में पढ़ने नहीं गया, न ही घड़ी बांधना सीखा है फिर भी समय पर उठना जानता है। संज्ञी पंचेन्द्रिय प्राणी है वह भी।

o द्रव्य-क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार भिन्न-भिन्न परिणमन होता है।

o घड़ी में आपने अलार्म भरा, उतने ही बजे बजा फिर गुस्सा क्यों आता है? कर्म भी इसी प्रकार आपने बांधे अब उदय में आने पर रोना क्यों?

o कोरोना जैसा मित्र कोई मिल जाता है तब अपने आप ही मानने लग जाते हो - चरण छूना नहीं, दूरी भी है जरूरी।

o अब चाय नहीं काढ़ा पीते हैं लोग। ~~फिर~~ ~~फिर~~ बिना भी काम अच्छे से चल सकता है।

o "परस्परोपग्रहोजीवानाम्" कोरोना काल में चिकित्सकों ने अपनी जान की परवाह न करते हुये भी खूब सेवा कर पुण्य लूटा...

13-12-20 आओ लौट चलें.... प्रातः रविवार

"जिस प्रकार दिन में कितने भी बादल घने क्यों न छा जाये, घटाटोप भी हो जायें परन्तु रात जैसा अन्धकार कभी नहीं होता, हाँ सूर्य का प्रकाश एवं प्रताप उतना तेज नहीं हो जितना गर्मियों में दोपहरी में। इसी प्रकार कर्म का आवरण कितना भी गहरा क्यों न हो वह आत्मा को जड़ नहीं बना सकता। इसलिए अपने भीतर की शक्ति को पहचानो।"

विद्या-वाणी

○ कहने मात्र से दूर नहीं हो पाता, हाँ कहकर के हल्के हो जाते हैं।

आत्मा न हल्की है न ही भारी, उसके आभारी रहे।

○ जो स्वभाव को देखता है वह सुखी है। स्वभाव को जो पा चुका है वह सुखी है। वहीं पर हम भी हैं और स्वभाव की ओर दृष्टि रखने वाला भी है। एक दुखी है किन्तु दूसरा सुखी।

○ समता के साथ भोगने से आगामी बंधा कर्म टलता है और आगे भी ऐसे संयोग, साधन/सामग्री मिलती है जो अनुकूल हो।

○ संसार में प्रतिकूलतायें ही मिलती हैं। मोक्षमार्ग में तो उपसर्ग और परिषहों के बिना एक सेकेण्ड भी नहीं चल सकते।

- बड़ी वेदना के सामने छोटी वेदना व्यक्ति भूल जाता है जैसे सिर में दर्द है उसे जोर से कान को खेंचो अब कान के दर्द की तरफ ध्यान है सिरदर्द पर नहीं।
- मोक्षमार्ग में भी उपयोग को बदलना पड़ता है।
- आपको ध्यान लगाना नहीं, बस ध्यान को परिवर्तन करना है। ये ही ध्यान का वैचित्र्य है।
- विदेश में कमा रहा है मतलब लड़का कब आ रहा है? वह माता-पिता को भी बुला लेता है-क्योंकि विदेश से ही प्यार है।
- आपका देश कौनसा है? सोचो। परिवर्तन होने वाला आपका देश नहीं।
- परदेश (विदेश) में सुख की सामग्री तो बहुत है पर आत्मीयता नहीं।
- आत्मीयता मिलने पर व्यक्ति हल्का हो जाता है, सोना-चांदी से हल्का नहीं, भारी हो जाता है।
- सूर्य में ताप-प्रताप दोनों रहते है कभी कम तो कभी ज्यादा।
- कोरोना ने सबको अंदर कर दिया। बालक भी कभी-कभी 10 माह तक भी गर्भ में रहता है। लेकिन वह संकल्प करता है - अब पुनः नहीं आऊंगा किन्तु यहाँ आने पर सब भूल जाता है।
- स्वर्ग में बड़े-बड़े परिवार है पर आत्मीयता नहीं।
- हम बहुत दूर था ऊपर देख रहे हो अब दूर से पेड़ों... हरियाली दिखेगी पर है नहीं।

- भारत का आयुर्वेद ऐलोपैथी से बहुत आगे का है, अब विदेश भी मानने लगे।
- यहाँ उकाली मात्र नहीं, हर वनस्पती रोगों को ठीक-ठाक कर देती है चाहे-हल्दी हो या कालीमिर्च कोरोना भी सीधा हो गया।
- भारतीय संस्कृति में तो प्रासुक पानी, उपवास आदि से भी चिकित्सा होती है।
- बिना मात्रा के चल रहे हो। बिना मात्रा के तो काव्य में भी आनंद नहीं। सब कार्य मात्रा से हो।
- व्यंजन अकेले से वाक्य रचना नहीं स्वर आवश्यक है, इसी तरह व्यंजन मात्र से जीवन यापन नहीं, संतुलित आहार होना चाहिए।
- सारे विदेश भारत की ओर देख रहे हैं, भारत कहाँ देख रहा है? उसे अपने भीतर देखने की जरूरत है वहीं सब कुछ है।
- पागल के पीछे लोग लगते हैं, पागल कभी किसी के पीछे नहीं लगता अतः वही सही ज्ञानी है।
- दुर्दिन वो दिन है जिसमें आप सहधर्मी या आत्मधर्मी को भूल जाते हैं। ये दो ही धर्म है। कोरोना में ये दोनों याद रहे तो फिर दुर्दिन नहीं थे।
- भारत की माटी को माथे से लगाते हैं। मोहनजोदड़ो इतना समृद्ध शल्य चिकित्सा के औजार उसी से बने होते थे। इतिहास तो जानो।

- आज शल्य चिकित्सा मतलब ऑपरेशन अंग-काटना ही मानते हैं। आयुर्वेद में ऐसा है ही नहीं बहुत सारी पद्धतियों से शरीर की गांठ या अंग की जो विकृति आ गयी है उसे बाहर कर देते हैं। अंग ज्यों का त्यों बना रहता है। यह पद्धति केवल आयुर्वेद में ही है ऐलोपैथी में नहीं।
- वर्तमान चिकित्सा पद्धति एवं आयुर्वेद/भारतीय चिकित्सा पद्धति में बहुत अन्तर है।
- विश्राम को खरीद नहीं सकते हैं मोबाइल आदि को भूल जाओ तो विश्राम मिल सकता है।
- हमारे पास भी मोबाइल है पर वह एक ही जगह काम करता है बस बड़े बाबा से बात करने में।
- जिससे भी सिर दर्द हो उसे भूलने का प्रयास करो।
- हमारे दिन एवं आपके दिन में बड़ा अन्तर है। भले ही प्रकाश दिख नहीं रहा पर अंधकार तो नहीं।
- चश्मा लगाने से नहीं, आंखें बंद करने से भी स्पष्ट ध्यान में आने लगता है।
- टेंशन ठीक करना है तो इंटेंशन ठीक कर लो फिर आपको मेडीटेशन की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी।
- हमारे यहाँ तो हमेशा ही एक-दूसरे से दूरी बनाये रखते हैं, क्यों की घनिष्ठता होना राग का प्रतीक है।
- ये ऐसा स्वर्ग है जहाँ गाड़ी से भी एवं पैदल भी आ सकते हैं।

ooo

15-12-20 तन मिला तुम तप करो सोमवार

जिस प्रकार मोर के पंख बहुत सुन्दर होते हैं, किन्तु जब वे ही पंख उसको उड़ने या चलने में बाधा करते हैं तो वह उनका त्याग कर देता है इसी प्रकार यह शरीर बहुत अच्छा है परन्तु यदि भार स्वरूप हो जाये तो बुद्धिपूर्वक त्याग कर दिया जाता है इसी का नाम सल्लेखना है।

दूसरा उदाहरण है जैसे किसान धान आदि बोता है एक बीज का कई गुना कर लेता है उसी तरह यह शरीर मिला है, इसका उपयोग कर लो। उपयोग सही करेंगे तो भवसागर से पार भी हो सकते हैं।

विद्यावाणी

- जो उपकार करे वह उपकरण कहलाता है। "उपकारम् करोति इति उपकरणम्"। यह शरीर उपकरण के हिसाब से मिला है सदुपयोग कर लो।
- देव, तिर्यञ्च, नारकी, भोगभूमी के मनुष्य भी इन सबको ऐसा उपकरण प्राप्त नहीं जैसा कर्मभूमी के मनुष्यों को मिला है।
- आज किसान बीज तो बोता है पर ऐसी खाद आदि डालता है जिससे जमीन ही बंजर हो जाती है। इस शरीर में भी ऐसी ही खाद डाल रहे हैं, अब जाग जाओ इसमें अच्छी खाद (Fish-Food) डालो।

- खाना चाहिए लेकिन क्या खाना, कितना खाना, कब खाना, कैसे खाना ये बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- अमीर लोग बहुत खा रहे हैं। क्या? दवाई।
- जो शरीर रूपी उपकरण मिला है उसका बुद्धिमत्ता से उपयोग करो।
- भोगभूमि का मनुष्य भी दूसरे स्वर्ग तक ही जा सकता है लेकिन यहाँ का तिर्यञ्च भी 16वें स्वर्ग तक, तथा मुनिमहाराज मिथ्यात्व के साथ भी 16 तक जा सकते हैं।
- शरीर को आप वाहन के समान समझो। एक साथ ब्रेक लगा दिया तो जैसे गाड़ी पलट जाती है वैसे ही एक साथ नहीं कर सकते। आगे का ब्रेक नहीं लगाकर पीछे का ब्रेक लगाते हैं, वह भी समय पर तभी गाड़ी दुर्घटना से बचती है।
- शरीर रूपी विमान का सदुपयोग करो ताकि एक आध भव में ही बेड़ा पार हो जाये।
- खूब कमाओ इस शरीर से, ध्यान रखना वितरण करना भी महत्त्वपूर्ण है।
- मन विषयों की ओर न जाये, ये काया के प्रति मन का उपकार है।
- विषय सेवन करने वाले को प्रकाश भी है, चश्मा भी है, आँख भी है फिर भी कुछ नहीं दिखता।
- मयुर भी धन्य मानता होगा मुनिराज को पिच्छीका देकर।

○○○

15-12-20 बदली दृष्टि - बदलेगी सृष्टि मंगलवार

"जिस प्रकार मानस सरोवर में मोती भी होते हैं तो मछलियाँ भी होती हैं। परमहंस मोतीयों को ग्रहण करता है तो बगुला उन मछलियों के पीछे पड़ा रहता है। ठीक इसी प्रकार इस संसार में भी रत्नत्रय रूपी मोती भी हैं और विषय-वासना रूप (पंचेन्द्रिय एवं मन) मछलियाँ भी (अज्ञानी विषय वासना में पड़कर अपने संसार को और बढ़ा लेता है जब की ज्ञानी परमहंस की भांति रत्नत्रय धारण कर संसार का नाश कर देता है।"

गुरु-वाणी

- मान का सरोवर नहीं, मानस सरोवर है। जो अभी चीन की सरहद में आता है।
- जो दृष्टि में होता है वही मिलता है. परमहंस की दृष्टि में मोती ही रहते हैं। आपकी दृष्टि यदि हार पर है तो हार ही मिलेगा।
- आजकल बनावटी (नकली) हार, आभूषण आदि बहुत चल पड़े हैं। अष्ट द्रव्य की थाली भी रत्न जैसे हैं पर रत्न नहीं।
- मोती की पहचान हंस ही कर सकता है। हंस-बगुला दोनों सफेद हैं पर कार्य दोनों के बिल्कुल विपरीत
- बाहर ही दृष्टि रहती है, आत्मदृष्टि से ही भीतर आ पायेंगे। जो आत्मा को भूल गया, उसकी सोबत भी मत कर

- प्यास का अर्थ है- इच्छा करना। इच्छा/उत्कण्ठा हो केवल धर्म की ही भावना हो। परमहंस वही करता है।
- राग द्वेष रूपी कलोल अर्थात तरंग को शांत करो। उन तरंगों को कम करोगे तभी निस्तरंग हो पाओगे और फिर अन्तरंग तो अपने आप झलक जायेगा।
- भावना भव नाशनी है। भव यानि संसार को पार करने मे भावना नौका समान है।
- समोशरण मिलना बहुत विकट है परन्तु कुछ लोग दूसरो के सहारे कोकट में ही चले जाते हैं, पर वे बाहरी चकाचौंध में ही अटक जाते हैं।
- दुनिया का आकर्षण छुटे तभी वास्तविक आकर्षण का लाभ मिलता है।
- सब जा रहे है, इसलिए यह भी भागा जा रहा है पर क्यों जा रहा इसे तो भूल ही बैठा है।
- गुफा में ध्यान इसलिए लगता है वहाँ बाहर का कुछ भी सुनाई ही नहीं देता। उन्हें गुफा में बोरियत नहीं होती, आडे नहीं होते अपितु मोह को आडे हाथ लेते हैं।
- आँखे बंद करने का मतलब बाहरी आकर्षण समाप्त हो गया।
- आँखो से फोटोग्राफी करो, भर लो, रात में आँखे बंद करके चालु कर दो सबकुछ दिखने लगेगा।
- ऐसी संगति करो जिससे आत्मोन्नति हो एवं ऐसे स्थान पर जाओ, जहाँ बार-बार जाने का मन करे।

o आज कोहरे में भी सभी अपने-अपने चहरे लेकर आये हैं।

o जब अति हो जाती है तो ठीक करने कोरोना जैसी महामारी आ जाती है। अब प्रासुक पानी पीने का लाभ समझ में आ गया।

o जो जीवन को फ्रीज कर दे उसका नाम फ्रीज है। अब फ्रिज (फ्रिज) को फ्रीज कर दो।

o जो सम्यग्दृष्टि है, निकट भव्य है सीधे इसी दुकान पर आ जाते हैं। इन्हें पता है अन्यत्र इस प्रकार का माल मिलता ही नहीं।

o "भावना हो इच्छा नहीं।" संसार ताप विनाशनाय... ये भी भावना है। मुक्ति की इच्छा नहीं भावना होवी तो अवश्य मिलेगी।

o o o

शल्य-चिकित्सा

आयुर्वेद के माध्यम से भी शल्य चिकित्सा होती थी, हो सकती है। ये घोषणा होते ही, ऐलोपैथी डाक्टरों का विरोध होने लगा जब कि हजारों वर्ष पूर्व बिना चीर-फाड़ के कई तरह से बड़ी-बड़ी शल्य चिकित्सा होती है। 60-70 के औजार भी इसके लिए उपयोग होते थे।

o उपवास से कैंसर की बिमारी भी ठीक हो सकती है।

o शिक्षा ऐसी हो जो सम्यग्ज्ञान के साथ आत्मतत्त्व (अध्यात्म) की ओर ले जाये। अपने आप को जो उपलब्ध नहीं कराये वह काहे की शिक्षा?!

16-12-20 सुनो तो समझो बुधवार

रेडियो में जैसे आकाशवाणी से प्रसारित किया जाता है उसमे एक बाल का भी अन्तर होने से रेडियो में आवाज सुनाई नहीं देगी। भारती नहीं विविध (तरह-तरह) भारती बोलती रहती है। वैसे ही मोक्षमार्ग में एक बाल का भी गडबड़ (फर्क) होगा तो कहाँ के कहाँ पहुँच जाओगे पता ही नहीं चलेगा।

संस्मरण - 1

एक बार एक डाक्टर आये, बेटी विदेश पढ़ती थी। विदेश में दुग्ध-पानी में कुछ भी मिलाकर तत्त्व के नाम पर खिला दिया जाता है। बच्ची धार्मिक होने से उसने मना कर दिया। बाद में वह कोर्ट में चली गयी और जीत प्राप्त की। आप कुछ भी खा लें ये ठीक नहीं। शाकाहारी हो तो विशेष ध्यान रखकर खाओ।

संस्मरण - 2

50 वर्ष पूर्व हमारी आँखो के लिए चश्मा लगाने को बोला था, अंग्रेजी के डाक्टरों ने। हमने आज तक चश्मा नहीं लगाया और अच्छा दिखता है। बारीक अक्षर भी पढ़ लेता हूँ। कारण हमने ऐलोपैथी का सहारा नहीं लिया, आयुर्वेद में उल्लेखित प्रयोग किये। त्रिफला, बादाम, कपूर भीमसेन, सरसों तेल शुद्ध घी आदि ऐसी औषधीयाँ है जिनसे आज तक आँखे स्वस्थ है।

विद्या - सूत्र

- सुनाई तभी देगा जब स्टेशन सही लगेगा। थोड़ा भी गड़बड़ तो सुनाई नहीं देगा। बात बहुत गहरी है, पर हम सुन नहीं पा रहे क्यों कि बहरे हैं।
- भारत मे रहकर यदि विदेशी शिक्षा, विदेशी भाषा का प्रयोग होगा तो वह उनके ही काम आयेगी, भारत के काम नहीं आयेगी।
- पढ़ाई का महत्व क्या? पढ़कर भी अपढ़ है। अच्छे-अच्छे इंजिनियर आते हैं, बताते हैं कि कम्पनी कार्य देती है पर पहले ट्रेनिंग करवाती है अर्थात जो भी पढ़ा है उसे अलग रख दो, हम जो करायें उस पर ध्यान दो।
- विदेश का ही सब कुछ तो संतान भी विदेश ही चली गयी, विशेष देश चला गया, विदेश चला गया।
- चीन का मुख्य भोजन है-मांसाहार वह मांस किसी का भी हो, सर्प तक मारकर खाये जाते हैं। सबने स्वीकार किया - कोरोना का प्रबल कारण मांसाहार ही था।
- ऐलोपैथी में कोरोना का ईलाज नहीं आयुर्वेद मे तो काढ़ा पीकर ठीक हो रहे हैं। ऐलोपैथी मे डा. संक्रमित, आयुर्वेद मे एक भी नहीं हुआ। वहाँ एक महिना यहाँ 7-8 दिन मे ही घर जाओ। वहाँ लाखो का बिल यहाँ कम खर्च मे स्वस्थ। ऐलोपैथी मे दवा मरती है, आयुर्वेद में जितनी पुरानी उतनी (अच्छी) आयु बढती चली जाती है।
- आहार ही औषध है तथा उपवास-चिकित्सा आयुर्वेद के प्रमुख अंग हैं

ooo

17-12-20 पहचानो असली हीरे को गुरुवार

"असली एवं नकली की पहचान जिस प्रकार कठीन होती है किन्तु असली, असली ही होता है नकली की कोई किमत नहीं वैसे ही धर्म की सही पहचान होना जरुरी है। हीरे की तरह हमें धर्म की सही पहचान करना है।" असली

गुरु वाणी

- सही ज्ञान को प्राप्त करें एवं जो योग्य पात्र है उसे सौंपकर जायें।
- संसार के अधिकतर लोग नकली को ही असली मान बैठते हैं। चमकने वाली हर चीज को सोना मानना उनकी भूल है।
- मक्खी भी हीरे को पहचानती है, वह मिश्री की डली पर बैठती है हीरे पर नहीं।
- हीरा सबको तोड़ देगा लेकिन स्वयं नहीं टूटेगा।
- चक्रवर्ती विवाह की प्रणाली बहुत अच्छी है किन्तु अपने आत्म तत्त्व को कभी न भूलें।
- संसार में सब कुछ क्षणिक है, नश्वान है मात्र धर्म ही साश्वत है, स्थायी है।
- जो दुर्गति से उठाकर ऊपर (सुगति) में धरदे वह धर्म कहलाता है।
- धर्म को परखना कठीन है उसे परखा नहीं मात्र अनुभव किया जा सकता है।

000

18-12-20 फार्मूला जहर उतारने का शुक्रवार

"जिस प्रकार सर्प के शरीर पर कांचली होने से दिखना बंद हो जाता है उसे छोड़ते ही जवान हो जाता है और दिखने लग जाता है पर भीतर का विष तो अभी नहीं छोड़ा जो मृत्यु का कारण है इसी प्रकार मनुष्य भी कांचली रूप वस्त्र तो छोड़ देता है या शरीर तो छूट जाता है पर भीतर का राग-द्वेष-मोह रूपी जहर नहीं छूटा जो भव-भव में भटकाने का कारण है। शरीर के साथ कषाय को भी कृष (कम) करते चले जाना है तभी आत्म कल्याण (समाधी) कर सकते हैं।"

विद्या-वाणी

- ऐसा भी वैचित्र्य होता है कि सर्प डसे तो व्यक्ति नहीं मरता किन्तु वह सर्प ही मर जाता है क्यों कि उस व्यक्ति के भीतर इतना जहर भरा है।
- सर्प के डसने से वैद्य लोग चिकित्सा कर जहर उतार देते हैं, हलाहल की भी चिकित्सा कर बचाया जा सकता है किन्तु कषाय रूपी जहर से काटा गया कभी बचता नहीं। दूसरा यदि सर्प के जहर से मर भी गया तो एक ही भव गया परन्तु कषाय रूपी जहर तो उसे भव-भव में मारता है। इसलिये राग-द्वेष-मोह से बचो।
- ये स्वीकार करना पड़ेगा कि हम सर्प से भी ज्यादा विषैले हैं। हमारे भीतर भी जहर है।

o किसी व्यक्ति को देखने से हम प्रभावित नहीं होते किन्तु यदि अपना कोई आ जाता है तो हम तुरन्त ही मोहित हो जाते हैं।

o जिससे वैर होता है, देखते ही प्रतिशोध का भाव आता है मतलब प्रत्येक के पास दृष्टि-विष है। काट लिया तो फिर कहना ही क्या?

o आप जहर के साथ ही आये हैं। आत्मा की मृत्यु नहीं शरीर के कारण मृत्यु हो गयी, ऐसा कहा जाता है।

o जैसे सपेरा बीन बजाता है तो सर्प विष छोड़ देता है, ऐसे ही आप भी किसी बीन बजाने वाले को ढूंढ लें ताकि विष बाहर हो जाये। (आप ही तो हैं)

o पार्श्वनाथ भगवान के फणा पर सर्प रहता है, वही यही संदेश दे रहा है। उसने जहर को उगाल दिया और प्रभु की शरण स्वीकार कर ली।

o ऐसे वैद्य को पकड़ो जो दूसरे जीवन के लिए भी अमृत दे सके अर्थात् अमृतस्रावी ऋद्धिधारी हो।

o आत्मा पर इस तरह के संस्कार डालो तभी कर्मों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

o o o

o अपने इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी शक्ति, अपने कर्तव्य को कभी लचीलदार (डांवाडोल) न बनायें जैसे भारत का संविधान, लचकदार बना दिया तो आज भारत के सामने अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं।

19-12-20 कर्मों का खेल शनिवार

"कर्म पर विश्वास रखो, जो बांधा है वह भोगना ही पड़ता है। उदाहरण दिया श्रीकृष्ण का। तीन खण्ड के अधिपति होने पर भी जिनके एक तीर से लोग थर-थर कांपते थे पुण्य क्षीण होने पर द्वारिका जली एवं श्रीकृष्ण भी एक ही तीर से मृत्यु को प्राप्त हो गये।"

जिस प्रकार उपवास से पूर्व धारणा बनाना जरूरी होता है उसी प्रकार अपने विश्वास, अपनी आस्था को दृढ़ करना अति आवश्यक है। अपनी संस्कृति, अपने इतिहास के प्रति धारणा मजबूत होगी तो किसी दूसरे राष्ट्र से सलाह लेनी की जरूरत ही नहीं होगी।

विद्या-वाणी

- कर्म जब उदय में आते हैं तभी उसके स्वभाव को पहचानते हैं एवं आगे वैसा न करने का संकल्प लेते हैं।
- देव-शास्त्र-गुरु का सान्निध्य सब पाना चाहते हैं, पर कर्म में लिखा हो तभी मिलता है।
- कर्मों का खेल बड़ा विचित्र है। रोने से कर्म हल्के हो जायेंगे यह मान्यता ही गलत है। नवीन कर्म का बंध और हो जायेगा।
- अपनी आस्था को मजबूत बनायेंगे, तभी जो कुछ वक्त है उसका पूर्ण उपयोग हो पायेगा।
- तीन बातें हैं- उपयोग, दुरुपयोग एवं सदुपयोग। यूं ही समय निकाल देना उपयोग, विपरीत करना दुरुपयोग

एवं सही कार्यों/अच्छे कार्य करना सदुपयोग है।
0 एक-एक कदम रखना अणुव्रत है, एक साथ शुरू करना महाव्रत है।
0 जो क्रम (लाइन) में ही न लगे उसकी बात नहीं सुननी चाहिए।
0 जो ककहरा भी नहीं जाने ऐसे विदेश से भारत को सलाह नहीं लेनी चाहिए।
0 सलाह लें तो अपने ही इतिहास, अपनी ही संस्कृति से सलाह लें। 0 मजबूरी में नहीं मंजूरी में धर्म हो।
0 दूसरे का चश्मा लगाकर नहीं देख सकते, भले ही नं० एक से ही हो, इसी तरह भारत को भी अपने ही चश्मे से देखना चाहिए।
0 अपने पर भरोसा रखो, आज दूसरों पर प्रयोग करके दवाई बना रहे हैं, यह पद्धति ही गलत है।
0 दुकानदार एवं ग्राहक दोनों ही एक-दूसरे पर भरोसा रखते हैं फिर भी परीक्षा करते रहते हैं। ग्राहक श्रीफल बजाकर देखता है तो दुकानदार कलदार को खनखना कर, धोती पर रगड़ कर (चांदी-शीशम कितना?) देखता है।
0 आँखों से ज्ञान हो तो यंत्र ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं।
0 कोरोना में काम-धंधा ठप्प हो गया किन्तु यह भी ज्ञात हो गया कि बिना काम के भी चल सकता है।
0 शरीर के बिना कोई काम नहीं, अतः समय पर शुद्ध भोजन एवं आहार को ही औषध बनाकर लें।
0 उपवास के बाद पारणा में संयम की जरूरत है। उपवास करना तो सरल है पर तोड़ना कठिन।

0 0 0

प्रातः
20-12-20 "कर्त्तव्य बुद्धि रखो" रविवार

"एक व्यक्ति खिचड़ी पका रहा है - पुछा, क्या कर रहे हो? जवाब दिया खिचड़ी बना रहा हूँ। थोड़ी देर बाद दूसरे ने पुछा क्या कर रहे हो, जवाब मिला - खिचड़ी बन रही है मैं देख रहा हूँ। बस जीवन में इन दोनों जवाब को अपना ले जीवन लाजवाब बन जायेगा। प्रथम भूमिका में करने की बात होती है दुसरी भूमिका में मात्र ज्ञाता-दृष्टा बनना है, करने की बात नहीं होती।"

गुरु - वाणी

o मैं करके ही रहूंगा ये अहंकार कभी मत आने दो। हमें कार्य करना है, उसमें उपादान होगा तो अवश्य होगा। कंकड़ पत्थर की खिचड़ी नहीं बन सकती, जिजने योग्य जो है उसी से खिचड़ी बन सकती है।

o व्यवहार भी छोड़ने योग्य नहीं एवं निश्चय भी छोड़ने योग्य नहीं, बस: महत्वपूर्ण है संयोजना। कब व्यवहार को अपनाना है एवं कब निश्चय की भूमिका होती है, इस रहस्य को जाने बिना मोक्षमार्ग नहीं बन सकता।

o प्रथम चरण में बुद्धिपूर्वक राग को छोड़ा जाता है, व्रत-संयम को ग्रहण किया जाता है, निमित्त जुटाये जाते हैं फिर आग लगाकर छोड़ दिया - समय पर खिचड़ी बनकर तैयार होती है।

o कर्मों पर आस्था रखने वाला ही निमित्त - उपादान को स्वीकार कर सकता है।

o कर्तृत्व बुद्धि से बचकर कर्तव्य बुद्धि रखो।

o o o

२१-१२-२० "अतिथी संविभाग-धन के करो सहीभाग" सोमवार

"जिस प्रकार किसान बैल को खिलाता-पिलाता है, समय पर जितना काम लेना है, लेता है, शेष समय उनके कंधो पर से हल हटा देता है, बैल भी जुगाली में लग जाते हैं, उसी प्रकार अर्थ की व्यवस्था करनी चाहिए। जितना काम का है रखें, शेष को अतिथी संविभाग में लगा दें ताकि दूसरे के भी उपयोग आ सके।"

"जिस प्रकार पुराने चावल में स्वाद, गंध आदि बढ़िया होते हैं, चुरते भी जल्दी हैं। नये चावल में वैसा स्वाद-गंध नहीं, बनने में तो समय लगता ही है उसी प्रकार नये धन का उतना प्रभाव नहीं जितना पुराने धन का पड़ता है। उसी में से अतिथी संविभाग कर कुछ हिस्सा बाहर निकालो जिससे अन्य के काम आ सके।"

"जिस प्रकार एक विद्यार्थी अभावों में पढ़ता है, दीपस्तम्भ में अध्ययन कर परीक्षा देता है। दूसरा महलों में रहकर अच्छे प्रकाश आदि में पढ़ता है। जब परिणाम आया तो दोनों प्रतिभासम्पन्न होने से अंक समान लाये किन्तु हम उसके अंक ज्यादा मानेंगे जिसने मेहनत करके अभाव में भी पढ़ाई की, ऐशोआराम वाला उसके जितना प्रशंसा के योग्य नहीं है।"

"एक तो चक्रवर्ती ने दान दिया, दूसरा किसी गरीब ने दान दिया तो गरीब के यहाँ रत्नवृष्टि होती है। चक्रवर्ती के पास तो भण्डार है ही।"

विद्या-सूत्र

0 मुद्रा यदि आपके पास है तो आपकी मुद्रा भी खिली रहती है मुद्रा का अवमूल्यन होते ही चेहरा (मुद्रा) कुम्हला जाती है।

0 मुद्रा एवं मुद्रा के मूल्य जो अन्तर है उसे समझो। महत्व पूर्ण मुद्रा नहीं मुद्रा का मूल्य है।

0 कमाई का कुछ भाग अतिथी-संविभाग हेतु अवश्य निकालें। ये तभी संभव है जब कहाँ-कितना-खर्च करना इसका विभाग कर लेता है।

0 जिसके पास कम है वह थोड़ा भी देता है उसका महत्व ज्यादा है उन बड़े-बड़े सेठ साहुकारों के दानों से।

0 क्षेत्रों पर दान देते है इसी से यात्रियों का धर्म-ध्यान निरन्तर होता रहता है।

0 अर्थ विनिमय से ज्यादा वस्तु विनिमय का महत्त्व है। आज लोग इसे भूल गये है।

0 घर मे विवाह होना है तो आप कहते हैं दुकान अच्छी चल रही है। जैसे ही मध्याह्न मे दान मांगने आते है उनसे कहते है क्या करें आजकल दुकान नहीं चल रही। ये ही दो प्रकार की प्रवृत्ति है।

0 भाव लबालब है तो कुयें की तरह पानी लबालब अन्यथा सूखते देर नहीं लगेगी।

0 भाव सुरक्षित तो मुक्ति जाने तक सुख सुविधा मिलेगी। 0 0 0

आजका न्यायाधीश - "मूल गुण लो, इन्द्रियजय न कि, मनोविजय"

22-12-20 कषाय रूपी अग्नि से बचें मंगलवार

"जिस प्रकार हाई टेंशन लाइन में विद्युत प्रवाह चल रहा है, उससे दूर ही रहते हैं कोई खतरा नहीं होता, जिस प्रकार ईंधन को अग्नि से दूर ही रखते हैं तो अग्नि बुझ जाती है, जिस प्रकार विस्फोटक सामग्री से अगरबाती को दूर ही रखते हैं उसी प्रकार इस आत्मा को कषाय रूपी अग्नि से बचाकर रखते हैं ताकि परिणामों में विस्फोटन हो।"

विद्या - वाणी

- भीम महाबलशाली थे। अच्छे-अच्छे योद्धा/राक्षस भी टिक नहीं पाते थे पर दृष्टि बदल देने से भयंकर उपसर्ग में भी टस से मस नहीं हुये। पंक्तियाँ सार्थक कही गयी - गये राज तज पाण्डव वन को अग्नि लगी तन में ....
- भारत को महाभारत बनाने में पांच पाण्डवों का ही हाथ था। जैसे हाथ में पांच ऊँगलियाँ होती है वैसे ही ये पाँच पाण्डव थे।
- काया में शक्ति होते हुये भी प्रतिकार का भाव नहीं आना ही सही मोक्षमार्ग है।
- जो कुछ भी सामने आये उसे स्वीकार करना ही एक मात्र जीवन का लक्ष्य हो।
- मोक्षमार्ग न सीधा है, न टेढ़ा है इसमें तो मात्र अपने आप को सीधा बनाना है।

० सबके पास विस्फोटक सामग्री भरी हुयी है, किसी ने यदि अगरबत्ती लगा दी तो तुरंत विस्फोट हो जाता है।

० बाहर यदि अगरबत्ती से दूर रखते हैं तो भीतर ही भीतर जो विस्फोटक सामग्री है उसमें ऐसा विस्फोट होता है कि अनंतकाल से जो कुछ था सब राख हो जाता है।

० क्रोध हो रहा है तो उतना भयानक नहीं, पर क्रोध करते हैं तो ठीक नहीं।

० क्रोध को आग मत लगाओ। आ रहा है-जा रहा है इससे उतना नुकसान है नहीं।

० ईंधन के बिना कभी भी अग्नि के दर्शन नहीं हो सकते।

० जैसे दूध गरम ही पीया जाता है पर गरम को छूते नहीं। लकड़ी के हेण्डल से पकड़कर डालते हो इसी तरह अग्नि से काम लेओ, अग्नि को पीना नहीं है।

० आप दीवाली पर पटाखे फोड़ते हैं, भगवान महावीर स्वामी ने भी पटाखे फोड़े, ऐसा विस्फोट किया कि भीतर के सारे कर्म ही नष्ट हो गये।

० विस्फोट सामग्री के पास होने पर भी विस्फोट न हो ऐसी वृत्ति का नाम ही मोक्षमार्ग है।

० मोक्षमार्ग तभी शुरु होता है जब मोहमार्ग पर प्रहार हो। मन कमजोर तो घर वाले अनुमती भी दें तो भी काम नहीं होगा।

० शरीर में कहीं भी थोड़ा सा गरम लग जाये तो चटका लग जाता है पर जीव्हा पर गरम सहन होता है, क्यों

कि जीव्हा अभ्यस्त हो गयी है। इसी तरह कषायों की जलन से भी शांत होना सीखें।

○ जीव्हा में अपार क्षमता होती है। ऊँगली जल जाये तुरंत मुंह में डालते हैं अच्छा लगता है। गाय भी बछड़े को चाटकर स्वच्छ कर देती है।

○ कोरोना कुछ देशों में पुनः दूसरे रूप में आ रहा है अतः असावधानी न रहे। भारत में कम हो गया इसका अभिमान भी न करें। इंग्लैंड आदि में पुनः लॉकडाउन हो गया।

हल्दीघाटी का प्रसंग पढ़ा था। जीत हो ही गयी, एक रात ही बीच में थी। रात में सबने नशा कर लिया। परचक्र ने विजय पक्ष को हरा कर फिर से कब्जा कर लिया। इसलिए अभिमान न करना।

○ जो शूरवीर हैं वह विजय प्राप्त करता है पर उन शूरवीरों ने तो नशे पर विजय प्राप्त कर ली थी।

○ ○ ○

प्रतिमा-1

प्रातः

23-12-20 स्वरूप प्रथम प्रतिमा का बुधवार

- जैसे समुद्र मे ज्वार-भाटा आता है वैसे ही यदि उत्साह हो तो आपलोगों को इतनी सर्दी मे भी नेमावर आने का भाव हुआ।
- उत्साह होने पर सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास सब गायब हो जाता है एक क्षण की तरह।
- पुण्य का उपयोग विषय-कषाय में करने पर कभी भी आनन्द नहीं मिल सकता
- पुण्य कभी नष्ट नहीं किया जाता। पुण्य के उदय में पुण्य कार्य करने पर पाप की निर्जरा एवं पुण्य और बढ़ता जाता है।
- पुण्य की वृद्धि विषय-कषाय से नहीं विषयातीत होने से होती है।
- गुरुजी (ज्ञानसागर जी महाराज) ने वृद्धावस्था में अथक परिश्रम करके हमें रास्ता दिखाया। उसी का परिणाम आज भारतवर्ष के हर कोने मे त्यागी-व्रती-तपस्वीयों के दर्शन होते हैं।
- गुरुजी कहते थे दुर्लभ वस्तु का संग्रह नहीं करना, उसका उपयोग जन-जन तक होना चाहिए।
- इस संयम को लेने हेतु देव लोग भी तरसते हैं किन्तु ले नहीं सकते मात्र ताण्डव नृत्य कर सकते हैं।
- साधना एवं आराधना पंच परमेष्ठी की करते रहें ये सभी की भावना रहती है।

o वृद्धावस्था तो आना ही है किन्तु ज्ञानवृद्ध एवं तपोवृद्ध हों तभी वयोवृद्ध की सार्थकता है।

o दसवीं प्रतिमा तक घर पर रहकर साधना की जा सकती है। आज सात प्रतिमा से आगे कम ही लेते हैं। हमने 8-9-10 प्रतिमा हेतु ही मन में विचार किया, ताकि सभी इस ओर बढ़ें।

o यह प्रतिमा-विधान श्रमण बनने का मार्ग प्रशस्त करता है किन्तु विवेक के बिना निर्जरा नहीं अर्थात जो होना है वह नहीं हो पाती।

o बिना आस्था के कुछ नहीं किन्तु आस्था मात्र होने से भी उतनी निर्जरा नहीं होती।

o एक महीने में जितनी निर्जरा उतनी व्रतों को लेते ही एक दिन में भी कर सकता है।

o गृहस्थ में भी कर्म निर्जरा हो सकती है, इसके लिए पहले मोह छोड़ना होगा, चाबी देना होगा।

o जैसे आप यहाँ बैठे-बैठे विदेश से व्यापार कर सकते हैं उसी प्रकार यहाँ बैठे-बैठे कर्म निर्जरा, बस अपने मोबाइल का सम्बन्ध आचार्य कुन्दकुन्द से जोड़ना है। पंचपरमेष्ठी से जोड़ना है।

o जैसे दर्पण में आप देखते हैं वैसे ही प्रातःकाल उठते ही दोनों हाथ की हथेली बना उसको देखते हैं। क्यों? दर्पण को देखने से हमें अपना चेहरा नहीं दिखेगा, चेहरा देखने पर दर्पण गौण हो जाता है इसी तरह प्रभु को देखने से हमें अपने

भीतर के कषायानुरंजित भाव देखने को आते है। हम उसे दूर करने का प्रयास करते हैं।

- प्रथम प्रतिमा को दर्पण की उपमा दी है।
- दर्पण को नहीं पोंछना है, दर्पण देखकर अपना मुख पोंछना है।
- संसार-शरीर-भोगों से निवृत्ति का रास्ता स्पष्ट दिखने लगता है प्रथम प्रतिमाधारी को।
- जिस प्रकार कांटा लग जाये तो निकालने हेतु आजु-बाजु मे खोदते हैं, घासलेट तेल डालते हैं, दोनों अंगूठे से दबाते हैं तो वह ऊपर आ जाता है। यदि मोहनीय कर्म रूपी कांटे को ढीला करना है तो अपनी कषाय को कम करना होगा।
- जो गांठ पड़ी है उसे नाखुन से खोलना तो प्रारम्भ करो, ढीली जरूर होगी।
- सम्यक्त्व के साथ सम्यक्त्वाचरण चारित्र की व्याप्ति है। सम्यक्त्व हो एवं सम्यक्त्वाचरण चारित्र न हो ऐसा हो नहीं सकता। जैसे कली खिले और सुगन्धी न हो ऐसा होता
- आज ऐसा स्वाध्याय कर रहे है जिससे अर्थ का ही अनर्थ हो रहा है। धारणा गलत बना बैठे हैं, उन्हे आचार्य कुन्दकुन्द को अभी फिर से अध्ययन की आवश्यकता है।
- अनंत संसार को चुल्लु भर कर देता है उसी सम्यक्त्वाचरण चारित्र से।

○ आचार्य कुन्दकुन्द गृहस्थ आश्रम में सम्यक्त्वाचरण चारित्र माना है।

○ सम्यग्दृष्टि कभी विकलांग नहीं हो सकता। सभी अंगों का पालन होना अनिवार्य है। उसमें भी बुद्धि का होना पहले अनिवार्य है।

○ अब जाग जाओ। अपनी दुकान को संभालो। कह दो अड़ोस-पड़ोस को भी कह दो हमारे आंगन में नहीं आना। कुछ दिनों में आपही की दुकान रहेगी क्योंकि उस दुकान पर माल है ही नहीं। जैसे चीन की तरह- प्लास्टिक के ही चावल है।

प्रतिमा विज्ञान-2

23-12-20 जो मिला उसका उपयोग करो मध्याह्न

○ अक्षरश्रुतज्ञान की सम्यक्दर्शन के साथ व्याप्ति है ही नहीं।

○ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः की टीका करते हुये राजवार्तिक में अकलंक देव ने कहा मतिज्ञान अकेला भी हो सकता है। श्रुतज्ञान साथ ही रहता है ऐसा है ही नहीं। ऐसा षट्खण्डागम में भी आया है।

○ मैंने मार्ग बनाया तो मैं ही पहले चलूंगा ऐसा अहंकार मत पालना। युग के आदि में वृषभनाथ तीर्थंकर ने धर्म का प्रवर्तन किया पर वे यहीं पर थे तभी बाहुबली सर्वप्रथम मुक्त हो गये थे।

○ दर्पण हेय-उपादेय का काम करता है। कहाँ-कहाँ कर्म रूपी कालिमा है ये हमें वीतराग प्रभु रूपी दर्पण देखने पर ही ज्ञात होता है।

○ शब्दार्थ, नयार्थ, मतार्थ, आगमार्थ इन चार के बाद भावार्थ आता है, आज पहले भावार्थ दे रहे हैं यह आगम का अपलाभ है।

○ जिस प्रकार बालभानु को सब देखना पसन्द करते हैं, मध्याह्न का सूर्य हो तो एक सेकेण्ड भी देखने में सक्षम नहीं हो पाते, इसी तरह दूसरे के दोषों में हमें मौन रहना है। दोष ढाँकना है उस तरफ नजर जाये ही नहीं दोपहर के सूर्य की तरह तुरन्त उस ओर से नजर हटाओ।

○ गुणों का संचय करना बहुत ही सस्ता है, बस दोष पर से दृष्टि हटा लो।

○ गुरुजी ने कहा- परस्परोपग्रहो जीवानाम् = शिष्य गुरु की आज्ञा पालन कर उन पर उपकार करता है। भगवान महावीर से यहाँ तक यह परम्परा निरन्तर चली आ रही है।

○ व्रती बनते ही आपका संबंध तीर्थंकरों से जुड़ जाता है।

○ विदेश की अर्थनीति है और परमार्थ नीति मात्र भारत में ही उपलब्ध होती है।

○ आप सब भारतीय हैं तो भार उठाना है (धर्म रथ का)

○ आपकी नसैनी में चढ़ने के पायदान 7 ही हैं क्या? इसीलिए 7 प्रतिमा से आगे लेना नहीं चाहते। घर पर रहकर 8-9-10 प्रतिमा का पालन किया जा सकता है।

○ जैसे गन्ने में ऊपर-ऊपर मीठास अधिक होता है वैसे ही प्रतिमा बढ़ाने पर (ऊपर-ऊपर) कर्मों की निर्जरा विशेष होती है।

○○○

प्रतिमा-विज्ञान-3 प्रातः

२५-१२-२० स्वतंत्र रहें पर स्वच्छंद न हों गुरुवार

"जैसे मोदी जी (सरकार) ने कोरोना के लिए कहा, इसकी औषध नहीं है। परन्तु दो बातें हैं एक तो दूरी बनाकर रखें एवं दूसरा मुंहपट्टी (मास्क) लगाकर रखें, बस जो आगम विरुद्ध कथन करते हैं उनसे दूरी बनाकर रखें, उनकी आगम विरुद्ध बातों को सुने ही नहीं। अपने घर का आगम मत चलाओ।"

विद्या-सूत्र

0 चतुर्थ गुणस्थान में चारित्र का लेशमात्र भी नहीं, वह जो सम्यक्त्वाचरण चारित्र कहा वह चारित्र के पूर्व की भूमिका है। आगम में दो ही प्रकार का चारित्र कहा है- संयमासंयम एवं संयम

0 सम्यग्दर्शन चतुर्थ गुणस्थान में वह दर्शन संबंधी उपशम, क्षय, क्षायोपशमिक है चारित्र संबंधी नहीं, इसे नोट कर लें। अंश रूप भी चारित्र चतुर्थ गुणस्थान में नहीं होता।

0 संयमासंयम को औदयिक मानना आगम का अनादर है, हाँ असंयम भाव को हम औदयिक मान सकते हैं पर संयमासंयम तो औदयिक नहीं क्षायोपशमिक भाव है।

0 हम ही स्वाध्यायशील हैं। ये कहकर जनता को गुमराह कर रहे हैं। स्वतंत्र लोकतंत्र में स्वतंत्र न रहकर स्वच्छंद हो रहे हैं। परिचय दे रहे हैं।

0 भारतीय नीति कभी भी विदेशी नीति से मेल नहीं खा सकती।

- मैं भवितव्यता को स्वीकार नहीं करता, कर्म को स्वीकार करता हूँ। कर्म के योग में जो होगा वही भवितव्य होगा। इसे कोई भी टाल नहीं सकता।
- दूसरी प्रतिमा में 12 व्रत हैं और उसी को प्रतिमा रूप स्वीकार करते हैं। अब काल एवं भाव सम्बन्धी अनियमितता हो नहीं सकती।
- तेल डाले धुंआ न उठे ऐसा संभव नहीं। क्षयोपशम भाव में ऐसी ही चिमनी है जहाँ धुंआ उठना अनिवार्य है। कुछ कालिमा लैम्प पर चिपकी रहती है।
- कुछ कर्मों का उदयाभावी क्षय एवं कुछ का उपशम ये ही क्षायोपशमिक भाव कहलाता है। उदाहरण - लाइट की लाइन घर के ऊपर से ही गयी है पर पहले सम्पर्क लेना होगा। उसमें भी जितने वोल्ट का कनक्शन है उतनी ही मिलेगी पूरी लाइट भीतर तो भयानक स्थिति हो जायेगी। क्षयोपशम भाव में भी कषाय भाव उतना ही रहेगा पूरा नहीं आ सकता, क्योंकि अन्य कषाय का त्याग कर दिया।
- दो तरह की लाइट होती है AC एवं DC = DC द्वेष की तरह है जो दूर फेंकती है जब कि AC = राग की तरह जो चिपका लेती है।
- राग-द्वेष दो करंट हैं इनसे बचें। एक में अनुराग है तो दूसरे में आंखें लाल हो जाती हैं।
- पहले द्वेष से बचो फिर राग से भी क्यों कि यह भी हानिकारक ही है।

- क्षयोपशम भाव के साथ क्षायोपशम चारित्र की व्याप्ति है ही नहीं।
- रत्नत्रय से बंध ही मानना ये समयसार नहीं अपना सार रख रहे हैं। शासन को खरीद रहे हैं। ऐसे में सार नहीं निःसार ही रहेगा।
- दूसरों को समझाने के लिए स्वाध्याय नहीं होता है। धर्मोपदेश भी पहले स्व के लिए है, उससे दूसरा लाभ ले सकता है।
- जैसे चाहे जितना बढ़िया भोजन बनाया, चम्मच उसी में रहती है, पर उसे स्वाद नहीं आता इसी तरह जो दिनभर स्वाध्याय ही करते रहते हैं पर आगम विरुद्ध बोलते हैं इस चम्मच की भाँति कभी स्वाद नहीं ले पायेंगे।
- प्रतिमाओं के प्रत्येक सोपान के साथ सल्लेखना को भी रखा। प्रतिमा छहमाहिने पढ़ाई की तरह है तो सल्लेखना परीक्षा है जो अनिवार्य प्रश्न है।
- सप्लीमेन्ट्री वाला कितना भी अच्छा पेपर लिख ले, उसे मात्र पास ही कहा जायेगा। मोक्षमार्ग में भी किसी भी प्रश्न पत्र में सप्लीमेन्ट्री नहीं लाना है।
- व्रत एवं प्रतिमा में संक्षेप से सदोषता एवं निर्दोषता का अन्तर कह सकते हैं।
- व्रती बन गये पर क्वालिटी (गुणवत्ता) नहीं आ पायी तो कर्मों की उतनी निर्जरा नहीं होगी।

000

प्रतिमा विज्ञान-5

25-12-20 अन्तर जाने सावद्य एवं आरम्भ में मध्याह्न,

- प्रोषधोपवास प्रतिमा में 4 भुक्ति का त्याग का उल्लेख भी है साथ ही उत्तम मध्यम जघन्य के भेद से भी अलग-अलग कथन प्राप्त होता है।
- भाजीपाला = डंडीपाले, कुई मग्गा = हाथ करघा
- सातवीं प्रतिमा मध्य में रखी वह बीच का पड़ाव जैसा है।
- 8वीं में प्रमुख आरम्भ का त्याग कहा। आजिविका-अर्थ उपार्जन नहीं करेगा किन्तु गौण आरम्भ का त्याग नहीं किया। अपना भोजन-पानी आदि सब कर सकता है।
- उत्तराधिकार हेतु जैसे पुत्र को गोद ले सकते हैं, वैसे ही पुत्री को भी गोद ले सकते हैं। वह और अच्छे से घर चला सकती है।
- सावद्य एवं आरम्भ में अन्तर है। 8वीं प्रतिमा में आरम्भ का त्याग है सावद्य का नहीं।
- ब्याज से आय तो महा आरम्भ है।
- परिग्रह त्याग का अर्थ जितना आवश्यक है उतना रखेगा अब बढ़ायेगा नहीं।
- गोहाटी / आसाम की तरफ उसी को बेटी देना अच्छा मानते हैं जिसके घर में हथकरघा चलता हो। कभी भी भूखे नहीं रहेंगी।
- मूलाचार में भी सूत कातने का उल्लेख आया, 2000 वर्ष पूर्व

0 0 0

प्रतिमा विज्ञान-5

25-12-20 दान का पात्र कौन? शुक्रवार

- दान किसे दें एवं दाता कौन तथा कैसे दान दें इन प्रश्नों के उत्तर में समन्तभद्र स्वामी ने गाथा दी -

अपसूनारम्भाणामार्याणाम् दानं दिश्यते....

जो सूना से रहित हो, आरम्भ-परिग्रह से रहित हो वह दान का पात्र है।

- चक्की, खलबट्टा, बुहारी, डेर-बाल्टी एवं चुल्हा ये पांच सूना है।

गृहस्थ के आरम्भ त्याग प्रतिमा में आरम्भ का त्याग है पर इन पांच सूना से सावद्य होता है आरम्भ नहीं।

- आगम में आया कि क्षुल्लक 7-8 घर से भोजन लेकर एक चौके में बैठकर आहार कर सकता है। इसी बीच यदि कोई मुनिराज आ जाये तो अपने ही आहार में से वह मुनि महाराज को दान दे सकता है। जब क्षुल्लक जी आहार दे सकते हैं तो फिर 8-9-10 प्रतिमा वाले तो आहार दे ही सकते हैं। 8-9-10 प्रतिमा वाले तो आहार बना भी सकते हैं।

- निमन्त्रण 10 प्रतिमा तक ही चलता है, आगे नहीं।
- जैसे कोई भी कक्षा हो परीक्षा अनिवार्य होती है, उसी प्रकार संलेखना एक अनिवार्य पेपर है। हाँ इस पेपर में आप खूब नकल कर सकते हो। साधना के क्षेत्र में नकल करें किन्तु अक्ल के साथ।
- वोटिंग का टिकिट लेना ठीक नहीं, टीकीट लेकर वोट करना पड़े तो

कर सकते हैं।

- प्रतिमा लेने का मूल भाव है- मोह को कम करना। नहीं तो वृद्ध बनने पर भी घर-परिवार, नाती-पोते, जमीन-जायदाद से मोह रखते हैं, यह अधोगति का कारण बन जाते हैं।
- साधना में सदैव एक-दूसरे के पूरक बनकर संसार की यात्रा को पूर्ण कर मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं।
- आरम्भ एवं परिग्रह के त्याग के बाद निश्चिंतता अवश्य आ जाती है।
- क्षुल्लक पात्र में आहार करते हैं और कोई पात्र समय पर आ जाता है तो पात्र-दान भी कर सकते हैं।
- पांच सूना में विकृतियाँ आ गयी इन्हें दूर करें। (चूल्हा) की जगह गैस, कुएं की जगह नल, बुहारी की जगह वाइपर, चाकी की जगह मशीन चक्की, खल बट्टा की जगह मिक्सी आदि आ गये इससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। 5 जहर हमारे बीच आ गये हैं। जैसे- मैदा, नमक, शक्कर, पॉलीश चावल एवं विदेशी दूध (जर्सी गाय का दूध) ये 5 सफेद जहर हैं।
- श्रावक विवेक से कार्य करें तभी व्रतों का निरतिचार पालन हो सकेगा।

o o o

26-12-20 मूर्छा करके समुर्छन मत बनो शनिवार

"जिस प्रकार मूर्छा आने पर व्यक्ति को कुछ भी पता नहीं रहता, आलिशान भवन है पर उसे ज्ञात ही नहीं। इसीप्रकार मोह रूपी मूर्छा जिसे आ जाये उसे कुछ भी नहीं सूझता दिखता। जन्म भी मूर्छा में एवं मृत्यु भी मूर्छा में, ऐसे तो वह भी समुर्छन जीव कहलायेगा।"

सूत्र है अनमोल

- नदी, कुँआ, तालाब, बावड़ी आदि में जल निकलता रहता है तो नया आता भी जाता है। संग्रह हो जाये तो सड़ने लगता है, इसी प्रकार धन का संग्रह न हो, उसका सदुपयोग हो।
- पानी बहता रहता है तो स्त्रोत सूखता नहीं, धन भी उपयोग करने से आरक्षण/संरक्षण की चिंता नहीं करनी पड़ती।
- ऐसा सुनते थे पहले धन गाढ़कर रखते थे, कई बार वह खिसककर अन्यत्र चला जाता था, आप धन का ऐसा उपयोग करें कि वह खिसककर वहाँ आ जाये जहाँ आप जाओ।
- द्रव्य का त्याग/दान धार्मिक भाव कहलाता है, द्रव्य का संग्रह मूर्छा का भाव।
- निगोद में था वहाँ मूर्छा घटायी (अल्पारम्भपरिग्रहमानुषस्यायुषः) मनुष्य बना, यहाँ पर आकर मूर्छा कर रहा है तो पुनः निगोद जाने की तैयारी में ही लगा है।
- पहले नीचे का माला (मंजिल) महंगी एवं ऊपर का सस्ता रहता था आज उल्टा हो रहा है ऊपर की मंजिल महंगा और नीचे

का रास्ता मिलता है। एक पक्षी भी ऊपर उड़कर कई माला पर बैठ सकता है/बैठता है।

- जैसे राष्ट्रपति भवन में जो भी आता है 5 वर्ष बाद इसे खाली करके जाना ही होता है उसी प्रकार हर व्यक्ति को यहाँ से जाना ही होता है। 26 माला वाला हो या 100 माला वाला।
- विशुद्धि ऐसा धन है जो अच्छी-अच्छी वस्तुओं का संग्रह करा देगी।
- साधना के माध्यम से अनंतकाल के इस बहाव को बंद करके अविनश्वर पद पा सकते हैं।
- एक राजा भी संक्लेश के साथ एवं गरीब भी विशुद्धि के साथ रह सकता है।
- जैसे स्नान करते ही स्वच्छता-प्रसन्नता प्राप्त होती है, वैसे ही एक गरीब को विशुद्धि होने पर प्रसन्नता-स्वच्छता की प्राप्ति होती है। जैसे पक्षी किसी भी स्थान पर उड़ता चला जाता है, वैसे ही विशुद्धि वाला भी उड़ता चला जाता है।

□□□

27-12-20 रोना धर्म - पर के लिए रविवार

"जैसे फूल है तो सुगन्ध फैलती है, सूर्य आता है तो प्रकाश फैलता है। जब वही फूल कली रूप में है तो सुगन्ध नहीं रहती। शक्ति है पर अभिव्यक्त नहीं हुई। ऐसी भी कलियाँ है जो कभी खिल एवं खुल नहीं सकेगी। बस इसी प्रकार अभव्य है जिसे कभी मुक्ति नहीं मिलेगी, न ही अभव्यसम भव्य होते है, उन्हें भी मुक्ति की उपलब्धि नहीं होती है।"

विधा - सूत्र

o आप सब फूल खिले नहीं पर खिलने वालों के पास बैठे हैं।

o भव्यत्व एवं अभव्यत्व किसी कर्म के उदय में नहीं, पारिणामिक भाव है, वह स्वभाव है।

o जो बालक घर वालों के भेजने से विद्यालय गया किन्तु फेल हो गया। वह बुरा नहीं मानता, वह कहता है - मैं मानुतभी तो।

o भव्य होने के बाद भी वह दया से भीगा रहता है - मैं इसके लिए क्या कर सकता हूँ? "दूसरे के दुःख में दुःखी होना तथा दूसरों के सुख में अपना दुःख भूल जाना ही धर्म है।"

o ऐसे भी अनंत जीव जो भव्य है पर अभव्य समान। कभी मुक्ति के लिए निमित्त मिलेगा ही नहीं।

o सूर्य का प्रकाश, नदी का प्रवाह आदि व्यापक होते हैं, वैसे ही मैं की जगह हम का प्रयोग करने वाला व्यापक होता है।

o "क्षेमम् सर्व प्रजानाम" सभी का हित हो, इसमें हम भी आ गये।

o कर्म सापेक्ष होते हुये भी भाव सापेक्ष कहा, भव्यत्व अभव्यत्व को।

o o o

24-12-20 "मोक्षमार्ग जटील किन्तु कुटीलनहीं" सोमवार

"जिस प्रकार सीधे पाइप में धागा घुसाना आसान है पर मोड़दार (घुमावदार) में कठीन है असम्भव नहीं। युक्ति से उसमें भी आसानी से धागा / सूतली डाल सकते हैं। इसी प्रकार मोक्षमार्ग में होता है, जटील सा लगता है पर जटील जैसा नहीं क्योंकी कुटील नहीं है।"

"जिस प्रकार विद्यार्थी को परीक्षा में प्रश्न-पत्र पूछा जाता है। प्रतिभा सम्पन्न तो उसे समय से पहले कर देता है पर जिसने मात्र अध्ययन किया युक्ति नहीं लगाई वह सोचता है पढ़ा तो सब है, ये कहाँ से आ गया? पाठ्यक्रम से ही प्रश्न-पत्र बनाया है पर सही ढंग से नहीं याद किया। ऐसे ही मोक्षमार्ग जटील तो हो सकता है पर कुटील नहीं।"

"जिस प्रकार गाडी में गियर हैं तो ब्रेक भी होता है, उसी प्रकार मोक्षमार्ग में भी दो प्रकार की चर्या होती है कर्कश एवं मृदु। दोनों में सामंजस्य बनाकर चलना चाहिए।"

विद्या - सूत्र

- मोक्षमार्ग में मनवचनकाय का उपयोग शक्ति के अनुसार (साथ-साथ) युक्ति का भी प्रयोग करना चाहिए।
- मोक्षमार्ग सरल एवं स्वाश्रित है, किन्तु संसार की अपेक्षा वह कुटील जैसा लगता है जटील नहीं।
- किसी भी समस्या से टकराओ नहीं, युक्तिपूर्वक समाधान करें।

o घुमावदार पाइप में भी सुतली डाली जा सकती है, युक्ति से। मुख पर चासनी लगा दो चींटियाँ ही ये काम कर देंगी, (चुहिया की पूंछ पर बांधने से भी कार्य हो सकता है।)

o जल्दी हो तो फिर भी ठीक जल्दबाजी करना ठीक नहीं।

o ज्ञानोपयोग से ही श्रेणी ऐसा नहीं है, दर्शनोपयोग से भी श्रेणी चढ़ते हैं। दूसरा दर्शनोपयोग से चढ़ने वाले की कर्म निर्जरा ह्रस्व (कम) काल में होती है, ये आगम का वाक्य है।

o ज्ञानोपयोग का काल बहुत बड़ा है जब कि दर्शनोपयोग अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा, सबको मिलाकर भी काल थोड़ा है।

o ज्ञान से निर्जरा होती है पर ज्ञानी यदि चंचल हो तो निर्जरा नहीं होती।

o ज्ञान को संयत बनाना परम आवश्यक है, यही जीवन का लक्ष्य हो तभी ज्ञान का होना अच्छा माना जायेगा।

o आगे जाने की बजाय भीतर जाना महत्वपूर्ण होता है। गहराई में जितने जायेंगे उतनी ही शान्ति मिलेगी।

o आलसी नहीं बनो परन्तु जल्दबाजी भी नहीं करना चाहिए।

o मोक्षमार्ग में भागने को महत्त्व नहीं, जागने को महत्त्व दिया है।

o बुन्देलखण्ड में मारे शब्द चलता है, खाने के मारे, इनके मारे अर्थात कारण अर्थ में मारे का प्रयोग होता है।

जितना ज्ञान शान्त उतना ही निर्जरा का लेवल बढ़ेगा।

o अन्तर्मुहूर्त के कई भेद हैं। एक श्वासोच्छ्वास में भी अन्तर्मुहूर्त एवं अन्तर्मुहूर्त में कई श्वासोच्छ्वास होते हैं। ०००

21-12-20 नहीं चाहिए ऐसी कृपा मंगलवार

"चारुदत्त की कहानी सबने सुनी होगी। माता-पिता की एवं संबंधीयों (मामा) की कृपा से चारुदत्त को दासदत्त बनते देर न लगी। करोड़ो दीनार का स्वामी होकर दर-दर भटकने लगा। एक बार व्यसनों में लगने पर ऐसा ही होता है। सब चौपट हो जाता है, चार पथ जिसमें हो चौपट (चौराहे) पे आ जाता है।"

सूत्र-अनमोल

0 निमित्त कुछ नहीं करता ऐसा नहीं करने वालों को और अधिक उकसा देता है।

0 दौलत राम जी ने लिखा "नगरनारि को प्यार यथा कादे में हेमकमल है" अर्थात वेश्या को आपके धन से प्यार है आपसे नहीं; ऐसी ही प्रत्येक संसारी की स्थिति होती है।

0 पुण्य यदि जबरदस्त है तो पापोदय में भी कोई न कोई पुण्य का सहारा मिल ही जाता है।

0 प्रथमानुयोग के इन कथानकों से वैराग्य दृढ़ होता है।

0 घरवालों की कृपा से बचों, जो आपको पाप की ओर ले जा रहे हैं।

0 उपादान यदि कमजोर तो निमित्त का बहुत प्रभाव पड़ता है।

0 वस्त्रों में हिंसा का पुट आ गया, कैसे अहिंसक कहलाओगे। ये सब पुद्गल की परिणति है, ऐसा मानना भी गलत है।

0 शुद्धि-अशुद्धि का विवेक रखना अनिवार्य है। चिकित्सक ऑपरेशन के समय कैसा रहते हैं? पर वे ही जब खून बहने हेतु

अश्व आदि का रक्त देते हैं, न जाने इनका धर्म कहाँ चला जाता है।

- ऐसी प्रेरणा मत करो कि अहिंसा की रेखा से नीचे जीवन चला जाये।
- पुद्गल ही तो है, इससे क्या? ऐसा मानना ठीक नहीं, क्यों कि यह जीवन ही पुद्गलमय बना हुआ है।
- आज कोरोना से भी आगे की बीमारी आ रही है, डॉक्टर कहता है ऐसी औषधी का निर्माण करो कि रोगी मरे नहीं परन्तु ठीक भी न हो।
- पैसा भी तो पुद्गल ही है, इधर का उधर हो रहा है। ये तो चारुदत्त से भी 10 गुना आगे का हो गया।
- वस्त्र में मांस का अंश - प्रवचनसार में आया, यह धोने से तो क्या अग्नि में जला भी दो तो भी मांस के अंश कभी खत्म नहीं होते।
- सबको पुद्गल का ही परिणमन मानकर छोड़ दोगे तो फिर खाने में शुद्धाशुद्धि तो कभी रह ही नहीं पायेगी।
- जो चारित्र को गौण करके मात्र तत्त्व विवेचन करने में लगा है तो वह चारुदत्त से भी आगे का कर रहा है।
- आज नकली मांस का भी निर्माण हो रहा है। कैसा मांस से प्रेम है? संकल्पी हिंसा तो हो ही गयी।
- अब सावधानी ही मात्र समाधान है।
- आपका दिमाग तो ठीक है, नेत्रेन्द्रिय भी काम कर रही है परन्तु श्रोतेन्द्रिय को ठीक करो। कान खेंचो तभी वह ध्वनि कानों को सुनायी देगी। ००8

30-12-20 असम्बद्ध प्रलाप से बचो बुधवार

एक लड़का सुनता तो है पर मानता नहीं बल्कि दूसरों को भी आपकी बात गलत स्वरूप में प्रस्तुत करता है। दूसरा बड़ा लड़का आपकी बात सुनता भी है, मानता भी है एवं ज्यों का त्यों अक्षरशः दूसरों को भी बताता है। आप किससे प्रेम करेंगे? स्वभाविक है बड़े लड़के को ही चाहेंगे। व्याख्या कभी भी घर की नहीं होती, इसे सदैव ध्यान रखें। अन्यथा वह असम्बद्ध प्रलाप होगा। तीन पुरुषार्थ से रहित कथा करना असम्बद्ध प्रलाप कहलाता है।

विद्या सूत्र

- राजवार्तिक में आचार्य अकलंकदेव ने मोक्षमार्ग में चलने वालो के लिए बहुत ही मार्मिक शब्द दिया-असम्बद्ध प्रलाप।
- मोक्ष में किसी को विसंवाद नहीं किन्तु मोक्षमार्ग में विसंवाद आ जाते हैं। विसंवाद से कभी भी मोक्ष मिलने वाला नहीं है।
- द्विसंधान कवि- एक ओर से पढ़े तो रामायण का अर्थ, दूसरी ओर से महाभारत का अर्थ निकलेगा। ऐसे भी भारत में कवि हुये हैं।
- पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) का विवेचन केवल भारत में ही मिलता है, भारत से बाहर नहीं।
- जैसे बाण निकल जाने पर पुनः लौटता नहीं वैसे ही वाणी भी एक बार बोल देने पर पुनः लौटती नहीं।
- खोजो एवं खोदो। जहां है वहीं पर खोदो तभी पानी मिलेगा।

- जैसे नक्षत्र/समय चले जाने पर बीज बोने से क्या लाभ? वैसे ही द्वारिका जलने लगी अब कुछ नहीं केवल दो बचे थे, शेष स्वर्णनगरी खाक (राख) हो गयी। पानी ने भी पेट्रोल का काम किया।
- पागल की आँखों में पानी नहीं होता क्यों कि संवेदन नहीं होता। संवेदन होने पर ही हँसना-रोना-चिन्तन आदि होता है।
- स्वाध्यायमात्र से कुछ नहीं कदम बढ़ाना जरूरी है तब चिंतन भी सही दिशा में हो।
- भगवान बनने के लिए पहले भगवानदास (भगवान का दास) बनना भी अनिवार्य है, नहीं तो कभी भी भगवान बन नहीं सकते।
- भगवान एवं भक्त दो हैं ही नहीं। दोनों एक हैं।
- "श्रमणस्य भावो श्रामण्यम्" श्रामण्य के बिना मोक्षमार्ग नहीं। प्रवचनसार में कितनी ही बार लिखा है किन्तु ध्यान जाये तब तो...।
- असम्बद्ध-प्रलाप से बचेंगे तभी मोक्षमार्ग की भूमिका बन सकती है।
- कैसा जमाना आ गया? माल नहीं, पैसा नहीं, कोई रिकार्ड नहीं. फिर भी लाखों का व्यापार हो रहा है-वायदा व्यापार शुद्ध सट्टा है यह व्यापार नहीं।
- रावण माला फेरते हुये भी उद्देश्य गलत होने से पाप को ही बाँधा, राम वन में भटकते हुये भी उद्देश्य सही होने से सबके मुखों पर बस गये। हर व्यक्ति राम बनना चाहता है। राम पर पचासों नाम पर रावण कोई भी नाम नहीं लेना चाहता।

ooo

31-12-20 "वर्ष का ही नहीं - संसार का भी अंत हो" शुक्रवार

"जिस प्रकार स्वर्ण बनाने का रसायन सिद्ध करने के लिए जो नियमावली है उसमें शत-प्रतिशत पालन होना चाहिए, साथ ही तक़दीर (भाग्य) में भी होना चाहिए उसी प्रकार साधना के क्षेत्र में भी घटित होता है, जो भी संहिता है उनका पालन करेंगे एवं उपादान में योग्यता होगी तो अवश्य ही सफलता मिलती है।"

विद्या-वाणी

- हाथ में ही नहीं, माथे पर भी लकीर होती है फिर फकीर क्यों बनना।
- चलने से मंजील मिलती है - बातों से नहीं।
- आज वर्ष का अन्तिम दिन है, ऐसी ललाट में लकीरें हो ताकि संसार का भी अन्त हम कर सकें
- नींबू को लोहे के यंत्र (चाकु) से बनाने पर रसायन की सिद्धि नहीं हुयी अतः नींबू को लोहे से बचायें।
- संसारी प्राणी सब कुछ छोड़ने को तैयार है, परन्तु कषाय नहीं छोड़ पाता।
- गोद का बच्चा भी अभिमान करता है - हठ करता है, क्यों की उसे भी संस्कार ऐसे ही मिले हैं।
- बनिया का बेटा गर्भ से ही संस्कार लेकर आता है, बाद में किसे दबाना यहाँ आकर सीख जाता है अर्थात दूध में पानी नहीं, पानी में दूध मिलाने लग जाता है।
- भाग्य भी साथ तब देता है जब कषाय का विमोचन होता है।

0 सही साधक वही है जो पुरा मिलने पर भी उस ओर दृष्टि नहीं ले जाता। वह जानता है चाहने से कभी नहीं मिलता। उपादान में योग्यता होना भी परम आवश्यक है।

0 सब मिलने पर भी भोग पायें जरूरी नहीं। बड़े-बड़े सेठ-साहुकार सब है पर खा नहीं सकते, हाँ खाने के नाम पर गम खा सकते है अथवा सबसे महंगी दवाई खा सकते है।

0 कुछ लोगो को दवाई ही नहीं मिलती, इनको समय पर महंगी दवाई उपलब्ध ही रहती है।

0 डाक्टर भी ऐसी दवाई देता है - रोगी मरे भी नहीं एवं ठीक भी न हो, पैसे निकालते जाता है।

0 आज आयुर्वेद में नाड़ी परीक्षण से बिनायंत्रों की सहायता से रोग का परिक्षण एवं इलाज हो रहा है। अब भारत पुनः लौट रहा है।

000

1-1-2021। "2021 में 21 काम करना है। प्रनहीं" शुक्रवार

- तारीख नहीं तिथी याद रखें। भारतीय संस्कृति में जो भी कार्य होते हैं, वे तिथी अनुसार होते है, तारीख तो विदेशी संस्कृति में आती है।
- ज्योतिष शास्त्र, कुण्डली, ग्रहण, पंचांग, अधिकमास, मल मास ये सभी "सन्" में नहीं संवत् में मिलेंगे।
- इन सबसे संदेह नहीं किन्तु परिणामों में अवश्य तब्दीली आती है।
- किसी भी तीर्थंकर अथवा, राम, हनुमान, गणेश जी आदि की जयन्ती अथवा अन्य शुभ तिथी सन् से नहीं तिथी से ही मनायी जाती है।
- "वर्तना परिणामक्रियापरत्वापरत्वच कालस्य" ऐसा तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वामी महाराज ने काल द्रव्य के उपकार बताये।
- काल द्रव्य का अनुग्रह प्रत्येक द्रव्य पर है। उसी से हम द्रव्य में होने वाले परिणमन (परिवर्तन) को पहचान सकते है।
- क्षेत्र एवं काल दोनों का ही अंत नहीं, इसलिए काल का उपयोग करना चाहो तो कर लो।
- कोई भी नया-पुराना अथवा छोटा-बड़ा है ही नहीं फिर अभिमान क्यों करते हो।
- जब आकाश का अंत नहीं तो काल द्रव्य का भी अंत नहीं है।
- अनंत सर्वज्ञ भी मिलकर काल के अनंत को नहीं ढूंढ सके।

o जीव का कभी श्रृंगार नहीं होता, श्रृंगार रूपी का होता है। जीव अरूपी है मात्र ज्ञाता-दृष्टा होना ही उसका वास्तविक श्रृंगार है।

o एक-एक समय भविष्य के निकल भूतकाल हो रहे हैं, अब सन् को ही देख लो। आप तो रात के 12 बजे से तारीख मानते हो 9 बज गये 9 घण्टे इस सन् के कम हो गये ऐसे ही 2021 चला जायेगा। कुछ करना है तो कर लो।

o ऐसा काम करो कि 19 नहीं 21 बन जाओ। हम भी ऐसा ही काम कर रहे हैं।

o मुझे 10 वर्ष लगे तब जाकर मैं अपने आपको बूढ़ा समझने लगा। दांत टूट जाते हैं तब बूढ़ा मान लेते हैं वास्तव में तो आत्म तत्त्व तो अजर-अमर-अविनश्वर है।

000

"भूख घटाना नहीं"

"जब कोई व्यक्ति बीमार पड़ जाता है तो उसे औषध देकर निरोग किया जाता है फिर जब उसे भूख लगती है तो केवल मूंग की दाल का पानी दिया जाता है ताकि भूख और खुलकर लगे। धीरे-धीरे उसकी भूख बढ़ती जाती है क्योंकि एक साथ उसे भारी भोजन नहीं दिया।

ऐसी प्रकार आचार्यों ने कहा-

पात्र देखकर प्रवचन करना चाहिए अथवा शास्त्र की बात रखनी चाहिए। पहले उसकी जिज्ञासा को बढ़ाना चाहिए नहीं तो मंदाग्नि हो जायेगी तो वह कुछ भी उपदेश ग्रहण नहीं कर पायेगा।"

2-1-2021 कैसे होगी इष्ट की उपलब्धि शनिवार

"एक जंगल में आग लगी है। उस जंगल में एक अंधा व्यक्ति है, बाहर निकलने का उपाय सोच रहा है लेकिन निकल नहीं पा रहा है वहीं एक दूसरा व्यक्ति भी उसी जंगल में जो देख रहा है कि आग की लपटें उठ रही हैं पर वह भी बाहर नहीं जा सकता क्यों कि पांवों से विकलांग है। उसने अन्धे व्यक्ति को इशारा किया इधर आ जाओ एवं उसके कंधों पर बैठ गया वह रास्ता बताता गया अंधा चलता गया दोनों सुरक्षित बाहर निकल गये। मतलब दर्शन एवं ज्ञान की सुरक्षा तभी होगी जब आचरण में भी लायें। आचरण तभी जब दर्शन रूपी आँखें होगी।"

विद्या-सूत्र

- इष्ट की उपलब्धि मात्र ज्ञान से नहीं हो सकती है।
- दर्शन ज्ञान का पक्ष होता है एवं चरण आचरण का पक्ष लेता है दोनों नहीं मिलते तब तक पार हो नहीं सकते।
- एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को नीचे दिखाने में लगा है। अपनी शक्ति का परिचय देकर भय उत्पन्न करा रहे हैं। स्पर्धा की नहीं कि लक्ष्य से विमुख हो गये।
- भारतीय संस्कृति में ज्ञान के साथ चारित्र सदैव रहता है, तभी तो चरणों की पूजा होती है।
- दर्शन एवं आचरण की सावधानी यदि भूल जाओगे तो काम होने वाला नहीं।

०००

3-1-21 टिकिट कौनसा है? रविवार

"जिस प्रकार जिस गाड़ी का टिकिट खरीदते हैं, वह टिकिट उसी गाड़ी में मान्य होता है अर्थात आपको उसी गाड़ी में बैठना होता है। उसी प्रकार एक बार आयु का बंध कर लिया अब उस गति में जाना ही है। राजा श्रेणिक जिन्होंने पहले नरकायु का बंध कर लिया अब कितनी भी विशुद्धि क्यों न हो जाये, तीर्थंकर प्रकृति का बंध शुरु हो गया, क्षायिक सम्यग्दर्शन हो गया सब है पर नरक का टिकिट खरीदा है तो जाना ही होगा। हाँ, 33 सागर की बजाय प्रथम नरक में वो भी 84000 वर्ष के लिए, इतना तो हो सकता है पर आयु कर्म बदल जावे ये असंभव है।"

विद्या - वाणी

- जैसे सूर्य के प्रताप को घने बादल रोक तो सकते हैं, पूर्ण नष्ट नहीं कर सकते वैसे ही एक बार आयुबंध किया है तो पूर्ण क्षय को प्राप्त नहीं होगी, भोगना ही पड़ेगा।
- क्षायिक सम्यग्दृष्टि, तीर्थंकर प्रकृति का बंध चल रहा है फिर भी आत्महत्या के भाव हो गये क्योंकि नरकायु का पहले बंध हो गया था अतः अन्तर्मुहूर्त पूर्व तीर्थंकर प्रकृति का बंध रुक जाता है और मिथ्यात्व में आना ही होता है, तब इसी तरह आत्मघात के परिणाम हो जाते हैं।
- पाप के उदय में द्विपायन मुनि की तरह सब खाक (राख) हो गया।

- सोच-विचारकर अपनी चेष्टाओं को संक्षिप्त (समेटना) करने का पुरुषार्थ करो।
- कर्म के तीव्रोदय में ऐसे ही परिणाम होते हैं, बुद्धि काम नहीं करती, पुरुषार्थ के भाव भी नहीं होते अतः जब कर्म का मन्दोदय हो तब अपने परिणामों को सुधारें, अरिहन्त-सिद्ध अथवा राम का नाम जपें।
- ये भारत भूमि है अच्छे कार्य करके स्वर्ग का टिकिट भी मिलता है तो बुरे कार्य करके नरक का द्वार भी खुला रहता है।
- टिकिट जैसा लिया वैसी ही गाड़ी में बैठना पड़ेगा। हमारे-तुम्हारे हाथ में कुछ नहीं, है तो मात्र परिणाम, अपने भावों पर निगरानी रखें।
- एयर कंडीशन में भी पसीना आ रहा है क्यों ज्वर भीतर में है। भीतर के ज्वर को उतारे बिना A.C. भी काम नहीं करता, इसी तरह भीतरी परिणामों को सुधारे बिना बाहरी संयोगों को नहीं बदल सकते।
- कालानुकूल एवं कालों के अनुकूल दोनों ही कर्म-सिद्धान्त के सामने गौण हैं।
- मांग मत करना, बच जाओगे-फायदे में रहोगे। यदि मांग करोगे तो निदान कहलायेगा, कूवत अनुसार ही मिलेगा, घटा-बढ़त भी नहीं हो सकती।
- क्रिकेट में गेंद से लगाते ही रन लेना शुरु कर देता है, सजग रहता है, इससे कई अधिक सजगता मोक्षमार्ग में चाहिए तभी आगे बढ़ेंगे।

०००

५-१-२। Seemear कहते हैं सिनियर सोमवार

"जिस प्रकार नये-नये घड़े में पानी जल्दी छनता नहीं, वैसे ही नये-नये दिमाग में धर्म की बात जल्दी घुसती नहीं। हर बात में नया-नया ठीक नहीं, पुराना होना आवश्यक है क्यों कि पुराना स्वीकार कर लेता है तो नये के लिए अवसर भी देता है।"

"जिस प्रकार से एक दुकानदार एक दिन में हजारों मीटर कपड़ा नापता है किन्तु हजार को कभी भी एक साथ नापा नहीं जा सकता उसी प्रकार केवली भगवान ने बहुत कुछ कहा किन्तु पुरा कह नहीं सकते। वे अनंत को जानते है पर उसे कह नहीं सकते, एक क्या अनंत केवली मिलकर भी उसका कथन करने में सक्षम नहीं है, फिर मैंने जो कहा वही ठीक है ऐसा अभिमान क्यों कर रहे हो?"

अनमोल-वाणी

- अनुभव, निरिक्षण, चिन्तन आदि करें तभी नया पुराना हो पाता है।
- हम अपने उपयोग रुपी कपड़े को धोना ही नहीं चाहते, बस ये नया ही बना रहे, ऐसा सोचना गलत है।
- पहले सोचो फिर बोलो। उतावली करने वाला सोचता नहीं, सोचनेवाला कभी उतावली नहीं करता। देखा-देखी भी नहीं करता।
- भगवान के दर्शन बिल्कुल सामने खड़े होकर न करें, आजु-बाजु से करना चाहिए।

- हमारा-तुम्हारा ज्ञान छद्मस्थ है, परोक्ष ज्ञान है फिर परोक्ष ज्ञान से प्रत्यक्ष की तुलना क्यों कर रहे हैं?
- भगवान ने पूरा देखा - पूरा कहा नहीं फिर जिनवाणी में पढ़कर अपना ज्ञान क्यों लगा रहे हो?
- कथन हमेशा सीमित ही होता है। भगवान के ज्ञान पर कोई संदेह नहीं किन्तु उसके इतने पहलु / बिन्दु है जो कि कभी समाप्त ही नहीं हो सकते।
- नाना जीवा नाना कम्मा.... कुन्दकुन्द आचार्य ने कहा नाना तरह के जीव है, नाना उनके कर्म है और अनेक भावों की उपलब्धि होती रहती है इसलिए अपने एवं पराये के बीच संघर्ष नहीं होना चाहिए।
- मैं जो कह रहा हूँ, वही सही है यह धारणा ही गलत है, आपके पूर्वजों ने जो कहा उसे पहले देखें। एक से एक सिनियर हैं।
- अंग्रेजी की बड़ाई तो नहीं कर रहा पर सिनियर शब्द कह रहा है See near। अपने पास देखें। आज सब दूर ही देख रहे हैं। ~~जो~~
जो इन्द्रियों का दमन करेगा वही सिनियर है।
- हरेक (प्रत्येक) व्यक्ति अपनी सोच दूसरे के दिमाग में घुसाना चाहता है, अफसोस की बात यही है।
- आचार्य कुन्दकुन्द के रहस्य को समझना सबके बस की बात नहीं। अपने-पराये में विसंवाद न हो। जहाँ विसंवाद की स्थिति तो मौन रहो। उनके रहस्यों को समझना बड़ी टेढ़ी खीर है।

o कुन्दकुन्द का नाम लेने वाले तो बहुत हैं परन्तु काम करने वालों पर संदेह करते हैं। ये ही तो पंचमकाल, हुण्डाअवसर्पणी काल है, यहां अनहोनी ही होगी।

o कुन्दकुन्द आचार्य की बात हम शिरोधार्य करेंगे, आप जो कह रहे हैं उसे नहीं।

o ममता को छोड़ेंगे नहीं तब तक समता आयेगी नहीं।

o मैं तो समझाकर ही रहूँगा, ऐसा अभिमान मत पालो एवं न समझने पर दयनीय भी मत बनो।

o जब भगवान नहीं समझा सके तो आपकी प्रतिज्ञा ही गलत है।

o सर्वज्ञ ने पुरा जान लिया। आकाश का छोर नहीं है क्योंकि "आकाशस्यानंता" अंत देखा नहीं फिर भी अनंत देखा कहा जाता है अर्थात् मनःपर्यय ज्ञान से भी अनंत जान लिया।

o जिस प्रकार पानी में लाठिया से टटोल-टटोलकर एक-एक कदम आगे बढाते हो वैसे ही धीरे-धीरे चलो, ज्यादा आगे मत बढ़ो अन्यथा गड्ढे में गिर जायेंगे।

o आत्मा के भाव नापने का पुरुषार्थ करो। श्वांस के साथ

o बस परिणामों पर दृष्टि हो।

o विवाद न हो, संवाद रखो। संवाद तभी जब समता होगी। पुरुषार्थ की आवश्यकता है समता बनाये रखने के लिये।

[मुख को मोड़ लो अन्यथा मन मोड़ दिया जायेगा] o o o

5-1-21 सब कुछ आकाशनगर सम मंगलवार

"जिस प्रकार आकाश में बादलों का जो चित्र होता है, वह कुछ ही समय में परिवर्तित हो जाता है क्षणिक होता है, उसी प्रकार से यह जीवन क्षणिक है, कब विनष्ट जावे पता नहीं इसीलिए आकाश नगर सम ऐसी उपमा इस जीवन को दी।"

सूत्र - अनमोल

- सूर्य तो दिखता है परन्तु सूर्य की गति नहीं दिखती इतना धीरे-धीरे चलकर वह अस्ताचल की ओर चला जाता है।
- जीवन का सूर्य ढले उससे पूर्व किसान की भांति कुछ काम कर लो।
- उद्वेग से अनर्थ घटित होता है तो संवेग भाव से जो अनर्थ होने वाला हो वह भी टल जाता है।
- संवेग भाव दुर्गति से बचा सद्गति की ओर ले जाते हैं।
- जैसे गोद में खेलने वाला बालक भी माँ के भावों को समझता है। चुटकी बजाने पर दूध पीने लगता है उसी तरह हमें भी अतीत की घटनाओं से पाठ लेना चाहिए।
- समय पर वितरण करना आवश्यक है। यदि वितरण नहीं तो तरण कैसे होगा? अमेरीका में जो भुखमरी की समस्या आयी उसका मुख्य कारण वितरण का अभाव ही है।
- प्रतिव्यक्ति 36 करोड़ की अर्थव्यवस्था वाले राष्ट्र में करोड़ो लोग एक-एक ग्रास को तरस रहे हैं क्योंकि तिजोरियों में भर रखा है, कालाबाजारी कर रहे हैं। दिन ढलने से पूर्व परिवर्तन आवश्यक है।

० ० ०

6-1-21 लोकतंत्र में लोभतंत्र नहीं बुधवार

- अनादि से शरीर को ढो रहे हैं इसके विषय में सोचो। इसको उतारने का जो उपाय करता है वह जहाँ रहता है, वहीं संतुष्ट होकर रहता है।
- आप द्रव्य चढ़ाते हैं तो ले जा कितने गुने रहे हैं, यह भी तो ध्यान रखो। चक्रवर्ती भी सब कुछ न्यौछावर कर देता है वीतराग प्रभु के सामने क्यों कि ये सब नश्वर है, यहाँ जो मिलेगा वही अविनश्वर है। उस अविनश्वर को कोई चुरा नहीं सकता।
- विश्व का सबसे बड़ा राष्ट्र भारत है एवं सबसे धनाढ्य राष्ट्र अमेरिका है। जहाँ सोने के बिस्किट नहीं ईंटे हैं। आज स्थिति यह है कि करोड़ो लोग दाने-दाने के लिए तरस रहे हैं। कारण पूंजीपतियों द्वारा पूंजी को दबाकर बैठ जाना।
- यहाँ जड़ अर्थात भूमि का संग्रह नहीं लोक अर्थात जन का संग्रह है। लोकतंत्र में लोभतंत्र नहीं आना चाहिए।
- जो सज्जनता को धर्म रूप में अपना लेता है उसकी सुगन्धी चारों ओर फैलती है, वह सुगन्धी कभी लौटती नहीं।
- कोरोना की औषध (वेक्सीन) जो विदेशों ने बनायी वह महगी भी एवं अशुद्ध, मांसाहार से युक्त, साइड इफेक्ट वाली बनायी। भारत ने पूरे विश्व को बता दिया मात्र 200 रु. में शुद्ध, शाकाहारी, रोग निवारक, आरोग्यवर्धक, गुणवत्ता से भरी औषध का निर्माण किया।

○ विदेशी दवा मरती है, भारतीय दवा (आयुर्वेद) कभी मरती नहीं अर्थात् मृत्युंजय औषध है।

○ विदेशी दवा के अनेक दुष्परिणाम देखते हैं, भारत में रोग को जड़ से खत्म किया जाता है।

○ भारतीय औषध अहिंसक है, विदेश मात्र हिंसा पर ही विश्वास कर हिंसक औषध बनाता है।

○ अब कोरोना की औषध निश्चिंत एवं निःसंदिग्ध होकर ले रहे हैं।

○ शुद्ध द्रव्य, शुद्ध भावों से चढ़ाओगे तभी तो अविनश्वर पद पाओगे।

○ यहाँ तो रत्नत्रय का खजाना लुट रहा है, लूट सको तो लूटकर ले जाओ।

○ भोजन तैयार है आप बैठ जाओ हम खिला देंगे, परन्तु शुद्ध को अशुद्ध मत बनाओ। भावों को निर्मल रखकर ग्रहण करें।

○ ○ ○

7-1-21 वास्तविक स्वाद लेना सीखो गुरुवार

"जिस प्रकार से गूंगा व्यक्ति गुड़ का स्वाद लेता है, अनुभव करता है, आनंद भी उठाता है, किन्तु दूसरे को बता नहीं सकता इसी तरह मोक्षमार्ग में जो शुद्धोपयोगी मुनिराज हैं वे आत्मा के वास्तविक आनन्द को लूटते हैं, पर वह अनुभव ही किया जा सकता है, बताया नहीं जा सकता।"

अनमोल सूत्र

- पंगत में बैठने के बाद जिसे भूख लगी है वह तो तुरन्त अपनी थाली पर ध्यान रख खाना प्रारम्भ कर देता है किन्तु जिसे भूख नहीं वह इधर-उधर देखता है अथवा बातें बनाता है।
- सब कुछ भूलेंगे तभी वास्तविक आनंद आयेगा।
- दाल के साथ नमक मिलाकर खाने की आदत पड़ गयी, ऐसे में न ही दाल का वास्तविक स्वाद ले रहे हो, और न ही नमक का स्वाद ले पा रहे हैं। इसलिए हमारा आपके साथ संबंध/तालमेल ही नहीं।
- मोक्षमार्ग भूलने के लिए होता है, याद करने के लिए नहीं।
- बाहरी पकवानों पर ही नजर फिसल रही है, भीतर जो असली मिठाई है उसका आनंद कैसे आयेगा?
- पंचेन्द्रिय के विषय में रस है ही नहीं तो रस कैसे आयेगा।
- हम बहुत पीछे रह गये, ऐसा मत मानो। हमारे ~~पहले~~ जैसे अनन्त सिद्ध मोक्ष चले गये वैसे ही आगे भी अनंत तीर्थंकर होंगे, चिन्ता मत करो हम बीच में हैं।

○○○

8-1-21 कर्म कैसे करें शुक्रवार

"जिस प्रकार असह्य दाह चन्दन के लेप से ठीक हो जाती है पर कौनसा चन्दन, लाल नहीं सफेद चन्दन हो। इसी तरह कर्म से अनुकूलता मिलती है, कौनसे कर्म से? पुण्य कर्म से, पाप कर्म से तो प्रतिकूलता, दुःख, असाता ही पल्ले में आयेगी।"

अनमोल-सूत्र

- जब समझाया उस समय यदि सचेत रहकर समझ गये तो पुण्य कर्म बंध से साथी-सनाथी आदि सब जैसा चाहते हैं वैसे मिल सकते हैं।
- कर्म ही किया हुआ लाल को सफेद तथा सफेद को लाल चन्दन बना देता है। तत्त्वज्ञान से लाल को सफेद बनाने का पुरुषार्थ करो।
- कर्मोदय में अज्ञानी कर्मबंध कर लेता है उसी कर्म के उदय में तत्त्वज्ञानी कर्मों की निर्जरा कर लेता है।
- मन का काम मत करो मन से काम लो तभी मोक्ष मिलेगा।
- मन का काम करने पर हमारा आशीर्वाद भी फीका पड़ जाता है, जैसे- अनुपात के अभाव में दूध मीठा नहीं हो पाता।
- रोग से चिपकना नहीं होता किन्तु ज्ञान से याद करके हम वस्तु (पर पदार्थ) से चिपक जाते हैं। यह चिपकना ही कर्मों का बंध करने वाला है। राग के अभाव में ज्ञानी कर्मरज से नहीं चिपकता।
- स्वाध्याय (ग्रन्थ) का मूल्य सदुपयोग है। साता में कारण है। दुनिया की बातों के लिए स्वाध्याय तो वह दुरुपयोग है।

९-१-२१ शिक्षा देती प्रकृति शनिवार

"मोक्षमार्ग में उपादान एवं निमित्त दोनों की अपनी - अपनी भूमिका होती है, लेकिन मुख्यता उपादान की अनिवार्य है। जिस प्रकार छोटा बालक जब चलना सीखता है एक लकड़ी की गाड़ी का सहारा दिया जाता है वह चल पड़ता है किन्तु यदि पाँव नहीं उठायेगा तो गाड़ी होने पर भी चल नहीं सकता, बड़ा होने पर भी नहीं चल पायेगा। उपादान में ही कमी है।"

• विद्या - सूत्र

o अकृत्रिम की ओर दृष्टि ले जाओ, कृत्रिम का अहंकार (अभिमान) चूर - चूर हो जायेगा।

o नदी, पहाड़, वृक्ष, झरने किसने बनाये, किसी ने नहीं बस प्रकृति को देखोगे तो स्वभाव की ओर दृष्टि ले जा पाओगे।

o निमित्त से दृष्टि हटाकर उपादान की ओर दृष्टि ले जाने का पुरुषार्थ करो।

o चिकित्सा तभी तक कराते हो जब तक सुधार के आसार हैं, चिकित्सक के हाथ खड़े कर देने पर आप पैसा नहीं लगाते क्यों कि आपको उपादान का महत्व समझ में आ गया।

o मोह है तभी तक अशान्ति है। अग्नि (ईंधन) हटा दिया अपने आप जो खदबद - खदबद हो रही थी सब शान्त हो गयी।

○ भीतरी उपादान के माध्यम से बाहरी निमित्तों में भी परिवर्तन लाया जा सकता है, इसलिये आचार्यों ने पुरुषार्थ करने को कहा।

○ शुरुआत में जुगाड़ (बच्चे की गाड़ी) की आवश्यकता है, बाद में तो वह मात्र दिमाग की कसरत है।

○ निमित्तों के अम्बार भी लगा दो तो भी उपादान में योग्यता के अभाव में कार्य नहीं होता। जैसे - यदि आँख में देखने की बिल्कुल भी शक्ति नहीं तो एक नहीं चार-चार चश्मा भी लगा दो, देख नहीं सकते।

○ आज भी आदिवासी लोगों को कुछ भी सुविधा की आवश्यकता नहीं, वे जंगल की वनस्पति आदि से ही अपने को स्वस्थ कर लेते हैं। आपके पास पैसा है अतः औषधी को ही खुराक (भोजन) बना लिये। आजीवन प्रतिदिन दवाई लेना अनिवार्य बना लिया।

○ यहाँ 2% लोगों को चश्मा नहीं मतलब 98% की दृष्टि ठीक नहीं, आदिवासी में 2% को भी चश्मा नहीं मतलब सभी की दृष्टि अच्छी है, प्रकृति के आश्रित जो रहते हैं।

○ कौनसी उम्र में अध्ययन कराते हैं बच्चों को उसीप्रकार यह भी ज्ञात हो कि कौनसी उम्र में औषधोपचार करते हैं। जब शरीर वृद्धिंगत है तो दवाई से ही ठीक हो ऐसा मत करो, उस समय उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाओ।

○ उपादान से लगाव हमेशा बना रहे, थोड़ा बहुत निमित्त से भी।

○○○

10-1-21 "आओ निर्भिक बनें" रविवार

"जिस प्रकार सूर्य को जब राहु ग्रास बना लेता है तो उसे खग्रास (ग्रहण) कहते हैं इसी प्रकार जीवन में जब तक मोह-भय रूपी राहु रहेगा। ग्रहण ही लगा रहेगा। अपने भीतर की शक्ति प्रकाशमान् नहीं हो पायेगी।"

"एक शेर के सामने भी जो व्यक्ति भयभीत नहीं होता, शेर भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ता बस आपके उसको मारने के भाव नहीं होना चाहिए। शेर को भी वश में करने की ताकत हमारे भीतर है। पहचानो अपने आपको।"

विद्या - सूत्र

- सब तिर्यंचों को बांधा जा सकता है पर शेर को कभी भी बांधा नहीं जाता, न ही गले में पट्टा डाला जाता है।
- शस्त्रों से नहीं शास्त्रों के सूत्र से सिंह को भी पछाड़ने की कुवत हरेक व्यक्ति के भीतर है, फिर डर किसका?
- विषमता में भी साम्यता आ सकती है निर्भिक होने पर।
- जब तक जीवन को विनश्वर समझोगे, चार संज्ञाओं से जब तक ग्रसित रहोगे तब तक अविनश्वर की ओर दृष्टि ले जाना ही असम्भव है।
- मृत्यु की बात सत्य होते हुए भी उसको स्वीकारने से डरते रहते हैं मतलब सत्य से डरते हैं जो सत्य से डरता है वह कभी भी असत्य को छोड़ नहीं सकता।
- चार संज्ञा को वश कर लिया तो आपको जीतने वाला कोई नहीं, यदि चार संज्ञा है तो किले के भीतर भी कंपकंपी होती रहेगी।

- 100 साल की कंपकंपी वाली जिन्दगी से तो 3 दिन की दहाड़ते हुये की जिंदगी बहुत अच्छी है।
- गले में पट्टा मत बंधवाओ शेर की तरह, भले ही वह सोने का भी क्यों न हो?
- आज जड़ एवं चेतन के बीच संक्रमण हो गया है।
- ज्ञान में कंपीकंपी होती है जब की आस्था स्थिर रहती है, उसी आस्था को मजबूत बनाने का पुरुषार्थ सदैव करते रहना चाहिए।
- तीन लोक हिल जाये किन्तु सम्यग्दृष्टि कभी हिलता नहीं।
- शेर होकर पिंजड़े में रहना, ये अच्छा नहीं है। मनुष्य के पास इतना पॉवर (शक्ति) है कि वह शेर को भी पिंजरे में बन्द रख सकता है।

o o o

11-1-21 भारत में जो है वह कहीं नहीं सोमवार

"जीव और पुद्गल नाचे यामें कर्म उपाधी हैं, ये पंक्तियाँ बारह भावना में पढ़ते हैं। चिंतन करते हैं तो पाते हैं कि बिल्कुल सही कहा गया है, जैसे अभी अर्घ्य चढ़ा रहे थे तो भक्ति में वृद्ध दादा जी भी दोनों हाथ ऊपर कर नृत्य करने लग गये। नृत्य की उम्र (अवस्था) नहीं होती। सर्दी में भी गर्मी आ जाती है। ये सब भक्ति से होता है किन्तु इतना अवश्य समझ लो कि नाच कौन रहा है? और नचा कौन रहा है?"

(अनमोल-वाक्य)

- पुद्गल सदैव जीव के गुणों से बहिर्भूत है किन्तु पुद्गल को अनेक कर्म दिखाने का श्रेय जाता है।
- जो चीज भारत में है वह विश्व में कहीं नहीं।
- सम्पदा कभी सम्पदा को नहीं भोगती, भोक्ता भोगता है। मूल्य भोक्ता का है।
- किसानियत का मूल्य किसान के कारण से है। धरती का भी तभी मूल्य है।
- मूल्यांकन करने वाले का मूल्य कोई भी नहीं समझता, इसीलिये परतन्त्र बने हुये हैं।
- चिंतन करो चिन्ता अपने आप दूर हो जायेगी।
- भोक्ता का मूल्य है भोग्य (वस्तु) का नहीं।
- कौटिल्य का अर्थ शास्त्र पढ़ लो - भारत के भीतर क्या-क्या है मालूम पड़ जायेगा किन्तु आप विदेशी साहित्य पढ़ते हो इसीलिए अपने भीतर की शक्ति को ही भूला बैठे हो।

- आज का गणित मात्र गिनने में ही लगा है क्योंकि लौकिक गणित है जब कि अलौकिक गणित में संख्यात के बाद असंख्यात फिर अनंत। अपार है वह अलौकिक गणित।
- सही-सही मूल्य निकालो अन्यथा मूल्य का मूल्य ही समाप्त हो जायेगा। मूल्यांकन करने वाले का मूल्य है। "मूल्यस्य भावो मूल्यम्" मूल-जड़-आधार को भूलो मत।
- विदेशी अर्थशास्त्र में नहीं यहाँ के अर्थशास्त्र में ही ये सब बातें मिलेगी।
- अज्ञान से तरना (पार होना) चाहते हो तो गाँवों से ही पार हो सकते हो शहरों में तो अज्ञान की पराकाष्ठा हो रही है, ये भी एक पागलपन ही है। अब पुनः गांवों की ओर लौट रहे हैं।
- बात समझ में तो आती है परन्तु कब? जब दद्दा बन जाते हैं। (अर्थात समय बीत जाता है तब)
- आपके मूल्यांकन पर ही आने वाली पीढ़ी का भविष्य निर्धारित है।

ooo

12-1-21 अब उड़ जा रे पंछी मंगलवार

"दो प्रकार की वृत्ति होती है एक तोते की दूसरी कबूतर की। कबूतर जो भी दो स्वामी के पिंजरे में ही रहना पसन्द करता है पर तोते को मेवा-मिष्ठान्न देने पर भी पिंजरा पसन्द नहीं आता, अवसर पाकर आसमान में स्वतंत्र रहता है। ज्ञानी भी विषयों के पिंजरे में रहना पसन्द नहीं करता वह तो मोह का त्याग कर अपनी आत्मा का आनन्द लूटता रहता है।"

विद्या-सूत्र

- आशीर्वाद मिलने पर भी आप उड़ते नहीं तो सोचता हूँ हमारा आशीर्वाद फोकट में ही चला गया।
- पिंजरे से बाहर निकलना है तो एक गुरुमंत्र है- सो जाओ। अर्थात संसार की क्रियाओं से उदासीन हो जाओ।
- रत्नत्रय धारण करने वाले दृष्टि को तो बदलते ही हैं, चारित्र में भी कदम रख देते हैं
- चारित्र धारण करने पर ज्ञान एवं दर्शन में विशुद्धि अवश्य ही आती है।
- ज्ञान मात्र से निर्जरा नहीं दर्शन एवं चारित्र से आगम में अनेकों स्थानों पर निर्जरा बतलायी है।
- पंख बाजार से नहीं खरीद सकता, अपने पंखों का उपयोग करो। मोह छोड़ो और उड़ जाओ।
- राग करके संसार बढ़ाने की क्षमता भी आपके पास है, राग तो तोड़ने की क्षमता भी आपके पास है, आप जानो क्या करना है?

- निर्दयी हुये बिना तीन काल में मोह पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती।
- आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने कहा - "निर्दयी भस्मीसात् छिपभ्" मोह रूपी अर्गला (जंजीर) तभी टूटेगी।
- जो घर हम स्वयं बसाते हैं, उसे छोड़ने में बहुत तकलीफ होती है परन्तु दृष्टि मोड़ लो तो एक पल में छूट सकता है।
- आप लोगों के मुखड़ों को देखकर मैं समझ जाता हूँ कि संसार में सुख नहीं।
- जैसे कोर्ट में साक्षी महत्व रखता है वैसे ही आप सब के चेहरे साक्षी हैं। ये भी सत्य है आप स्वयं अपना चेहरा (मुखड़ा) नहीं देख पाते।
- पंख होने पर भी तोता अपार समुद्र की ओर नहीं जाता, क्यों कि जानता है मेरे पंख यदि भर आये तो गिरना पड़ेगा, लौटने में बहुत दिक्कत होगी। आप लोगों की भी इकट्ठा करते-करते ऐसी दशा हो जाती है कि न तो भोगते बनता है और न ही त्याग करते बनता है।
- आचार्यों ने कहा - तोते के भाव करने वाले का जीवन सुखी होता है जब कि कबूतर के भाव वाला दुखी। सौभाग्यशाली होता है वह जो इस प्रकार (तोते) के भाव कर पाता है।
- राग को याद न करें, जो राग का त्याग किये उनकी स्तुति, पूजा, गुणगान, प्रशंसा आदि नव कोटि से कर तो सकते ही हैं।

○ ○ ○

13-01-21 आया अकेला - जाये अकेला बुधवार

"जिस प्रकार लोहा अन्य वस्तु को अपना लेता है, इससे वह अन्य वस्तु रूप हो जाता है किन्तु सोना दूसरी वस्तु को प्रभावित नहीं होता तो अपनाता भी नहीं, न ही दूसरी वस्तु रूप होता है। इसी प्रकार यदि आत्मा अन्य द्रव्य को अपनाता प्रभावित होता है तो लोहे के समान जंग लगकर समाप्त अर्थात स्वभाव से दूर हो जाता है, स्वर्ण की तरह यदि पकड़ता नहीं तो हमेशा पीत वर्ण का चमकता रहता है।"

विद्या-सूत्र

- भिन्नत्व को लेकर सदैव अन्यत्व एवं एकत्व भावना का चिन्तन करें। इसका फल ये होगा कि जहाँ भी बैठे वहाँ अपनापन अवश्य प्राप्त होगा।
- मैं अपने आप में एक हूँ किन्तु व्यवहार में सबके साथ हूँ। भिन्नता में भी एक को सदैव ध्यान रखना।
- अनंतकालीन संस्कार होने से सभी पर्याय में ही दृष्टि को भटका देते हैं, द्रव्य की ओर नजर ही नहीं जाती
- डॉक्टर लोग प्रतिदिन मृत्यु को निकट से देखते हैं, विश्वास भी है ये टिकेगा नहीं किन्तु जब स्वयं पर आता है तो सब भूल जाते हैं। क्यों कि पर्याय पर ही दृष्टि रखी है।
- जो न अपनी तथा न ही परिचितों की चिकित्सा कर पाये ऐसे व्यक्ति से तो दूर ही रहना चाहिए।
- संवेदन करना अलग है और उससे चिपक जाना अलग है।

- आत्मा से सम्बन्ध रखो, शरीर से नहीं और आत्मा सब की समान है। शरीर से संबंध होने के कारण वियोग में दुःख एवं संयोग में हर्ष का अनुभव करते है यह अज्ञान है।
- नाम आत्मा का होता नहीं फिर भी शरीर यहीं है आत्मा चली गयी तो कहा जाता है फलाने चन्द जी चले गये, मतलब वे अब नहीं रहे इस दृष्टि से नाम आत्मा का हो गया।
- अध्यात्म में नाम से चिपके नहीं कि सुख दुःख का संवेदन होना शुरू हो जाता है।
- जब तक सत्य को स्वीकारते नहीं तब तक आँख बंद, इन्द्रियों को विश्राम, ध्यान हटाना आदि सब होता है फिर भी संवेदन बना रहता है। यह किसी भी विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ाया जाता, हाँ, धर्म की शरण में आने पर ही समाधान मिलता है।
- दो का अस्त हो जाए एक ही रह जाये उसे दोस्त कहते हैं ऐसा घनिष्ठता से हो जाता है।
- हम किसी से दोस्ती नहीं रखते। जब एकमेक नहीं हो सकते तो दोस्ती कैसी। न ही राग और न ही द्वेष रखते हैं।
- एकत्व-अन्यत्व भावना का चिन्तन वरदान है और आर्त-रौद्र परिणाम अभिशाप इसलिये इनसे बचो।
- उपयोग को निश्चल एवं निर्मोही होने पर ही साधक एकत्व-अन्यत्व की साधना कर पाता है।

o o o

मकर संक्रान्ति नेमावर
14-01-2021 फोटोग्राफी हो तो ऐसी गुरुवार

"जिस प्रकार फोटो ग्राफी में पहले नेगेटीव ली जाती थी उसी से पोजेटीव बनाकर आपको दी जाती थी। नेगेटिव की कुछ विशेषता होती थी मात्र आऊटलाइन ही उसमें आती है, पोजेटीव में स्पष्ट चित्र आता है इसी प्रकार दर्शनोपयोग नेगेटीव फोटो की तरह है एवं ज्ञानोपयोग पोजेटीव चित्र की तरह है।

दूसरा जब नेगेटीव से पोजेटीव बनाते थे तो उसे धोया जाता था, उस समय थोड़ा सा भी प्रकाश, बाहर की हवा नहीं लगनी चाहिए अन्यथा पोजेटीव चित्र न रहकर विचित्र हो जायेगा। इसी प्रकार बच्चों में प्रारम्भ में संस्कार नहीं डाले तो वह अपना न रहकर पराया हो जाता है।"

विद्या - सूत्र

- नेगेटीव को मूल कॉपी कहते है उससे चाहे जितने फ़ोटो बना सकते है वह खराब तो पोजेटीव से कोई मतलब नहीं, बालक भी ऐसा ही यदि संस्कार नहीं डाले तो सब कुछ चला जाता है।
- पहले रेखा मात्र बनती है, उसी से आगे रेखा चित्र बनाया जाता है। इसी को शास्त्रों में विधि एवं निषेध कहा गया है।
- दर्शनोपयोग निषेध परक होता है जब कि ज्ञानोपयोग विधि परक होता है।
- बाहर की हवा - पर का प्रभाव पड़ने से वंश परम्परा ही चली जाती है।

- जिस प्रकार पैतृक बिमारी वंशानुगत (पीढी दर पीढी) में चलती है, दादा-नाना की शक्ल/गुण पोते-नाति में भी देखते हैं। इसे संतानक्रमेण कहते हैं इसी प्रकार संस्कारों का भी प्रभाव जीवन में पड़ता है। जैसा प्रभाव पड़ेगा चित्र वैसा ही उभरकर सामने आयेगा।
- विवाह करना मात्र पर्याप्त नहीं कर्तव्य/जिम्मेदारी का भी निर्वाह होना चाहिए।
- जो गडन्त है उसका त्याग कर दिया वहीं अब डाल पर लगने लगा तो बीजत्व तो वही है मादकता बची नहीं तो वह लेने योग्य भी नहीं।
- यदि बनी-बनायी रसोई बाजार से आने लगी है तो फिर रसोईघर की जरूरत ही नहीं। ये बीमारियों को आमन्त्रण दे रहे हैं।
- पहले रसोईघर में हर कोई नहीं जाता था, मालिक भी नहीं, शुद्ध वस्त्र, शुद्ध हाथ आदि से ही स्पर्श करते थे, भिक्षुक की भांति ऊपर से डाल देते थे। अब कोरोना ने भी ऐसा करना सीखा दिया। पहले ही भारतीय संस्कृति की तरह जीना सीख लो।
- आज दवाई तो बन रही है पर कब तक लेना मृत्यु पर्यन्त एक भी दिन छोड़ नहीं सकते। धन्य है आजकी चिकित्सा प्रणाली एवं चिकित्सक।
- ऐसी दवाई बाल उड़ जाते हैं, भूख समाप्त, नींद समाप्त, खून पानी बन जाता है। न खा पाता है न बैठ-सो पाता है, न मर पाता है। ये भारत की चिकित्सा पद्धति नहीं है।

ooo

१८-५-२१ "औषध नहीं शोधकर खाओ" शुक्रवार

"जिस प्रकार योग्य औषधोपचार से रोग की चिकित्सा होती है उसी प्रकार तपस्या से कर्मों की निर्जरा होती है साथ ही तपस्या से रोग भी ठीक होते हैं। जैसे- उपवास से। जो अनावश्यक कोशिका होती है भिन्न-भिन्न रोग की, कैंसर की कोशिकायें भी उपवास से समाप्त होती है जिस प्रकार किसान नीचे के पत्तों को अलग कर देता है ताकि ऊपर के पत्तों को राशन पर्याप्त मिले, इसी तरह उपवास चिकित्सा में होता है।"

अनमोल-वाणी

- जीव विज्ञान का अध्ययन कर प्रकृति-स्वभाव को पहचान कर हम बहुत बड़ी हिंसा से बच सकते हैं।
- ऐसे भी जीव हैं जो भयंकर सूर्य आताप हो या शीत लहर सबको सहते हैं। पानी में रहकर खिला रहता है, आपको पानी न मिलें तो मुरझा जाते हैं।
- इन्द्रियाँ तो रहेंगी उनसे काम न लो तो घर में रहकर भी मोक्ष की साधना शुरु कर सकते हो। सामान्य नहीं विशेष निर्जरा के भागी बन सकते हो।
- पाप को पुण्य में बदलने के लिए हमारे परिणाम ही कारण है। परिणाम महत्त्वपूर्ण है जैसे- ३६५ दिन विद्यार्थी अध्ययन किया किन्तु द्रष्टि परिणामों पर ही रहती है।

- आपके आश्रित अनेक जीव हैं। औदारिक शरीर जीवों से भरा है अतः आपके मन-वचन-काय की चेष्टा इस प्रकार की हो ताकि उनका घात न हो। अनावश्यक चेष्टा से तो हम सर्वप्रथम बचें।
- कीटनाशक नहीं कीट निरोधक हो ताकि जीवहिंसा का पाप न लगे।
- ज्यादा खाना रोग का कारण है, कम खाना रोग को ठीक करने में कारण है और ज्ञान पूर्वक खाना कर्म निर्जरा एवं निरोग दोनों का कारण है।
- श्रद्धान एवं ज्ञान के साथ विधिवत् कदम बढ़ाने से कर्म निर्जरा तो अवश्य होगी। मोक्षमार्ग में ज्यादा परिश्रम की आवश्यकता नहीं।
- एक मुनिराज ध्यान में बैठकर उतनी निर्जरा जितनी कई श्रावक तपस्या करके भी नहीं कर पाते। परिणामों का खेल है।
- विदेशी लोग कहते हैं - भारत बहुत पीछे है, ध्यान रखना रेलगाड़ी में पीछे का डब्बा गार्ड अर्थात् रक्षक का होता है। हरी झंडी दिखाने पर ही गाड़ी चलती है।
- भारतीय चिकित्सा में कुछ करना है ही नहीं जो गलत कर दिया अब शांत बैठना है उपवास आदि में। विदेशी चिकित्सा में मात्र पैसा ही दिखता है। सुनते हैं 3-5 लाख का भी एक इंजेक्शन आने लगा है। जिसे लगाने के बाद केशलोंच की जरूरत नहीं, बाल उड़ जाते हैं।

- शल्य चिकित्सा का मतलब मात्र चिराफाड़ी नहीं, उपवास, योग्य औषध से भी बड़ी-बड़ी गांठ को भी बिना चिराफाड़ी के गला दिया जाता है।
- आहार को ही औषध बनाना ये भारतीय चिकित्सा है जब कि औषध को खुराक बना देना विदेशी चिकित्सा है।
- त्यागी-तपस्वी की तरह आप भी शुद्ध आहार-पानी लेकर, रोग को शांत कर सकते हैं बिना किसी औषध के क्यों कि आहार ही औषध है।
- शरीर को अब औषध की जरूरत नहीं, शोधकर भोजन देने की जरूरत है।
- जीवन को बचाना है और जीवन का विकास करना है तो अब लौट चलो भारतीय चिकित्सा की ओर...।
- अच्छी बात को जबरदस्ती भी सुनाया जाता है, क्यों कि बाद मे परिणाम उसके अच्छे आते हैं। मेहनत का फल मीठा होता है।
- अपने किये हुये कर्मों को हमें स्वयं ही भोगना है, दूसरे हमे फल दे रहे हैं, अब इस धारणा को तोड़ दो।
- बाहर भले ही 103° तापमान या माइनस तापमान हो शरीर के भीतर 98° ही रहता है इसी से समझ लो जीव विज्ञान के रहस्य को।
- देवों में वैक्रियिक शरीर पर कर्म निर्जरा नहीं, तप नहीं। यहाँ पर तप करने का अवसर मिला है तो कर लो। ० ० ०

16-1-21 आयुर्वेद है महत्त्वपूर्ण रसायन शनिवार

दूध से दही बनाया जाता है। दही को मथानी से मथकर नवनीत निकाला जाता है। वह नवनीत दूध का सार है इसे भी तपाकर घृत प्राप्त किया जाता है जो अमृत तुल्य है। इसे अंग्रेजी में oil of milk कह दिया ~~क्योंकि~~ अंग्रेजी में कोश (शब्द) है ही कहाँ? बटर के चक्कर में बेटर को मत छोड़ो।"

विद्या - सूत्र

- आज का युग Butter ~~में~~ ही संतुष्ट हो गया बेटर को भूल गया।
- घृत में सभी गुण विद्यमान हैं इसमें प्रकाश प्रदान करने की क्षमता है। बुद्धि का भी विकास करता है।
- बातें तो बहुत सारी बताते हैं परन्तु जठराग्नि मजबूत होनी चाहिए तभी पचा पाओगे।
- हम गोमाता की संतान है यह प्रौढ़ावस्था में ही समझ में आ पाता है वृद्धावस्था अथवा बाल्यावस्था में नहीं।
- आयुर्वेद ऐसा महत्त्वपूर्ण रसायन है जो मृत्यु से भी लड़ता है उसे आने नहीं देता।
- हमें चिरायु की आवश्यकता नहीं, न ही अकाल मृत्यु होनी चाहिए इसीलिये पूर्णायु की स्थापना की।
- पाँचों इन्द्रियों का दमन करें। इन्द्रिय दास न तो शोध कर सकता है और न ही तैर सकता है।
- डूबना नहीं है डुबकी लगाकर रत्न ले आओ।

o गाय से ही गवेषणा एवं गवाक्ष शब्द कह रहे हैं कुटिया हो या महल गवाक्ष अवश्य होता है। अनुसंधान/गवेषणा से ही शोध कार्य होता है।

o भाव तात्कालिक होते हैं जब कि अनुभव हमें दूर तक ले जाता है।

o मथानी चलती है तब गवेषणा प्रारम्भ होती है, चलाओ माथा तभी तो सार मिलेगी।

ooo

मुख्य बिन्दु वैद्यराज हितेश जानी - जामनगर

o सात प्रकार के दूध होते हैं उनमें सर्वोत्तम गाय के दूध को माना है। देशी गाय का दूध एवं घी दोनों बुद्धिवर्धक, बलवर्धक, स्वास्थ्यवर्धक, साधना-वर्धक एवं अमृततुल्य माना है वास्तव में हैं।

o भारत के इतिहास को लौटा लो, पुनः रामराज्य आने में देर न लगेगी।

o आज यंत्र ही हमारे सम्पूर्ण तन्त्र को बिगाड़ रहा है।

o मिट्टी के बर्तन वापरने से अनेकों बिमारियाँ जड़ मूल से नष्ट हो जाती हैं।

o होलस्टीन, जरसी गाय अथवा विदेशी नस्ल को 5-6 वर्ष में नपुंसकता आती है गाय के दूध-घी से कभी भी नपुंसकता नहीं आती है इसीलिये उसके बछड़े को वृषभ (बैल) कहते हैं जो पौरुष्य का प्रतीक है।

o गृहलक्ष्मी को अन्नपूर्णा कहा। वह यदि ठान ले तो भारत पुनः लौटने में समय नहीं लगेगा।

ooo

17-1-21 "योग्य राजा का हो संरक्षण" रविवार

"जंगल का राजा शेर होता है। जिस प्रकार एक शेर कभी भी दूसरे शेर को राजा बनाना पसन्द नहीं करता इसी कारण वह शेरनी के गर्भ में पलने वाले शावक को मारना चाहता है किन्तु शेरनी उस सिंह से होनहार राजकुमार की रक्षा करती है इसी प्रकार योग्य शासक (राजा) की रक्षा होनी चाहिए तभी देश में शान्ति सौहार्द, आनन्द का वातावरण रहता है।"

विद्या-सूत्र

- मनुष्यों में ही मान नहीं, तिर्यंचों में भी मान-सम्मान देखते हैं। सिंह कभी दूसरे सिंह को राजा नहीं बनने देता, चाहे उसका बेटा ही क्यों न हो?
- शतरंज के खेल की भाँति पर वार से भी ज्यादा आत्मसंरक्षण जरूरी है। जो विपक्ष है उसकी चाल पर ध्यान देना पहले आवश्यक है।
- राजकुमार का संरक्षण रानी अर्थात् सिंहनी ही करती है।
- वंश की सुरक्षा एवं योग्य व्यक्ति का संरक्षण इन दो को ध्यान में रखकर ही संतान की उत्पत्ति की जाती है।
- वन की रक्षा शेर से होती है और शेर की रक्षा वन से होती है इसलिये एक-दूसरे के पूरक बनो।
- संरक्षण एवं संरक्षित की परम्परा आज की नहीं, पूर्व से ही चली आ रही है।
- माँ संतान का पालन क्यों करती है, यह पाठ/सीख ध्यान रखना चाहिये।

o सेना की पोशाक वनस्पति जैसे रंग की इसीलिये होती है ताकि वे जंगल में रहें तो सुरक्षित रहें दुश्मन को भी वनस्पति का ही वहम बना रहे।

o आज अराजकता का मुख्य कारण है योग्य व्यक्ति का चुनाव न होना। बन तो जाते है पर ऊसही-ऊसही। मतलब नाम के मन्त्री रह जाते हैं।

o राजनेता भी मृगेन्द्र से सीख लें।

o राजा स्वार्थ में नहीं जीता। जैसे जंगल को ही परिवार शेर मानता है ऐसे ही "वसुधैव कुटुम्बकम्" पूरी पृथ्वी को ही परिवार माने वह राजा होता है।

o जैसे ऊपर-ऊपर पानी में जब काई आ जाती है तो नीचे की ओर से साफ सुथरा पानी लिया जाता है इसी प्रकार लोकतंत्र में जो भी कमियाँ है इन्हें दूर कर देना चाहिए।

o सही दिशा में किया गया व्यय ही सार्थक माना जाता है, अन्यथा वह अपव्यय की श्रेणी में आता है।

o o o

कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु

o १२ प्रकार का पानी होता है। उसको शुद्ध करने की शास्त्रोक्त विधी है आरो नहीं। तालाब के किनारे पेड़ हो, पीतल के बर्तन में सोना, छानकर ताम्बे में गरम करना, मटके में रखना ये सब दुर्लभ हो गया।

o सोडियम बेन्जो एवं अजीनो मोटो मांसाहार एवं बीमारी का घर है।

14-1-21 प्रतिक्षा का आनन्द सोमवार

"जब अरिहन्त प्रभु को भी तृप्ति नहीं तो आपको कैसे हो सकती है? वे भी अभी सिद्ध बनने की प्रतिक्षा में है इसलिए प्रतिक्षा में जो स्वाद है वह सिद्धो को भी नहीं।"

विद्या-सूत्र

- "अभी जी भर देखा नहीं" ऐसा कहने वाले ध्यान रखें ऐसा कोई भी पात्र नहीं जी भर कर उसे भर दे।
- स्वर्ग में प्रत्येक विमान में चैत्यालय है किन्तु उनके दर्शन से कभी भी सम्यक्दर्शन नहीं हुआ और नीचे प्रभु को हजार नैत्र बनाकर देखने से भी इन्द्र का जी कभी भरता नहीं। किन्तु जीवन्त अवस्था में देखने से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो जाती है।
- सौधर्म इन्द्र ताण्डव नृत्य करते हुये भी तृप्त नहीं हजार नैत्र से तृप्ति नही ये छद्मस्थ अवस्था में बीमारी है। इसकी पूर्ति करने में पूर्णायु भी सक्षम नहीं।
- अरिहन्त अवस्था में भी तृप्ति नहीं - वे भी सिद्धअवस्था को पाना चाहते हैं। ये बात इसलिये कही क्योंकि उन्होंने ही कही है।
- 18 दोष में रोग भी है इससे रहित है फिर भी अनादिका यह रोग अभी भी दूर नहीं हुआ है।
- ये पूर्ण सत्य है सिद्धत्व का स्वाद उससे नीचे कभी भी आने वाला नहीं कितना भी जी भर के पीलो।

○ भगवान बनें नहीं वे भी तृप्त नहीं, भगवान बनने पर भी तृप्त नहीं, समोशरण में भी तृप्त नहीं मतलब तृप्ति कहाँ है तो मात्र सिद्धों में है- ऐसा भगवान ने ही दिव्य-ध्वनि में कहा है।

○ जब पूर्ण कर्मों से मुक्त तभी स्वाद आयेगा, वहाँ जी भर कर पीना। इतै तो बस इतै ही है।

○ केवलज्ञानावरण कर्म है तो फिर भी मानलें तृप्ति नहीं है, पर केवलज्ञान होने के बाद भी तृप्ति नहीं है, इसलिये जितना-जितना मोह छूटा है उतनी-उतनी ही तृप्ति कर लो।

○ आप ही प्रतिक्षारत नहीं केवली भगवान भी अभी प्रतिक्षा में ही है। इसलिये अधुरी अवस्था देखकर रोओ मत।

○ एक बात विशेष कि प्रतिक्षा में जो स्वाद वह सिद्धों को भी नहीं आता इसलिये हमारा भी अपूर्व-अपूर्व ही स्वाद है प्रतिक्षा का।

○ भोजन में तो एक ग्रास लेने पर आकुलता कम हो जाती है, किन्तु यहाँ तो दिन-दुनी, रात चौगुनी प्रतिक्षा बढ़ती ही जाती है।

○ इतना अवश्य है- अन्य और कहीं भी ध्यान मत ले जाओ, बस वही मिले, वही मिलें और वही मिले।

सिद्धों का ध्यान में रखते हुये एक-एक कदम बढ़ाते जाना है।

○○○

19-11-21 मोती खाने एवं चढ़ाने के सोमवार

"सीप के माध्यम से मुक्ता की प्राप्ति होती है, किन्तु सीप त्रसकाय है और मुक्ता एकेन्द्रिय पृथ्वीकाय। मुक्ता को औषधी में लेते हैं परन्तु सीप को नहीं। मुक्ता भगवान के चरणों में चढ़ाये जाते हैं किन्तु सीप को नहीं। सीप की माला कोई नहीं पहनता मुक्ता की माला सबको प्रिय है।"

विद्या - वाणी

o पर्यायगत भेद को जाने जैसे सीप एवं मोती में भेद है।

o जैसे आहार दान देते हैं वैसे ही औषध दान भी होता है, श्रावक विवेक से नवधा भक्ति पूर्वक देता है मुनिराज भी आवश्यकतानुसार स्वीकारते हैं।

o मुक्ता, कस्तुरी, केसर आदि भौतिक पदार्थ हैं परन्तु इनका मूल्य बहुत है।

o जीव विज्ञान की तरह पदार्थ विज्ञान का भी विश्लेषण/अध्ययन हो।

o रत्न - हीरा, स्वर्ण, चांदि आदि की भी औषध बनाई जाती है। इनका उपयोग कष्टसाध्य होने से भी चिकित्सा पद्धति में उपयोग होता है।

o आहार दान अलग है औषधदान अलग है। पूजा में मुक्ता चढ़ायें, औषध में मोती पिष्टी आदि देना अलग है।

o टाइफाइड, निकाला, मियादी बुखार में मोती पिष्टि देते हैं।

o भोजन में नमक का प्रयोग करते हैं अमीर हो या गरीब सलोना ही पसंद करेगा अलोना नहीं।

o o o

२०-८-२१ पंचम काल में धर्म की गंगा मंगलवार

"जिस प्रकार मरुभूमि में एक आध वृक्ष देखने को मिलता है वो भी नीम का कैरो के लिये - आपके लिए नहीं इसी प्रकार वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल के कारण धर्म का वातावरण बहुत दुर्लभ होते हुये भी छोटे-छोटे बच्चों में धर्म के संस्कार देखकर स्वर्ग के देव भी प्रशंसा करने लग जाते है।"

अनमोल-सूत्र

- युग के आदि में जो दीर्घकाल की तपस्या का फल मिलता था वह अभी अल्प समय में मिल जाता है।
- पहले छोटे बच्चों को आहार देना तो दूर किन्तु देखने को भी नहीं मिलता था परन्तु आज छोटे-छोटे बच्चे ठण्ड में भी प्रातःकाल से ही धोती पहनकर पड़गाहन में खड़े हो जाते है।
- पहले वृद्धावस्था में दीक्षा लेते थे किन्तु आज जवानों में मुनिमहाराज बनने की होड़ सी लगी है।
- आहार हो यह तो भावना ठीक मेरे यहीं हो यह अच्छा नहीं। लोग मन्ना पूछते हैं आहार हेतु, हम भी क्या करें, ऐसी प्रभुशक्ति दें ताकि सबको संतुष्ट कर सकूं।
- चतुर्थ काल में गृहीत मिथ्यात्व नहीं होता किन्तु आज ये सब वैभव-संस्कार देखकर लगता है कि उनकी अनुपस्थिति में ऐसे-ऐसे कार्य हो रहे तो उपस्थिति में क्या होता होगा?
- आहार-पानी आदि में बहु लाहट लाइये।

- आज क्षयोपशम का अभाव एवं हीन संहनन होने पर भी धर्मध्यान का वातावरण मिल रहा है अर्थात टीकिट बहुत सस्ता है।
- प्रमाद को छोड़कर, शरीर के कष्ट को छोड़ते हुये जो मिल रहा है उसका उपयोग करते जाइये।
- रात में भी कम सोने को कहा फिर दिन में तो सोना ही नहीं है।
- मोंग भर मत रखीयों, मोक्षमार्ग तो बहुत सरल है।
- दूसरे की आलोचना नहीं करना एवं जल्दी-जल्दी निर्णय भी न करीये।
- जैसे भाव रखोगे-फल भी वैसा ही मिलेगा। ये संसार में अकाट्य नियम है। इसलिये काल को दोष देकर कभी भी रोओ नहीं।
- छट्ठे काल में तो और स्थिति भयंकर होगी, नरक से ही आना है एवं नरक ही पुनः जाना है। आज भी समीचिन साधना से 4-5 भव में अपना कल्याण कर सकते है। इसलिये पूरी ताकत लगा दिजिये।
- यह सत्य है कि छोटे बच्चे बड़ो से भी अधिक पुण्य लेकर आये हैं जो इस तरह का धार्मिक वातावरण उन्हें प्राप्त हो रहा है।

○ ○ ○

- बीज वर्षा न भी हो आर्द्रा नक्षत्र में अंकुरित हो योग मिलने पर समोशरण की तरह लहलायेगा।

२१-१-२१ एकता का सूत्रपात - पंचायती मन्दिर गुरुवार

"जिस प्रकार नदी पर बांध बनाते हैं एवं जब वर्षा का पानी अधिक एकत्रित हो जाता है तो गेट खोल देते हैं, इसी प्रकार कोरोना से सब बंध गये थे अब दर्शन हेतु प्रतिदिन भक्तों की मण्डली टोलीयों (समूह) के साथ आ रहे हैं।"

विद्या-सूत्र

- नदीयों पर बांध के कारण जल-प्रबन्धन से पुरा पानी व्यवस्थित कर दिया जाता है, रेगिस्थान में भी हरियाली आ जाती है।
- शास्त्र एक और १०-२० लोग हाथ लगा रहे है पता नहीं कौनसी नदी का बांध है। पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण सब ओर के लोग बैठे हैं।
- मैं बोली नहीं लेता किन्तु आप जो जिनवाणी विराजमान करते हो तो मैं भी नमोऽस्तु करके पुण्य कमा लेता हूँ।
- एक व्यक्ति जिनवाणी विराजमान करें शेष बैठे-बैठे हाथ लगायें ताकि अन्य लोगों का भी ध्यान रख सके।
- एक नगर में कई मन्दिर होते हैं किन्तु एक पंचायती मन्दिर भी अवश्य होना चाहिए ताकि समाज में सदैव एकता एवं अखण्डता बनी रहे। खिमलासा में भी ऐसा हो गया।
- पंचमकाल में यहाँ साक्षात् तीर्थंकरों का अभाव है किन्तु स्थापना निक्षेप से हम सब भावों के माध्यम से इस तरह के जिनमन्दिर से आगे के लिए बीजारोपण कर रहे हैं। क्र

०००

२२-१-२१ कर्त्तव्य की गोली खाओ शुक्रवार

जिस प्रकार लता किसी वृक्ष का सहारा ले लेती है तो जीवन का उत्थान कर लेती है, बस सहारा देने वाला स्वयं मजबूत हो इसी प्रकार, जो अपराध के कारण आज सजा काट रहा है उसमें भी ऊपर उठने की पूर्ण सम्भावना होती है। वर्तमान में हथकरघा से उन सभी के जीवन मे आमूल-चूल परिवर्तन आया है।

अनमोल - वाणी

- परिवार में कुछ कमाऊ, कुछ गमाऊ एवं कुछ खाऊ सदस्य होते है सभी कमाने वाले नहीं होतें न ही सभी खाने वाले ही होते हैं।
- अपराधी के जीवन को परिवर्तन करने हेतु सरकार भी शिक्षित लोगों की नियुक्ति (जेलरआदि) करती है। ताकि इन्हें भी मुख्य/मूलधारा से जोड़ा जा सके।
- आप भिन्न-भिन्न वस्त्र धारण करते हैं जेल में तो सभी कैदी एक से वस्त्र में हमने देखें।
- सागर, डिंडोरी, जयपुर, अजमेर आदि की जेलों में प्रवचनों से/दर्शन से बहुत से कैदियों का हृदय परिवर्तन हो गया।
- धर्म का अर्थ मात्र मन्दिर-मस्जिद में ही नहीं, जो कर्तव्य है/करने योग्य कार्य है उसी का नाम धर्म है।
- दक्षिण में कहते हैं उसका अर्थ है- कोई भी कार्य स्वयं करना उत्तम है, पुत्र से करवाना मध्यम है एवं नौकर से करवाया तो सब

नष्ट हो जायेगा।

०संस्मरण- जब छोटा था भगवान महावीर के 2500वाँ निर्वाण महोत्सव पर 15 करोड़ रुपये इस बात पर खर्च करना है ताकि लोग पढ़-लिखकर प्रशासन में आगे आयें, इतनी बड़ी राशि व्यय करने पर भी सही नियोजक न होने से एक भी कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर आदि नहीं बन पाये। न ही प्रांतीय स्तर एवं न ही केन्द्रिय स्तर पर लाभ मिला।

इसके बाद एक स्थान पर हमने पंचकल्याणक करवाया। बचत राशि से वहीं पर प्रशासनिक संस्थान खुलवाया। इतनी सफलता कि आज वहाँ से निकले युवक-युवतियाँ बड़े-बड़े पदों पर पदस्थ हैं। कलेक्टर, आदि के साथ जज एवं अन्य प्रशासन के अधिकारी अपनी सेवायें दे रहे हैं।

०संस्मरण नहीं हकीकत- पढ़-लिखकर समाज की सेवा करना, देश एवं विश्व की सेवा करना तो अच्छा है मात्र नौकरी के लिए पढ़ना अच्छा नहीं। कुछ समय पूर्व अखबार में दो-तीन बार आया था। अच्छे पढ़े-लिखे युवक-बच्चियाँ Btec, Mtec, MBA, स्नातक, स्नातकोत्तर, Phd की उपाधि वाले भी मात्र 6-7 हजार की चपरासी की नौकरी के लिए आवेदन कर रहे हैं। सुनकर रूह काँप जाती है कि हमारे देश के युवा को ये क्या हो गया? वहीं दूसरी ओर जो मेहनत करता है चाहे वह जेल में हो

या बाहर हो, स्त्री हो या पुरुष हो हथकरघा के माध्यम से 300 से लेकर 800 रु प्रतिदिन तक कमा रहे हैं। स्वाभिमान से जी रहे हैं। एक स्थान पर तो महिलाये 1000 रु प्रतिदिन से भी अधिक (35000 प्रतिमाह) कमाकर घर ले जा रही हैं। ये हमारा भारत है, जहाँ ठान ले तो सब कार्य कर सकते हैं।

- भारत को पुनः उन्नत बनाना है तो नौकरी की ओर मत देखो कुछ ऐसा कर जाओ जिससे दूसरे को नौकरी दे सको।
- शिक्षण में कर्त्तव्य करना सीखायें ताकि शुरु से ही वह नौकरी के चक्कर में न रहे।
- धन से, शरीर से, मन से जो विकलांग हैं उन्हें भी ऊपर उठाकर सकलांग बनाना है।
- केवल नौकर बना देने वाली पढ़ाई को ही शिक्षा बोल रहे हैं तो ऐसी शिक्षा हमें नहीं चाहिए। ये महाबिमारी हमारी पीढ़ियों को खोखला कर देगी। यह विकास नहीं विनाश का कारण है।
- आपने माइक रखा है तो मैं तो बोलूंगा, मेरा कर्तव्य भी है। जो लोग माइक पर भी तेज बोलते हैं उन्हें अभी लाउड-स्पीकर (माइक) का अर्थ ही मालूम नहीं है।
- आज के बच्चों को ऐसा प्रशिक्षण देओ ताकि चिल्लाने से नहीं इशारे से काम हो सके।
- उपाधी तो ढेर हो और प्रयोग में शून्य तो वह कोई काम का नहीं।

- नौकरी में समय पर भोजन नहीं, परिवार से तो दूर ही रहना, रुग्ण शरीर हो रहा है।
- एयर कंडीशन में जरूर बैठे हैं परन्तु कंडीशन एयर नहीं है। विदेशों में तो एयर है ही नहीं
- एयर कंडीशन में सुख नहीं है जैसे वनस्पतियाँ सूख जाती हैं वैसे शरीर सूख जाता है।
- सनराइज को भूल गये सब सेट हो गया सन सेट। २४ घण्टा लाइट में रहते हैं डीलाइट को भूल गये।
- डॉट से नहीं पीठ पर हाथ फेरकर कैदियों से व्यवहार कर उनके दिलों को जीतना आवश्यक है।
- जेल में दो-तीन दरवाजे पारकर पहुँचे तो शान्त बैठे कैदी मिलते हैं आप तो उचकते रहते हो। हमने देखा थे यातना का स्थान है यहाँ तो प्रार्थना हो रही है।
- जेल में एयर कंडीशन नहीं किन्तु सभी की कंडीशन अच्छी हो गयी। परिवार जनों को भी पैसा भेजने लगे, सभी के घर वाले भी खुश हो गये।
- भारत का खनन करो, नीचे से प्रतिमायें / प्रतिभायें तो निकलेंगी। थोड़ा सा खोदना भर है।
- कुर्सी पर बैठे रहोगे रीढ़ ही टेढ़ी हो जायेगी, जो जीवन का आधार है। दवाई ही खाते रहेंगे, रोटी नहीं।
- कर्तव्य करके छाती पर गोली खाना ठीक है, कर्तव्य के अभाव में रुग्ण होकर गोली खाने की अपेक्षा।"
- कर्त्तव्य नहीं तो दादा-पड़दादा की सम्पत्ति भी चली जायेगी।

o o o

23-1-21 दिशा हो नदी की तरह शनिवार

"जिस प्रकार नदी उद्गम स्थल से निकलती है। लाखों पूजने वाले पूजा करते हैं पर वह प्रभावित नहीं हो आगे की ओर ही बहती रहती है। उसी प्रकार साधु भी सदैव चलते रहते हैं। नदियों को कभी भी दिशा का आग्रह नहीं होता चारों ओर से समुद्र में आकर मिल जाती है उसी तरह आप भी दिशा का आग्रह न रखो। सारी नदियाँ पूर्व की ओर मात्र नर्मदा ही पश्चिम की ओर बह रही है इसलिये नदी दिशा को देखकर बहना बंद नहीं करती। आज तक का रिकार्ड है कोई भी नदी पर्वत की ओर नहीं चढ़ी हाँ पर्वत से जो उतर गयी वही नदी तर गयी। इसलिये समुद्र को कभी भी भूलो मत। जैसे नदी पर बाँध बना देते हैं ताकि सर्वत्र हरियाली हो जाये, पानी ज्यादा होने पर बाँध के दरवाजे खोल देते हैं उसी प्रकार आप भी संग्रह मत करो, सर्वत्र खुशीयाँ हो जायेगी।"

विद्या-सूत्र

- भाषा का आग्रह कभी न रखें उसके पीछे छिपे भावों को ग्रहण करें।
- दिशा का कभी बोध होता ही नहीं, दशा का बोध हो जाये तो आनन्द विभोर हो जायेगो।
- आपमें और हममें इतना ही अन्तर है कि आप मोह मार्ग के नेता हैं और हम मोक्ष मार्ग के नेता।
- लोक का अवगाह आकाश है और आकाश अनन्त है इसलिए

दिशा का निर्धारण नहीं किया जा सकता है। अर्थात दिशा पकड़ में नहीं आती है।

- ये दक्षिण - उत्तर - पश्चिम - पूर्व मान रखी हैं। क्योंकि नेमावर दिल्ली की अपेक्षा दक्षिण में है किन्तु केरल की अपेक्षा उत्तर में। अब उत्तर देओ। जब प्रश्न ही नहीं तो उत्तर कैसा?
- छोटा था तो कहा इसका उत्तर दे दो। हमने कहा - पहले प्रश्न रख दो। प्रश्न रखना बहुत कठिन है। यदि प्रश्न ही गलत तो उत्तर सही कहाँ से आयेगा?
- "मेरु प्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके" इस सूत्र में दक्षिण अर्थात् दांये से परिक्रमा होती है। "दक्षिण भाव समग्रयाम" दक्षिण भाव से केवलज्ञान होगा। इसमें भी ये दांया - ये बांया दोनों ही अंग हैं। अंगी का बोध करो, लड़ने की आवश्यकता ही नहीं होगी।
- निप्पानी, चिक्कोड़ी जिला में है कर्नाटक वाले कहते हैं इधर होना चाहिए एवं महाराष्ट्र वाले कहते हैं इधर होना चाहिए न ही पानी, न ही निपानी आगे एक गांव है - पटनपुनी जल्दी - जल्दी पी लो।
- अब हम मन नहीं अभिमत देंगे। दिशा को नहीं दशा को बदल दो, दिशा बदल ही जायेगी। सुख भी तभी मिलेगा जब दशा को बदल देंगे।
- मैं तो ऊपर जाने की बात करता हूँ आप मुझे दक्षिण - उत्तर, पूर्व - पश्चिम में जाकर भटकाना चाहते हैं, हमें भटकना नहीं।

○ नेता घर को संभाल नहीं पा रहे भारत को संभालना चाहते हैं। घर का बजट नहीं बना पाते, वे भारत का क्या बजट बना पायेंगे।

○ आप व्यवस्था में मत लगो - व्यवस्थित हो जाओ। अवस्था के अनुसार व्यवस्था तो होती चली जाती है।

○ आप माइक, टेंट, टेबल - कुर्सी की व्यवस्था कर सकते हैं किन्तु लाइट चली जाये तो....

○ आंखों से नहीं कानों से सुना जाता है इसलिये आँख बंद एवं कान खुले रखो।

○ सृष्टि को नहीं दृष्टि को बदलो। समोशरण में सब समान रहते हैं चाहे चक्रवर्ती हो या सामान्य श्रावक।

○ आज के बच्चे शिक्षक को भी धमकी देते हैं, ऐसे में भारत पुनः कैसे लौटेगा इसलिए भारत को भारत ही रहने दो।

○ भारत में आरक्षण (रिजर्वेशन) की बिमारी नहीं थी और न ही होना चाहिए।

○ भारतवासी घर भरना नहीं चाहता घर बसाना चाहता है। जो घर भरता है वह महावीर स्वामी का अनुयायी हो नहीं सकता।

○ साधु भी दिशा से बंधे नहीं, यत्र-तत्र विचरण करने वाले होते हैं साधु तो।

गृहणी जैसे हो नहीं वैसे ही संग्रहणी की बीमारी भी नहीं होनी चाहिए। संग्रह न हो।

○ धैर्य - साहस जो रखता है उसका हार्ट फैल (हार्टअटैक) नहीं होता।

o लौहपुरुष जैसे जीते हैं वैसे जीना है, मस्तिष्क भी ठीक रहे। लौह जंग लगा नहीं होना चाहिए अन्यथा सेप्टिक हो जायेगा। पैर अलग करना पड़ता है, फिर धड़ाम से गिर जायेंगे।
o जेल वालों की जीत होती है या आप लोगों की देखेंगे। वे भी कह रहे हैं - "बाबा कब आओगे"। वे भारत को भारत बना रहे हैं।

000

3000 लोग दर्शन से

23-1-21 यादें बचपन की मध्याह्न

o खिचड़ी सुपाच्य होती है। सभी के लिए स्वास्थ्यवर्द्धक है।
o जब कोरोना से सब अपने घरों में थे, हमारे दर्शन को नहीं आ पा रहे थे तो हमने चातुर्मास में विहार कर दिया घर-घर पर आहार लिया ताकि उनके भीतर का भय समाप्त हो सके।
o आयुर्वेद सिद्ध इलाज है, उस पर विश्वास की आवश्यकता है। आत्म विश्वास रखो।
o 12 माह में कोरोना में आपकी ये हालत हो गयी तो उन भद्रबाहु महाराज ने इतने बड़े संघ को (12000) 12 वर्ष तक कैसे निकाला होगा।
o मनुष्य जीवन अपने लिये नहीं, अपने वाले जो हैं उनके लिये है। ये संस्कार के द्वारा हो सकता है।
o मैं कथाकार नहीं किन्तु दूसरी कक्षा में पढ़ी थी वही लड़का लगाकर दे रहा हूं। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन एक कथानक है।

- दूध में तड़का तो दूध भी खराब एवं तड़का भी खराब किन्तु मठ्ठा या महेरी में तड़का लगा दो तो सोने पर सुहागा हो जाता है, स्वास्थ्यवर्धक रहता है।
- 3 वर्ष के संस्कार 100 वर्ष तक ही नहीं मेरा मानना है मोक्ष तक साथ जाते हैं। सूक्ष्म शरीर के साथ भी चले जाते हैं। खाद-पानी मिलते ही पुनः हरे-भरे हो जाते हैं।
- संस्कार की आँखों से पानी फूटता है, संस्कार रहित हो तो आँखे फूट जाये फिर भी पानी नहीं आता है।
- दक्षिण में दूध गंगा, वेद गंगा, पंचगंगा, चिकुतरा, कृष्णा 20-30 किमी. में 4-5 गंगा है। उसका पानी पीने पर दूध भी फीका पड़ जाता है।
- जब तक आत्मियता तभी तक धर्म है। आत्मियता यदि समाप्त तो परमात्मा बनना तो दूर बहिरात्मा भी नहीं बन पायेगा।
- कृतज्ञता आज समाप्त हो रही है बहुविज्ञता तो आ रही है। कृतज्ञता जीवन का आभूषण है। कृतज्ञ कुत्ते का नाम भी है संस्कृत में - रात्रिजागरण। श्वान निद्रा मुनि हेतु भी प्रसिद्ध है। सोता हुआ भी जागता रहता है।
- गाढ़ निद्रा सुख की नींद नहीं जीवन को सुखाने की है।
- गाली के दो अर्थ - गाली भी एवं गा ली गीत गा लिया। रोते हुये जीवन क्यों जीते हो गाते हुये जीओ गाली को गाली मानो।
- आँख का अर्थ आकृति नहीं ज्योति का नाम आँख है। संस्कार की आँखों से पढ़ने पर ही संसार समाप्त होता है।

- अच्छे-अच्छे वाक्य लिखकर भी यदि सो जायेंगे। यदि जायेंगे तो सब यहीं धरा रह जायेगा। अर्थ के साथ लगायेंगे तभी काम आयेगा।
- क्षपात् पापात् त्रायते इति क्षत्रिय = जो पाप से बचाने वाला होता है वह क्षत्रिय होता है।
- बनिया लोगों का ध्यान मात्र तराजू की डंडी पर रहता है क्षत्रिय सबको सीधा कर देता है।
- पिता की आज्ञा तो बहुत सस्ती है परन्तु गुरुओं की आज्ञा पालन करना बहुत कठिन है। भव-भव लग जाते है।
- दक्षिण में अंक मतलब गुणा भी एवं अंक मतलब गोद भी होती है। गोद में मृत्यु नहीं जीवन दान है।
- परशुराम के पिता ने अपनी ही पत्नि (माँ) के सिर को काटकर तिलक लगवाया था, वही स्थान श्रवणकुमार के भावों को परिवर्तन करने वाला बना। रेणुका ने परशु से माना
- झाड़ू से मात्र सफाई ही नहीं, भूत उतारने के काम भी आती है। झाड़ू से भूत उतार दूंगा। गुरुओं को भी नियुक्त किया जाता है।
- रघुकुल - लघुकुल - गुरुकुल सभी समान अर्थ के है। राम का कुल, विनम्रता का कुल (लघुकुल) है।
- पचाने पर ही भोजन का महत्व है। हमारी औषध दोबारा न लेना पड़े - भूख खुल जाये। एक वर्ष में (युगादि शुद्ध पड़वा) एक बार नीम के पत्ते सबको लेना होता है रोग से दूर रहते है। ○○○

प्रातः
२५-०७-२१ सीढ़ी में सोना नहीं रविवार

"जिस प्रकार मंजील पर पहुँचने के लिए २५ सीढ़ियाँ चढ़ना है किन्तु 25 सीढ़ी कभी भी एक साथ नहीं चढ़ी जाती एक-एक सीढ़ी चढ़कर ही 25 वीं सीढ़ी पर पहुँचते हैं इसी प्रकार मोक्षमार्ग में भी जानना चाहिए। अभी मुक्ति नहीं किन्तु मार्ग तो है। एक-एक कदम बढ़ाने पर ही उस मुक्ति के निकट पहुँचेंगे।"

विद्या-सूत्र

- आज एक परीक्षा से उत्तीर्ण होकर वह आगे की कक्षाओं में पहुँच तो जाता है किन्तु अनुभव कुछ नहीं होता पहले कम से कम इतने अंक आयेंगे तभी उत्तीर्ण माना जाता था। अन्यथा एक ही कक्षा में 2-3 बार पढ़ो इससे अनुभव का विकास होता है।
- जैन धर्म भाव प्रधान धर्म है द्रव्य तो आ ही जाता है किन्तु आज द्रव्य का ही खेल हो गया भाव की जगह दुर्भाव आ गये हैं।
- मनुष्य जीवन चौपाल की भाँति है- मनुष्य - तिर्यञ्च - नरकी देव ही नहीं देवो के महादेव भी होने की शक्ति है।
- कोई भी व्यक्ति नरक जाना नहीं चाहता पर काम नरक का ही करते हैं, देव सब बनना चाहते हैं किन्तु काम दानव का कर रहे हैं, ऐसे में कल्याण कैसे होगा।
- सीढ़ियों में चढ़ना होता है, चलना होता है, थक गये तो रुकना भी हो सकता है किन्तु सोना कभी नहीं होता। आज सीढ़ी में भी एयरकंडीशनर कमरा बना रहे हैं।

- अन्तिम सीढ़ी मंजील नहीं अभी छत पर पहुँचे हो भवन के भीतर प्रवेश नहीं हुआ।
- जिनवाणी भेंट नहीं - जिनवाणी दान करो।
- जिनवाणी की किमत नहीं होती (पहले मूल्य में सदुपयोग-स्वाध्याय लिखते थे और आज सर्वाधिकार सुरक्षित।
- शास्त्र दान तभी माना जायेगा जब छः आवश्यक पूर्ण करते हों। आहार हेतु सोला नहीं बल्कि अभय दान, औषध दान भी नहीं देते तो शास्त्र दान का क्या अर्थ होगा।
- जिन्होने मार्ग बनाया उन्होने कभी भी अपनाया नहीं, न ही साथ लेकर गये, आज सीढी को साथ ही ले जा रहे हैं।
- जिनवाणी अलग है और रत्नकम्बल (अछार) अलग है। रत्नकम्बल भी शुद्ध होना अनिवार्य है।
- छन्ना यदि शाकाहारी नहीं तो पानी छानने एवं शुद्धि बोलने का महत्त्व क्या? एक कदम भी मोक्षमार्ग में नहीं।
- जो वस्तु छूने योग्य नहीं उसी में आमूल-चूल डूबे चले जा रहे हैं।
- वर्तमान में स्वर्ग जाना अनिवार्य है, स्वर्ग जाना नहीं चाहते किन्तु और कोई रास्ता भी नहीं है। आचार्य कुन्दकुन्द ने भी यही मार्ग (स्वर्गापवर्ग) बताया है।
- मोक्ष तक पहुँचाने में स्वर्ग आपका साथ देगा इसलिये उससे घबराओ नहीं।
- वीतरागी कभी मरता नहीं, वह तो मृत्युंजयी है।
- जो प्रमाण आचार्यों ने दिये उन्हें ही प्रमाणिक मानो। इसलिये स्वाध्याय का भी क्रम होना चाहिए।

०००

२५-१-९१ दीवाली नहीं होली मनाओ मध्याह्न

"जिस प्रकार नदी निकलती है जहाँ से बहती है वहीं पर सबको लाभान्वित कर देती है, प्रशासन में सेवा देने वाले की कहीं पर भी ड्यूटी लग जाती है उत्तर का व्यक्ति दक्षिण में सेवा दे रहा है, सेना में तो और अधिक होली-दिवाली सब देश सेवा में ही होना है फिर हमारे यहाँ आओ - हमारे यहाँ चलो ऐसा क्यों बोल रहे हो। बालिका भी जहाँ जाती है वहीं की हो जाती है" विद्या-वाणी

० अनन्तकाल से कर्मों का बंध है वह न देखकर जहाँ भी तीर्थक्षेत्र आदि में जाता है तो पहले पूछता है वहाँ क्या प्रबन्ध है? बन्ध देखो प्रबन्ध नहीं।

० अच्छे दिन हैं, बुरे दिन हैं। दिन अच्छे-बुरे नहीं हमारी मानसिकता अच्छी-बुरी होती है।

० नदी तट पर तपस्या करने वाले भय नहीं करते, आत्मा अजर-अमर है सदैव चिंतन करते हैं। यह क्षेत्र नदी तट पर है आप इसका लाभ लो।

० संस्मरण- गिरनार जी से लौट रहे थे। एक स्थान पर रुके। वह पुलिस की ट्रेनिंग सेन्टर था। पुलिस थाना बोलते हैं मतलब वह भी स्थान है। उनका त्याग सराहनीय है। आपकी रक्षा करती रहती है। ऐसे ही भोपाल में भी पुलिस २५ वर्षों सेवा में रहती थी। एक रास्ता ही खाली कर दिया था। दसों दिशाओं का नियन्त्रण उनके हाथ से होता है। गिरनार जी तरफ

जो पुलिस वाले थे उनका सम्मान हो रहा था। उनसे पूछा पथराव होता है- पत्थर फेंकते हैं फिर कैसे सहन करते हो। उन्होंने कहा - आप भी तो समता रखते हैं। फिर उन सभी ने शराब एवं माँस का आजीवन त्याग कर दिया।

- सिद्ध क्षेत्र - नदी किनारा फिर भी शराब का विक्रय। पानी-दूध में तो समय लग सकता है पर शराब गली-गली पहुँच रही है।
- मतदान को ओट नहीं कहते वो दान है और दान कभी भी अभिशाप का काम नहीं करता।
- अब तो किराणा, पान की दुकान पर अण्डे बिक रहे हैं क्योंकि सब मौन है। न ही त्याग करते हैं न ही त्याग के सूत्रों को समझते हैं।
- बाहर दीवाली है भीतर होली है। इसका नाम धर्म नहीं, न ही कर्म (कर्तव्य) है।
- शिक्षा- शीशी को डॉट लगानी चाहिए पर अनाज तो डॉट लगाते-लगाते हमारा हाथ दुख जायेगा।
- बालिका को बचपन से सिखा दिया जाता है कि पराया धन है। एक बार विदा कर दी पुनः वापस आ नहीं सकती। न ही माता-पिता उसके घर का पानी पीयेंगे। नाता-रिश्ता, सौर-सुतक सब समाप्त हो गया।
- विवाह आज विवाद का पर्यायवाची बन गया है।
- जैसे बालक का सम्पत्ति पर अधिकार वैसे ही बालिका का भी हो, ऐसी भी माँग चल रही है।
- संरक्षण में रक्षण है आरक्षण में रक्षण नहीं।

ooo

२५-१-२१ आत्म अनुभव आसान नहीं पर असंभव भी नहीं सोमवार

"जिस प्रकार किसी पात्र में यदि नीलम ड़ला है तो उसमें जो दूध ड़ाला उसका कण-कण नीला ही दिखता है इसी प्रकार आत्मा का आकार शरीर प्रमाण बताया, जितना बड़ा शरीर उतने में ही आत्मा के प्रदेश फैल जाते है। जैसे दूध को गरम करने पर झाग उछलकर बाहर आ जाते हैं ठीक वैसे ही आत्म प्रदेश समुद्‌घात के समय बाहर आते हैं किन्तु मूल से संबंध बना रहता है।"

विद्या - सूत्र

- आत्मा देह के बराबर है किन्तु देह (शरीर) आत्मा के बराबर कथंचित् नहीं भी है। समुद्‌घात के समय तीन लोक में आत्म-प्रदेश फैल जाते हैं।
- अनुभव सदैव आत्मा को होता है, हाँ देह के बिना नहीं हो सकता है संसार दशा में। शरीर भोक्ता नहीं हो सकता।
- "आसमान को छुना आसान हो सकता है पर आत्मा को छुना आसान नहीं है।"

शरीर आत्मा से चिपका है या आत्मा शरीर से? (स्निग्ध रूक्षत्वाद् बंधः) राग-द्वेष से बंध होता है (जो आत्मा के परिणाम हैं।

- खसखस के दाने में भी अनंत निगोदिया जीवों का शरीर रह सकता है और राघव मच्छ १००० योजन (भारत से तीगुने) में भी आत्म-प्रदेश विद्यमान है।
- देवगुरु, शास्त्र रूपी रसायन के द्वारा जो कहा उसी अनुसार साधना करेंगे तो आत्मा शरीर से भिन्न हो सकती है। ० ० ०

गणतंत्रदिवस

26-1-21 स्वाभिमान रूपी शेर को जगाओ मंगलवार

जिस प्रकार आँधी के कारण सूर्य का प्रभामण्डल फीका पड़ जाता है उसी प्रकार वर्तमान में भारत की दशा हो गयी है।

जिस प्रकार भेड़बकरीयों के बीच पला-बढ़ा शेर का बच्चा अपने असली स्वरूप को भूल जाता है किन्तु किसी अन्य शेर की दहाड़ से उसका सोया शेर भी जाग उठता है वैसे से भारत अपने भीतर शेर को भूल गया इसे अब दहाड़ लगाने की जरूरत है।

जिस प्रकार ध्वजारोहण के समय सबसे मुख्य रस्सी खेंचते समय कहीं गांठ न पड़ जाये इस बात का ध्यान रखा जाता है इसी प्रकार जीवन को उन्नत करना है, फूल बिखेरना है तो गांठ नहीं होना चाहिए।

विद्या-सूत्र

- आज प्रजा सत्तात्मक दिन है अर्थात 15 अगस्त को नहीं वास्तविक स्वतंत्रता तो आज मिली इसी कारण आज का ध्वजारोहण राष्ट्रपति द्वारा होता है।
- पड़ोस में यदि होली जल रही हो तो आपका आरती उतारना भी व्यर्थ है। सभी मिलकर आरती करें ऐसा कार्य करना चाहिए।
- "ऊपर उठने के लिए वित्त की नहीं विद् अर्थात ज्ञान की आवश्यकता है।" विद् से वेद बना जो ज्ञान का प्रतीक है, आज तो अज्ञान को मुफ्त बांटा जा रहा है।

- मैं उस धन को कभी भी देखना नहीं चाहता जो अज्ञान को बढ़ाने में ही लगा है। बच्चों में संस्कार नहीं तो यह धन कोई काम का नहीं।
- भारत को प्रतिभारत होना था पर महाभारत की ओर ही चला जा रहा है।
- विदेशी शिक्षा को बंद करके रख दिजिए। विमान का अर्थ वि विशेष रूपेण मान्यता प्राप्त शिक्षा दुर्गति का कारण बन गयी।
- बच्चों एवं बच्चियों में नशीले पदार्थ सेवन की आदत आ रही है यह तो भारत के लिए बहुत पतन का कारण हो जायेगी। व्यसन मुक्त भारत को पुनः स्थापित करने की सबसे बड़ी आवश्यकता है।
- सरकार भी मात्र रेवन्यु (सरकारी आय) पर ध्यान न दे। शराब बेचकर कोई भी राष्ट्र समृद्ध-उन्नत नहीं बन सकता है।
- पागल हो जाना तो फिर भी ठीक है किन्तु व्यसन की लत पड़ना गर्त में जाना है। भव-भव ही खराब हो जायेंगे।
- प्रजासत्तात्मक का अर्थ है, सत्ता राजा के हाथ में नहीं प्रजा के हाथ में है। सत्ता से सत्तुआ बनता है जो लू को भी पछाड़ देता है।
- विदेशी इतिहास नहीं देश का वास्तविक इतिहास पढ़ेंगे तो पता चल जायेगा भारत क्या था?
- अब तो धरती यहाँ की है बीज विदेशी है, बच्चा यहाँ का है और शिक्षा विदेशी है। कैसे उद्धार होगा?

- ऐसे पेड़ो से क्या लाभ जिनकी न तो छाया होती हो, न ही उनके फल-फूल लगते हो। ये विदेशी वृक्ष भारत में मत आने दो।
- आज फूल तो है पर सुगन्ध नहीं। फूल की शोभा तो सुगन्ध से ही होती है, भूल गये हैं।
- विदेशी फूल भी महकता नहीं और भारत का हिंगड़ा भी महक फैला देता है जो सब पचा देता है, भूख खुल जाती है, दिमाग ठीक हो जाता है।
- बच्चों को ड्रग्स के सेवन से बचाना है। पंजाब जहाँ कृषि में सबसे धनाढ्य, सेना में जवान सबसे अधिक, पांच नदियाँ (आब) बहती हैं तो पंजाब आज नशे में सर्वाधिक अग्रणी है। सभी राज्य ऐसे तो भारत नशीला राष्ट्र होगा सुशीला नहीं। न शीला इति नशीला।
- जैसे राख को फूंक से हटा दें तो अग्नि प्रज्वलित हो उठती है और राख पर राख डाल दें तो अग्नि का पता ही नहीं चलता आज भारत पर ऐसी ही राख पर राख चढ़ती जा रही है इसलिए स्वाभिमान की फूंक मारें।
- स्वाभिमान से ही धर्म की रक्षा एवं प्रजा की सुरक्षा होनेवाली है। अपने भीतर के स्वाभिमान को जागृत करें।
- नदी पर बांध बांधो नहीं उसे काम में लो अर्थात नदीयों को आपस में जोड़ दो ताकि सर्वत्र हरियाली हो जाये।
- खून गरम होगा तभी रक्त संचार होगा तभी स्वाभिमान जागृत होगा, तभी युद्ध वाले तैयार होंगे, अहिंसा की रक्षा हो सकेगी। ०००

२७-१-२१ धर्मध्यान की सच्ची परिभाषा बुधवार

जिस प्रकार कोई अपराधी गलती के कारण कैद में बंद कर दिया जाता है वह कैदी कहलाता है उसी प्रकार कर्म बंध के कारण हम-सभी संसारी भी कैदी ही है उनसे भी ज्यादा पश्चाताप होगा तभी इस शरीर रूपी जेल से मुक्ति मिलेगी।

जैसे किसान समय पर बीज बोता है योग्य खाद-पानी देता है जब फसल आती है तो मेड़ पर से सिंहावलोकन करके प्रसन्न होता है उसी प्रकार देश का राजा होता है जिसे प्रजा ने चुना है किन्तु प्रजा की उन्नति से ही उसे प्रसन्नता होती है।

विद्या-वाणी

- जिसके आश्रित परिवार है यदि उसको क्षति पहुँचा दी तो पूरे परिवार को ही कब्र में धकेल दिया।
- जेल में रहने वाले कैदी एक-दूसरे को देख मद्य-मांस-मधु का त्याग कर रहे है और आप उसी के सेवन की ओर भाग रहे हैं।
- आपका प्रभाव कम पड़ेगा, कैदी का प्रभाव ज्यादा पड़ता है।
- मैं जेल नहीं जा पाता हूँ पर कैदी कह रहे है - बाबा कब आओगे तो हमने उपस्थिति में जवाब दे दिया - भले दूर हूँ, निकट भेज देता, अपनापन।
- अब कैदी भी हथकरघा को अपनाकर अच्छे नागरिक बनने जा रहे हैं, जो अच्छे नेता का चुनाव करेंगे।

- राष्ट्र की उन्नति देख प्रसन्न होना भी धर्मध्यान है, केवल आसन लगाकर बैठना ही धर्मध्यान नहीं बल्कि रावण की तरह आसन लगा राम के वध की सोचना कभी भी धर्मध्यान नहीं हो सकता।
- अच्छे भावों से स्व-पर के हित में सोचना सही धर्मध्यान है!
- मोक्षमार्ग में भी वही होता है जो कैदी कर रहे हैं, अर्थात् किये गये [illegible] का निर्मूल नाश हो इसके लिए बार-बार पश्चाताप करना।
- गलती पर पश्चाताप करना धर्मध्यान है।
- स्वयं के लिए रोना आर्त-रौद्र ध्यान है जब कि दूसरों के कष्टों पर रोना / आँखों में पानी लाना धर्मध्यान।
- अब तिहाड़ जेल में कैदी कहना भूल रहे हैं, ये जेल नहीं अब एक कारखाना है जहाँ सब मिलकर भाँति-भाँति के वस्त्र आदि का निर्माण कर रहे हैं।
- पहले रोटी कम मिलती थी - परिश्रम का ये प्रभाव की आग्रह के साथ खिलायी जाती है।
- मोहमार्ग से जो भी उत्पन्न हो गया, उसे समाप्त करना ही मोक्षमार्ग है।

० ० ०

- "एक-एक क्षण में भी बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है और बहुत दिन रहकर भी बहुत कुछ गंवा सकते हैं।"
- "सामूहिक कर्म का उदय आता है तो रेखायें भी एक सी हो जाती हैं।"

24-7-91 मत डरो पूरक परीक्षा से गुरुवार

"जिस प्रकार कच्चे आम पर पत्थर मारने पर भी वह टूटता नहीं और वही आम जब पक जाता है तो हल्के से हवा के झोंके से भी नीचे आ जाता है इसी प्रकार परिपक्व अवस्था होने पर घर छोड़ दिया जाता है। जो पका नहीं वह घर से अभी चिपका हुआ है।"

"वीतराग पथ की परीक्षा में आज तक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जो एक बार में पूरे अंक ले आया हो सभी पूरक परीक्षा देकर ही उत्तीर्ण हुये हैं, चाहे तीर्थंकर भी क्यों न हो। छठवें-सातवें में एक हजार बार ऊपर-नीचे होने पर ही फार्म भरने की अनुमती होती है। अतः पूरक परीक्षा से डरो नहीं हाँ प्रमाद करो नहीं, कर्त्तव्य पर ध्यान रखो।"

विद्या-सूत्र

o राग रूपी चिकनाहट इतनी सख्त है कि वह वीतरागता को दृष्टि से हटा देती है।

o इस चिकनाहट को जिसने चिपकाया है वही दूर कर सकता है, दूसरा कोई भी साथ नहीं दे सकता। वीतराग पथ में कोई भी नाते-रिश्ते नहीं चलते।

o आदिनाथ भगवान भी हजार वर्ष तक कठिन तपस्या करते रहे, पूरक परिक्षा देते रहे तब जाकर कहीं नसैनी पर चढ़ सके। इस पथ में घुसखोरी नहीं।

- सतना वाले जो त्याग किये गिना रहे थे, कितना रखा है वो क्यों नहीं बता रहे।
- तीर्थंकर भी लज्जा के साथ पूरक परीक्षा देते हैं।
- पहले पूरक परीक्षा नहीं होती थी, कृपांक के साथ उसे अगली कक्षा में भेज दिया जाता था।
- इतना अवश्य है इस वीतराग पथ की परीक्षा में किसी का भी सहयोग नहीं फिर भी रात-दिन आज भी केवलज्ञान एवं मुक्ति को प्राप्त जीव हो रहे हैं।
- जिसका मोह का संबंध भीतर-बाहर से पक चुका है वही इस सौभाग्य श्री पा सकता है।
- दान के माध्यम से ही नये क्षेत्रों का निर्माण एवं पुराने क्षेत्रों का संरक्षण, जिर्णोद्धार हो पाता है। लाखों लोग तीर्थ यात्रा कर धर्मध्यान करते है।
- पुरा क्षेत्र बनाना एक तरफ एवं पंचकल्याणक करना एक तरफ तथा पंचकल्याणक करके कलश चढाना वो तो सबसे ही महत्वपूर्ण है।
- पीला पत्थर नहीं कहो, पीला संगमरमर कहो। स्वर्णोदय तीर्थ अन्तर्राष्ट्रीय स्थल पर बना रहे हैं। सभी लोग तन-मन-धन से लगे है। अन्तर्राष्ट्रीय ही आयोजन भी होगा।
- बुन्देलखण्ड में बडे-बडे तीर्थों का निर्माण होना यह यहाँ के श्रावकों द्वारा मोह के त्याग का ही परिणाम है।
- हमें भी तत् संबंधी लाभ तो होता ही होगा परन्तु वह लाभ भी हम आपको ही बांटते जा रहे ताकि हम भी जल्दी ही प्रभु बनें।

o o o

२९-१-२१। संसार एक जादू का खेल है शुक्रवार

"जिस प्रकार जादुगर आपकी आँखो के सामने-सामने ही मिट्टी से चांदी-सोने के सिक्के बना देता है, ये बात अलग है कि कुछ देर बाद वही जादुगर चवन्नी-अठन्नी हेतु हाथ फैलातारहता है इसी प्रकार संसार में प्रत्येक आत्मा परमात्मा बनने की शक्ति रखता है किन्तु मोह के वश हो दर-दर का भिखारी बना बैठा है। कर्म-सिद्धान्त को न जानने से ऐसा होता है।"

आगम - सूत्र

- संसार में मोह, अज्ञान के कारण सुख नहीं होते हुये भी सुख स्वीकारते है। जो नहीं सुनना वह भी सुनना पड़ता है।
- प्रश्न को गहराई तक ले जायें तो कॉफी हद तक आप स्वयं ही उत्तर निकाल सकते है।
- देवलोक में जब आयु के अन्त के ६ माह शेष रहते हैं तब माला मुरझा जाती है, इन्द्र की भी आज्ञा भंग होने लगती है तब उसे मात्र खाई नजर आती है। अभी तक खूब भोग भोगे अब मरकर एकेन्द्री होना है। इसलिए बाहरी चमक-दमक पर मत इतराओ।
- आँखो में पानी आना ही रोना नहीं है, कुछ भी अच्छा नहीं लगना ये भी रोना है। अरण्य रोदन है।
- मिट्टी तो सोना बनती है पर सोना भी मिट्टी (कोयला) हो जाता है इस अपने भीतर अच्छे से बैठा लो।

- इन्द्रिय ज्ञान से सुख है ही नहीं इसीलिये बार-बार कहा जाता है शांत बैठ जा। अतीन्द्रिय ज्ञान किसी भी ज्ञान का विषय नहीं है, मात्र अनुभव का विषय है।
- काल-चक्र कहा जाता है लेकिन काल के द्वारा हम चक्कर में हैं। सब रुक सकता है लेकिन काल नहीं।
- पूजा में प्रतिदिन कहते हो - जादू-टोना, सम्मोहन आदि। आप सुनाते हो। मैं सुनता हूँ, सुनना आवश्यक है लेकिन कभी भी स्वीकारता नहीं।
- मिथ्यात्व के कारण श्रुतज्ञान, मतिज्ञान भी मिथ्या हो जाते हैं, अवधिज्ञान भी चपेट में आ जाता है लेकिन दर्शनोपयोग न मिथ्या होता है न ही सम्यक्त्व। उस पर किसी का प्रभाव नहीं। इसीलिये ज्ञान को दर्शनवत् बनाओ।
- कर्तृत्व, स्वामित्व एवं भोक्तृत्व बुद्धि से बचें। कर्मों का जो वैचित्र्य है उसे ध्यान में रखें।
- विषयों के आकर्षण-विकर्षण, उत्कर्षण - अपकर्षण से दूर हो जा तभी अतीन्द्रिय सुख की ओर दृष्टि जा पायेगी।
- क्यों-कैसे आदि प्रश्न मत पूछो स्वीकार कर लो बस हो रहा है तभी शान्त बैठ पाओगे।
- जब ज्ञान आत्मा का स्वभाव है तो ज्ञेय तो उसमें आयेगा ही, आँखें बन्द करने पर भी दिखेगा, पुरुषार्थ भी सफल नहीं, कथंचित् हो सकता है, इसलिए स्वीकार करना सीखो।
- होशियारी थोड़ी देर चल सकती है, ज्यादा देर नहीं इसलिए शांत बैठो, आँखें-कान बंद करने का थोड़ा सा पुरुषार्थ करो जैसे घर में बूढ़े दादाजी।

30-1-21 फास्ट लाइफ मतलब जल्दी-जल्दी मरना शनिवार

जिस प्रकार किसान यदि समय से पहले फसल काट लेता है तो उसका दाना पतला रह जाता है, आटा कम होता है उसमें नमी रहने से इल्ली आदि से खराब हो जाती है, स्वाद भी अच्छा नहीं रहता। इसी प्रकार यदि कोई भी कार्य में जल्दी करेंगे तो सफलता नहीं असफलता ही हाथ लगेगी।

जिस प्रकार मुख में ग्रास का चर्वण करके लालारस के साथ लेने से ग्रास शक्तिवर्धक एवं पाचक होता है उसी प्रकार जो कार्य जितना समय मांगता है उसे उतना देना चाहिए अन्यथा निराशा देखनी पड़ती है।

विद्या सूत्र

- तद् भाव: परिणाम: = जिसका जैसा भाव वैसा ही परिणाम होता है। हल्की वस्तु सस्ती रहती है अच्छी वाली महंगी।
- समय से पहले और भाग्य से अधिक कभी भी किसी को भी नहीं मिलता है।
- विदेशी फल-फूल-सब्जी दिखने में आकर्षण, बड़ी-बड़ी किन्तु गुणों में भूसा की तरह न ही गन्ध और न ही उनमें शुद्ध स्वाद है बल्कि रुग्णता में ही कारण है।
- Fast life नहीं अब Fast मृत्यु की ओर भाग रहे हैं। जल्दी-जल्दी मरना ही Fast life है।
- पहले के लोग Fast नहीं थे इसीलिये पूर्णायु होकर जाते थे।

- कर्मों का संवर एवं निर्जरा करने वाला कभी भी Fast life नहीं चलता, हाँ Fast करता है मतलब उपवास करता है।
- यदि पेट खराब भी है तो एक आध Fast (उपवास) करते ही सब ठीक-ठाक हो जाता है।
- किसी से पूछो क्या खा रहे हैं? वह कहता है-जी गम खा रहे हैं। ये हालत है वर्तमान की। गम मतलब दुःख भोग रहे हैं।
- पहले एक बार खाकर भी स्वस्थ रहते थे आज कई बार खाकर भी दवा खा रहे हैं।
- अन्तिम समय तक दवा खाते हैं, अनेक प्रकार की दवाई एवं नलीयों के बीच उसके जीवन का अन्त होता है।
- जो छह आवश्यक का पालन करेगा वह कभी अस्वस्थ होगा ही नहीं।
- संतुष्टि यदि चाहते हो तो जीवन में संतोष धारण करो।
- वर्तमान में तो दुसरी प्रतिमा वाला भी 16वें स्वर्ग स्वं श्रमणे महाराज भी वहीं तक जा सकते हैं अतः प्रतिमा ग्रहण करो ताकि जीवन में संतोष आ जाये।

o o o

Notes

- किसी वरिष्ठ अधिकारी ने कहा - हम विदेशी शिक्षा नीति को आज तक ढो रहे हैं हमने अर्थ निकाल लिया इसीलिए ढोर है।

3-7-21 आरोग्य ही बढ़ाता वैराग्य रविवार

0 आरोग्य के अभाव में वैराग्य कैसे दृढ़ रहेगा अर्थात् नहीं रहेगा।

0 माँसाहार का सेवन, नशीली वस्तुओं का प्रयोग, असंयमित जीवन शैली से आरोग्य कोसों दूर चला जाता है।

0 ध्यान के लिए बाग-बगीचा, नदी किनारा, शुद्ध हवा एवं प्रकाश जहाँ हो वह स्थान शास्त्रों में बताया।

0 रात्री भोजन त्याग से इस शरीर रूपी मशीन (यंत्र) को 12 घण्टे के लिए विश्राम मिल जाता है।

0 आँगन में नीम का वृक्ष हो तो दिन-रात मुफ्त में प्राणवायु देता रहता है, आप ऑक्सीजन खरीद रहे हैं।

0 फलदार एवं छायादार वृक्षों से पर्यावरण दूषित होने से बच जाता है।

0 मानसिक रोगों से भी बचने के लिए सर्वप्रथम खान-पान एवं रहन-सहन सुधारने की आवश्यकता है।

0 यदि खान-पान गलत है तो जन्म से ही चश्मा अर्थात् आँखे आदि सभी अंग कमजोर ही रहते हैं। आज छोटी-छोटी उम्र में भयंकर बिमारीयाँ देखने एवं सुनने को मिल रही है।

0 धन का ध्यान नहीं धर्मध्यान करोगे तो धन तो अपने आप ही आ जायेगा।

जिससे आरोग्य रहे उन्हें अपनाये ताकि वैराग्य की वृद्धि हो।

0 0 0

1-2-21 कथा होती है स्वस्थ भूख सोमवार

एक बुढ़िया थी, संलेखना के भाव थे किन्तु वृद्धावस्था में भूख और तेज हो गयी। भूख-भूख चिल्लाने लगी। उसे अच्छे पकवान आदि दिये जाने लगे, धीरे-धीरे भूख शांत हो गयी। उसके संलेखना के संस्कार पुनः जाग्रत हो उठे घरवालों से कहा, रोज-रोज पकवान खाना ये ठीक नहीं। अब उपवास भी करने लगी, शरीर तो कृष हो ही गया था। इस तरह उसकी उत्तम समाधी हुयी।

विधी - सूत्र

- मरना सबको है पर रोते हुये नहीं हँसते हुये वीर मरण से मरना है ताकि मृत्युंजयी बन सके।
- ऐसा आहार कभी न लें जिससे विकृति बढ़े।
- यह शरीर जितना काम करता है उतना ही इसको खिलाओ, यह तो रात-दिन खाना चाहता है लेकिन स्वस्थ भूख होगी तो निरोग रहेंगे।
- अन्त समय तक यह शरीर भोजन करना चाहता है इसी लिये आचार्यों ने कहा "चतुःसंज्ञा ज्वरातुराः" चार संज्ञा ज्वर के समान है।
- जिस प्रकार अग्नि में जितना ईंधन डालो उतनी ही वह संतप्त होती है चार संज्ञा (आहार, भय, मैथुन, परिग्रह) का भी यही हाल है। इसलिए आचार्यों ने इनकी चर्चा का भी प्रत्याख्यान (त्याग) कहा। चार विकथा से बचने को कहा।
- आपने आज तक बहुत कुछ खा लिया, दूसरों का माथा भी खा लिया। अब तो मर्यादा बनाओ तभी सद्गति में जाओगे।

000

२-२-२। देव भी पानी भरते हैं मंगलवार

जिस प्रकार माँ गर्भस्थ शिशु का निर्वाह करती हैं फिर भी उसका निर्वाह होता है। वह ध्यान रखती है कि मुझे क्या लेना, कितना लेना इत्यादि ताकि शिशु पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े इसी तरह धार्मिक व्यक्ति के लिए देव भी निर्वाह करते हैं। सहायता करते हैं, युं कहे वे सदैव ऐसे लोगो के चरणों में नतमस्तक रहते हैं। बुलाना नहीं पड़ता बल्कि वे तो स्वयं सेवा करके अपने आप को धन्य मानते हैं।

विधा - सूत्र

- देवों में शारारिक - मानसिक रोग नहीं एवं कषाय की मात्रा बहुत क्षीण रहती है।
- जिन देवों के अन्दर में करोड़ो देव सेवा - चाकरी करते रहते हैं वे भी आपसे कुछ नहीं चाहते फिर भी आपके संयम धर्म की अनुमोदना करने में तत्पर रहते हैं।
- मंगल वातावरण बनेऐसी वस्तु का नाम ही धर्म है।
- पंचेन्द्रिय विषयों के प्रति रवानापूर्ति करो अर्थात् पेट्रोल डालकर गाड़ी को काम में लेते हैं।
- निराबाध जीवन हेतु धर्मध्यान ही एक माध्यम है, इसी से देवता भी आपके लिए सुख - सुविधा देने को तत्पर रहते हैं।
- स्वर्ग मे सब अनुकूलताये हैं पर संयम तप नहीं, धरती पर प्रतिकूलता होने पर भी धर्म - ध्यान में लगा रहता है।

o धरती पर ही चार पुरुषार्थ है, बल्कि मनुष्य गति में ही चारों पुरुषार्थ होते हैं अन्य तीन गतियों में नहीं इसीलिये देव अपने को कमजोर मानकर ही आपकी सेवा हेतु तत्पर रहते है।

o जैसे जवांई घर का मेम्बर नहीं वैसे ही देव भी कभी आपके घर के मेम्बर नहीं बन सकते।

o देवों को भक्त रूप में ही स्वीकार करना, कभी भी भगवान रूप में नहीं। आप तो संयम ग्रहण कर सकते है वे तो वह भी नहीं कर सकते।

o आप रात्रि भोजन त्याग कर सकते है, वे एक समय का भी त्याग नहीं, विषयों में ही उलझे रहते हैं।

o ये ध्यान रखना - आप स्वयं अपना काम करें, दूसरो से काम करवाना ठीक नहीं।

o देवता आपको नमस्कार करेंगे क्योंकी आपके भीतर धर्म है (जस्स धम्मे सया मणो) किन्तु आप बुलाना नहीं, निदान भी नहीं करना।

o धर्म की महिमा देखो - देव भी देखते हैं ये बाहर कब जाते है झाड़ लगाकर पूरा कमरा साफ, सुगंधित कर देते है। इसीलिए वे देव भी जिसके हृदय मे दया धर्म है उनके यहां पानी भरते है। वैभव भी उन्ही का दास रहता है।

ooo

o आयुकर्म के बिना एक सेकेण्ड भी कोई जिंदा रह नहीं सकता।

3-2-21 उठ जाग मुसाफिर बुधवार

"जिस प्रकार नींद में व्यक्ति के कान, आँख, नाक खुले रहते हैं परन्तु कान से सुन नहीं रहा आप चाहे जो बोलो, नाक से गन्ध नहीं चाहे इत्र ही क्यों न हो कुछ लोग आँख खुली करके भी सोते हैं। इसी प्रकार मोह रूपी नींद में संसारी प्राणी सोया रहता है उसे सतगुरु समझाते हैं किन्तु समझ में नहीं आती।"

विद्या - सूत्र

- प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी कठिन प्रश्न से डरते नहीं बल्कि उसे पहले हल करते हैं।
- दिन में सोने से बहुत कर्म का बंध होता है, जब उदय-उदीरणा होगी तब रोने से क्या होगा।
- कर्मों की ऐसी मार पड़ती है, जिससे कोई बच नहीं सकता, चाहे आज का जन्मा बालक हो या मरणासन्न वृद्ध हो, पढ़ा लिखा हो या अपढ़ सब उसकी चपेट में आते हैं इसीलिये सम्यग्दृष्टि/भद्रजीव बचने का पुरुषार्थ करता है।
- भगवान तो वीतरागी हैं, आपको ही देखते रहेंगे ऐसा मत सोचना। उन्होंने तो उपदेश दे दिया करना है तो कर लो। जैसे पिताजी के रहते बात नहीं मानी तो उनके जाने पर बहुत पश्चाताप करते हैं किन्तु अब पछताये क्या होत?
- आप इतने व्यस्त हैं कि अच्छी बात सुनाने पर भी सुनते नहीं, न ही समझ पा रहे हैं। नाती को पिताजी नहीं दादा, पड़दादा समझा रहे हैं। समय पर समझ लो अन्यथा पछताओगे।

5-2-21 भावों का कमाल गुरुवार

"जिस प्रकार भगवान की पूजा करने समोशरण में बड़े-बड़े इन्द्र लोग दिव्यसामग्री के साथ जा रहे हैं, एक मेंढक भी कमलपांखुड़ी मुख में दबा उन्हीं प्रभु की पूजन को जा रहा है। जिस प्रकार बड़ी-बड़ी लाइट के प्रकाश में बच्चे पढ़ते हैं पर एक वह जो दिपस्तम्भ के प्रकाश में पढ़कर प्रथम स्थान पर आता है। जिस प्रकार राम दूसरे के कहने में आकर सीता की अग्नि परीक्षा करते हैं किन्तु सीता कभी भी किसी को दोष नहीं देती है जिस प्रकार महिलायें अथवा अप्सरायें नृत्य करती हैं उससे कहीं अधिक सौधर्म इन्द्र ताण्डव नृत्य करता है और जिस प्रकार मुनिमहाराज चक्रवर्ती, बाहुबली आदि के घर न पड़गाहन देकर राजा श्रेयांस के घर पर पड़गाहन देते हैं उसी प्रकार हमें भी अपने भावों की दिन-रात समीक्षा करते रहना चाहिए। इन सभी उदाहरण से यही निष्कर्ष निकलता है कि तद्भाव: परिणाम: जो भाव है वही परिणाम है।"

विद्या-रत्न

० सौधर्म इन्द्र सब काम करता है, गर्भ से लेकर मोक्ष कल्याणक तक में इसी द्वारा सब क्रियायें सम्पन्न होती हैं, सारे देव उसी को सर्वेसर्वा मानते हैं, ताण्डव-नृत्य वही करता है किन्तु इतना सब कर सकता है/करता है लेकिन भगवान/मुनिमहाराज को आहारदान नहीं दे सकता है। अर्थात उसके भावों की तुलना में कर्मभूमि के मनुष्य के भावों की उत्कृष्टता कितनी है?

○ भावों का तोल-मोल अपने आप में महत्वपूर्ण है।

○ आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने सेठ-साहुकार को नहीं, एक मेंढ़क को याद किया-भक्ति के विषय में।

○ सौधर्म इन्द्र हरकोई नहीं बनता, पूर्व में कर्मभूमी में रत्नत्रय का पालन करने वाले ही इस तरह का पद प्राप्त कर पाते हैं।

○ सौधर्म इन्द्र भी उन रत्नत्रयधारी के चरणों में सदैव नतमस्तक रहता है। दर्शन करते ही मन प्रमुदित हो उठता है।

○ राम का भी पारा गरम हो सकता है लेकिन सीता का पारा सदैव ठण्डा ही रहता है। यही तद्भाव: परिणाम: है। परिणाम लेना नहीं, देना ही पड़ता है।

○ जो गरम है उसे ठण्डा करो, ठण्डे को सुगन्धित करो, सुगन्धित को भी स्वच्छ हवा में रख दो फिर तो कहना ही क्या? पारा ठण्डा हो ही जायेगा।

○ जैसे अनुष्ठान आदि में सकलीकरण संकल्प करते हैं- "सौधर्मोऽस्मि" वैसे ही व्रती-महाव्रती को सदैव संकल्प दोहराना चाहिए। "अहम् श्रमणोऽस्मि"

○ द्रव्य अपेक्षा गरीब भी रहा आये भाव अपेक्षा तो सदैव अमीर ही रहना चाहिए।

○ राजा श्रेयांस का इतना गाढ़ा पुण्य था- सब लोग देखते रह गये। दानतीर्थंकर का पद और सीधा हुआ मुहूर्त अक्षय तृतीया बन गयी वह दान की तिथी।

○○○

5-2-21 बल मिलता Balance से शुक्रवार

"जिस प्रकार पतंग उड़ाना मात्र खेल नहीं है, बड़े ही यत्नाचार पूर्वक पहले उसे बनाया जाता है फिर उसमें तंग डालते हैं अर्थात बीच में बेलेन्स बनाकर धागा इस तरह से बेंगल बनाकर बांधा जाता है नहीं तो धागा तो समाप्त होगा ही, पतंग भी निकल जायेगी, ठीक इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि मात्र खेल नहीं खेलता सम्यक्त्वाचरण चारित्र रूपी बेलेन्स भी रखता है। सम्यक्त्वाचरण चारित्र के अभाव में सम्यग्दर्शन कहीं भी लुट सकता है। गिर सकता है।"

विद्या - सूत्र

- सम्यग्दृष्टि अविरत है अभी किन्तु जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन आते हैं, दृष्टि में विशालता आ जाती है, व्यवहार में कुशलता आ जाती है।
- सम्यग्दृष्टि अपने सम्यग्दर्शन रूपी मणी को सदैव सुरक्षित रखता है चाहे जिस भी गति में रहे किन्तु उसका श्रद्धान कहीं बिगड़ न जाये, ऐसा ध्यान रखता है।
- पहले पंचायत राज था- देहरी उतरते ही न्याय मिलता था, आज देहली में जाने के उपरान्त भी न्याय नहीं। सदियाँ गुजर जाती हैं पर निर्णय नहीं कर पाते।
- लक्ष्मी सब जगह पहुँच गयी यदि सर्वत्र सरस्वती पहुँच जाये तो कल्याण हो जाये।
- सम्यग्दृष्टि का सम्यक्त्वाचरण चारित्र राख से ढकी आग की भांति है।

०००

6-2-21 आओ करें जीवन का मूल्यांकन शनिवार

"जिस प्रकार पक्षी अपना घर (घोसला अथवा नीड़) स्वयं बनाते है। बच्चे को भोजन लाकर खिलाते हैं लेकिन पंख आते ही स्वयं ही धीरे से नीचे कर देते है, वह बच्चा पंख फड़फड़ाते हुये आसमान में उड़ने लग जाता है इसी तरह मनुष्य जीवन होना चाहिए तभी वह व्यवस्थित होगा एवं मूल्यांकन भी तभी होगा। जैसे भोजन अथवा पूजन की थाली व्यवस्थित लगाते हो वैसे जीवन को व्यवस्थित क्यों नहीं करते हो? उद्देश्य के अभाव में मूल्यांकन नहीं होगा।"

विचार-सूत्र

- पढ़-लिखकर भी सरकार से काम मांग रहे हैं, फिर पढ़ाई का उद्देश्य क्या? ये ही ज्ञात नहीं है कि मुझे करना क्या है?
- भूख लगी है तो उत्पादन करो। श्रम करो। ऐसी पाठशाला में मत जाओ जो प्रयोग से दूर हो।
- माता-पिता को भी बच्चों को उसी विद्यालय में भेजना चाहिए जो जीवन की समस्याओं का हल कर सके।
- श्रम करके खायेगा तभी पचेगा अन्यथा बचेगा।
- जीवन में कब-क्या करना है ये विद्यालय जीवन में ही सीखाया जाता था। आज इसका अभाव है। इससे अच्छा तो दुकान पर बैठता या ढोर चराता तो जीवन तो अच्छे से चला सकता था।

- आगे-पीछे का ज्ञात करके सही मूल्यांकन करना चाहिए।
- व्यक्ति चाहता तो बहुत कुछ है, चाहने से नहीं साधना से मिलता है।
- मोहफल संसार है तो मोक्षफल संसार से अतीत। एक में दुःख ही दुख है दूसरे में अपार सुख।
- जीवन का मूल्यांकन नहीं करोगे तो कुछ भी हासिल हो ही नहीं पायेगा। कसरत खूब करनी पड़ेगी।
- किसान के कार्य में ही कसरत हो जाती है पहलवान अलग से दण्डबैठक लगाता है। पहलवान को भोजन देर मिले तो रोने लगेगा, किसान खेत में श्रम करके खाता है। किसान का पाचन अच्छा पहलवान मात्र खाऊ है। किसान स्फूर्ति वाला होता है, इसे खाने के लिए भी जरूरत पड़ती है।
- किसान की तरह समय पर भोजन, योग्य भोजन एवं भूख लगने पर ही भोजन करें।
- मेहनत करोगे मुख मीठा रहेगा, मेहनत के अभाव में पाचन नहीं मुख कड़वा रहेगा।
- मेहनत एवं पाचन से मुख पर तेज टपकता है, आप जब पाउडर लगा लगाकर भी तेज नहीं।
- बाजार में तेजी नहीं मन्दी है किन्तु खून में तेजी है। खून में तेजी से खून जलता है।
- खून का जलना कषाय का प्रतीक है तो मुख पर तेज का टपकना धर्मध्यान।
- रवि की तरह उदयाचल-अस्ताचल एवं मस्ताचल बनो।

प्रातः

7-2-21 मार्ग हल्का बनने का रविवार

जिस प्रकार अकवा का फूल हल्का होने से हवा में उड़ता रहता है किन्तु थोड़े से गीले के सम्पर्क में आते ही वह अर्कतूल वहीं चिपक जाता है इसी प्रकार मोही संसारी प्राणी वस्तुओं से चिपकते ही अपनी स्वतंत्रता को खो देता है। आत्मा का स्वभाव भी अर्कतूल की तरह ऊर्ध्वगमन है।

जिस प्रकार अग्नि, ऋण एवं व्रण (घाव) की छोटी सी कणिका भी कष्टदायक है उसी प्रकार कषाय को भी कभी कम न समझे। थोड़ी सी कषाय भी दीर्घ संसारी बना देती है।

विद्या-सूत्र

- आप धन को अपना मानते हो, लेकिन धन (लक्ष्मी) कभी भी आपको अपना नहीं स्वीकारती। वह तो आज यहाँ तो कल वहाँ। आपने स्वभाव का त्याग किया।
- वस्तु आपसे नहीं चिपकी आप वस्तु से चिपके हैं।
- मनुष्य जीवन गीलापन को सुखाने को मिला है। पूरा सूख गया तो संसार से पार हो गये।
- परिचित्त विरतः इति परिग्रह = जो चारों ओर से चिपका है उससे दूर हट जाना। इसका विशेषण है समद्धी - मोह से विग्रह होता है परिचित्त में, तो समद्धी हो जाते हैं।
- कर्म एक आवली काल के बाद ही उदय में आ सकता है तुरन्त बाधा नहीं इसलिये आबाधा कहते हैं। जैसे ही चोट के घाव पर जब पुनः लगती है तो बहुत दर्द होता है बाधा होती है।

मध्याह्न

-२-२। अपने मत को दान बनाओ शनिवार

"बात 2500 निर्वाण महोत्सव की है उस समय प्रकाश सेठी गृहमन्त्री थे। गुरुजी भी थे, विनोबा भावे भी थे। उस समय चम्बल के जंगल में डाकू जो थे उन्होंने आत्मसमर्पण करने की सोची। आगे कौन हो? एक आगे आया धीरे-धीरे सभी ने हथियार फेंक दिये। जीवन ही बदल गया उनका। पहले तो लोग डरते थे उनसे किन्तु बाद में सब सामान्य हो गया। खुली जेल से भी बाहर छोड़ दिया गया।"

अनमोल-वचन

- मतदान से ही लोकतंत्र का संरक्षण हो सकता है अन्यथा नहीं।
- हमारी पत्रिका यह जनता है, बिना पाई के ही सब जगह फैला देते हैं, कभी-कभी तो दिन में दो-तीन बार भी हो जाता है।
- अनिवार्य प्रश्न के बिना अन्य सारे प्रश्नों का क्या लाभ, अंक नहीं मिलेंगे।
- किसान मतदान देता है, पढ़े-लिखे होने पर भी नहीं मतदान देते तो क्या फायदा पढ़े लिखे होने का।
- भारत में लोकतंत्र चलाना कठिन है, चुनाव कराना तो सरल है।
- ताकत हो तो ताकत की कोई आवश्यकता नहीं।
- प्रश्न हमेशा दूसरों का होता है पर उत्तर तो अपना ही होता है।
- व्यवसाय के लिए पत्रिका चलायेंगे तो राष्ट्र का उद्धार नहीं होगा।
- जैनियों का इतिहास गौरवशाली था, अध्ययन तो करो। देव के पास कितना है इसी पर दृष्टि रहती है।
- हृदय परिवर्तन का अभियान लोकतंत्र की रीढ़ है। ० ० ०

8-2-21। मैली चादर को साफ करो सोमवार

"जिस प्रकार वस्त्र पर लगी गंदगी साबुन-सोडा के माध्यम से दूर करते हो उसी प्रकार आत्मा पर लगी मिथ्यात्व के कारण कीट्ट-कालिमा रत्नत्रय रूपी साबुन-सोडा से दूर होती है। इसके बाद जैसे वस्त्र को धोने के पास प्रेस करने से चमक आ जाती है वैसे ही ध्यान रूपी अग्नि से प्रेस आत्म तत्व में और निखार लाया जाता है, निर्दोषता आती है।"

विद्या-सूत्र

- जैसे कपड़े को निचोड़कर शिला पर पछाड़ते थे तब जाकर मल दूर होता था ऐसे ही आत्मा को पवित्र करने के लिए पछाड़ो।
- पहले वस्त्र गीला फिर साबुन सोडा तथा अन्त में फिर पानी से निकालते हैं आत्मा को भी पहले गीला करो। फिर रत्नत्रय धारण कर पाओगे तभी निर्मोही बन पाओगे
- आज ध्यान की तो सब बात करते हैं, रत्नत्रय की बात कोई नहीं करता। ध्यान के शिविर लग रहे हैं?
- पूजन के अष्ट द्रव्य पूरे चाहिए वैसे ही पानी पूरा चाहिए।
- रत्नत्रय द्वारा मोह को अलग करें तभी बात बनेगी अर्थात् सर्वप्रथम मोह का त्याग करो।
- ध्यान रखो - माता-पिता कुल परम्परा से हैं, आपकी लक्ष्मी नाना (नोट/धन) जी घर रहती है, नाना जी घर की कुल परम्परा में नहीं आते।

१-२-२। आओ सीखें भ्रामरी वृत्ति मंगलवार

जिस प्रकार भ्रमर पुष्प को बिना हानि पहुँचाये उसके रस का सेवन करता है, उसी प्रकार साधु अथवा श्रमण श्रावक के घर जाकर अपनी चर्या को सम्पन्न करते हैं। जैनागम में इसे भ्रामरी वृत्ति कहा गया है।।

विधा सूत्र

० जहाँ पर गंध गुण है तो वहाँ शेष तीन वर्ण, रस एवं स्पर्श भी विद्यमान हैं। क्यों प्रत्येक पदार्थ में ये चारों गुण पाये जाते हैं।

० फूल के चारों ओर कांटे भी होते हैं किन्तु भ्रमर उन्हें न देख अपने इतर की ओर ही ध्यान रखता है।

० फूल की सुरक्षा कांटो से ही होती है। इसलिये कांटो से कभी भी डरो नहीं।

० चौके में जाकर श्रावक सब देना चाहता है पर साधु थोड़ा सा लेकर भी श्रावक को प्रसन्न करते हुये पुनः लौट आते हैं।

० चौके में इतनी उमंग-उत्साह रहती है कि मुझे देना क्या है, यही भी श्रावक भूल जाता है।

० जिसका जो इरादा होता है, वही वह प्राप्त करना चाहता है, प्राप्त कर लेता है।

० श्रावक इसी उल्लास-उत्साह से मुनिमहाराज से भी ज्यादा निर्जरा कर लेता है, कदम बढ़ जाये तो पहले भी मुक्ति पा लेता है।

० धार्मिक क्षेत्र में विनम्रता के साथ चलें, दिन-हीन होना नहीं तथा अभिमान कभी करना नहीं। तभी मुक्ति मिलेगी। ० ० ०

10-2-21 आओ जानें परम शत्रु-परम मित्र को बुधवार

जिस प्रकार अरहट (घटीयंत्र) के द्वारा किसान एक घड़ा खाली करता है तो दूसरा उसी समय भरता भी है, ऐसे ही खेल संसारी प्राणी खेल रहा है, एक कर्म खाली तो दूसरा बांध लेता है। बैल को रोक दो तो रहट वहीं रुक जायेगी।

जिस प्रकार परीक्षा में विद्यार्थी जो लिखता है वैसे ही अंक प्राप्त करता है उसी प्रकार जैसा कर्म बांधोगे वैसे ही उदय में आयेगा।

जिस प्रकार सर्प से आप डरते हैं, सर्प भी आपसे डरता है क्यों कि दोनों ही तत्त्व दृष्टि से विमुख हैं। जीव होते हुये भी पुद्गल पर ही दृष्टि ले जा रहे हैं। वास्तव में न कोई शत्रु है तथा न ही कोई मित्र हाँ यदि शत्रु है तो हमारे राग-द्वेष तथा मित्र है तो अपनी आत्मा।

विद्या-सूत्र

- सम्यग्दृष्टि स्मरण शक्ति नहीं विस्मरण शक्ति बढ़ाता है।
- जो पेपर में है उसमें भी जो प्रश्न हल कर रहे हैं वो भर याद रखो बाकी सब भूल जाओ पक्का है अच्छे अंक लेकर आयेगा।
- एक बार प्रतिक्रमण में पश्चाताप के साथ पुराने किये गये अनर्थों को गुरु के सामने रख श्रावक निर्विकल्प हो जाता है अर्थात् सब भूल जाता है।
- जो शत्रु पर तो विश्वास करें एवं मित्र पर अविश्वास वह सम्यग्दृष्टि कभी भी नहीं हो सकता।

o बच्चों को आत्मतत्व के बारें में न बताकर मात्र शरीर-विज्ञान को ही पढ़ाना उन्हें विपरित दिशा में ले जाना है। मात्र पर्याय दृष्टि को ही पूर्णता मान रहा है, जो कि बहुत ही गलत है।

o जैसे एक जेल से दूसरे जेल में कैदी जाता है उसी तरह एक शरीर से दूसरे शरीर को यह जीव प्राप्त करता रहता है।

o जैसे हम जीव है वैसे ही सर्प आदि भी जीव है, इस अस्तित्व को स्वीकार करना ही आस्तिक्य गुण है।

o घर को कारागृह मानो, जैसे तिहाड़ जेल। आप लोग पैसा खर्च करके अपने लिए ही जेल बना रहें हैं और हमें दिखा रहे हैं, महाराज जी ये हमारी जेल है। खुशी का अनुभव कर रहें हैं, धन्य है आप! कौनसी हवा लग गयी?

o कितनी मंजील का है? उसमें भी एक मंजील में, उसमें भी एक कमरें में, उसमें भी मात्र पलंग पर आपका अस्तित्व भर है। वो भी क्षणभर में यदि देहांत तो नहीं रहेगा।

o राग-द्वेष ही परम शत्रु है एवं आत्म तत्त्व ही परम मित्र।

o संसार में किसी को शत्रु न मानो- कोर्ट कचहरी छूट जायेगी। वैसे भी परिवार जन सहभागी तो हो सकते हैं सहगामी नहीं।

o आज किसी को भी किस पर विश्वास नहीं। यही अविश्वास आपके खाते को बढ़ा रहा है।

o अपने ही मित्र (परिवारजन) को जलाकर आ रहें हैं आप। क्या विश्वास करें आपका? इसीलिए सोर-सूतक लगता है।

o 8 घण्टे श्रम करो, 8 घण्टे धर्म, 8 घण्टे विश्राम तभी आनंद आयेगा।

ooo

11-2-21 अविवेक सबसे बड़ा अभिशाप गुरुवार

"सबके यहाँ एक कुल देवता है, आप सभी उसकी ही आराधना करने में लगे रहते हैं। वह है जीव्हा इन्द्रिय रूपी कुल देवता। डा० साब से कहते हैं, आप गोली दे दें ताकि जो अच्छा लगे वही खा सकूं। ऐसे लोगों का उद्धार जग-उद्धारक भी नहीं कर सकते। तय करना होगा कि आप भोजन जीने के लिये करते हैं या नशा करने के लिए।"

विद्या-वाणी

0 विवेक के साथ यदि जहर का भी उपयोग करते हैं तो वह अमृत का काम करता है, विवेक के अभाव में अमृत भी जहर बन जाता है। इसलिये अपनी धारणा को बदलो।

0 उपकरणों का व्यवसाय करना धर्म परम्परा में नहीं आता। हाथ में नोट आने मात्र से वह नोट नहीं कहलाता।

0 इसलिये पहले परखो, जानो, जो जानता है उससे समझो, तभी जीवन में उन्नति का कारण होगा।

0 जिसके द्वारा रत्नत्रय की प्राप्ति हो, मुक्ति दिलाये उसका मूल्य (Rate) लिख रहे हैं। पहले न्यौछावर बोलते थे। मूल्य के स्थान पर सदुपयोग / स्वाध्याय लिखा रहता था)

0 वस्तु को परखना ही सही वास्तु है।

0 पहले के शिल्पी भी मूर्ति को बेचते नहीं थे न्यौछावर रखते थे- खुरई के पार्श्वनाथ इसके उदाहरण हैं। तभी तो इतनी विशुद्धि बढ़ती है, देवी देवता भी नतमस्तक होते हैं।

0 भगवान की आराधना करो देवी-देवता की नहीं। 000

१२-१२-१२ कर्म-सिद्धान्त पर विश्वास करें शुक्रवार

जन्म लेने पर कुछ गतियाँ ऐसी हैं जहाँ पर नियमतः सम्यग्-दर्शन छूट जाता है, हाँ वहाँ जाकर सम्यग्दर्शन उत्पन्न कर सकता है। जैसे- नरक, भवनत्रिक, मनुष्य एवं तिर्यञ्च इनमें कुछ अपवाद को छोड़कर सम्यग्दृष्टि उत्पन्न नहीं होता अर्थात उत्पन्न होते समय वह जीव नियम से मिथ्यादृष्टि होता है। जबकि यहाँ से सम्यग्दर्शन लेकर आ सकता है, आता है। इन सब प्रश्नों का हल कर्म-सिद्धान्त से ही कर सकते है, अन्य से नहीं। पुरी सम्पदा भी दे दो तो भी सर्वार्थ-सिद्धि वाले को भी मुक्ति नहीं, मुक्ति मिलेगी तो मात्र मनुष्य गति से ही इसीलिए इसे शुभ मानते हैं, दुर्लभ मानते है। परिणामों की ही विचित्रता है उम्र कम होने पर भी बंध ज्यादा हो सकता है उम्र ज्यादा होने पर भी बंध कम। मनुष्य आयु के साथ यदि बंध कर लिया संयम ग्रहण नहीं कर सकता, ऐसे ही तिर्यञ्च आयु के साथ होगा। थोड़ी सी चूक होते ही वह भव ही निकल जायेगा। सम्यग्दर्शन तो प्राप्त कर सकता है, किन्तु देश संयम या सकल संयम ग्रहण नहीं कर सकता। तीर्थंकर प्रकृति का बंध भी कर सकता है पर संयम नहीं।

दुर्लभ मनुष्य पर्याय में भावों की मौलिकता पर विचार करो। जैसे बंकर में सैनिक सुरक्षित रहता है, गाड़ी पूरी मिट गयी पर यात्री सुरक्षित है ऐसी ही सम्यग्दर्शन की महिमा है। अविश्वास के कारण भी कर्मों की उदीरणा हो जाती है। जो मिला है सदुपयोग कर लो। आत्मा को जानना सबसे दुर्लभ है। ० ० ०

13-2-21 रोता कौन? शनिवार

"जिस प्रकार जोंक (जलचर प्राणी) जो गाय आदि के थन के पास चिपके रहते हैं, उसका अमृतोपम दूध को छोड़कर सड़ा-गला खून ही पीना पसंद करता है ठीक उसी प्रकार की स्थिति स्वर्ग में स्थित इन्द्रों (सौधर्म आदि) की होती है। वे वहाँ मात्र विषयों के सेवन में ही आनन्द मानते रहते हैं। यदि मनुष्य जन्म पाकर भी ऐसा ही किया तो विचार करने योग्य है।"

"जिस प्रकार हस्तलिखित कॉपी एक होती है, उसकी कई फोटो कॉपी होती रहती हैं। बब्बा हस्तलिखित को अन्दर रख देते हैं और फोटो कॉपी को दुकान पर उसी प्रकार स्वर्गों में देव-देवियाँ करते हैं, उनकी विक्रिया होती है, कई रूप एक साथ बना सकते हैं। पंचकल्याणक भी कर रहे हैं तो विषय सेवन में भी लिप्त हैं।"

विद्या-सूत्र

- धरती पर धर्म-ध्यान की सदैव सुविधा है, मुक्ति जाने हेतु तो ये ही एक मात्र स्थान है। सर्वार्थसिद्धि वाले को भी इस धरती पर ही आना होता है।
- स्वर्ग में यहाँ की तरह मनमानी नहीं। "हम थे नहीं स्वतंत्र, हमारे खाते में ये नहीं हैं" ये सब वहाँ नहीं। आत्मा की बात यहीं, वहाँ तो ऊपर-ऊपर से है।

- यहाँ पर रसी करते हैं और वहाँ (स्वर्ग) रसभरी चलेगी। जन्म काल में भी वहाँ अन्तर्मुहूर्त बाद ही सीनियर लोग मिलेंगे। यहाँ तो बहुत कम, वहाँ लाखो सबका अपना-अपना खाता है। परिचय होता है।
- तत्व ज्ञान ऐसी खुराक है आत्मा तृप्ति का अनुभव करती है। इच्छाओं से रहित हो राग-द्वेष से ऊपर उठ जाती है।
- स्वर्ग एक मोक्ष का ही मार्ग है, साधक को वहाँ रुकना ही पड़ेगा। वहाँ बहाव नहीं किन्तु भाव तो है।
- मन अशान्ति का ठीकाना है, शान्ति हेतु तो उसे बांधना ही पड़ेगा।
- हमारे पास लोग हार पहनकर आते हैं जब संसार से हार जाते हैं तो।
- आत्मा को याद करता है वह रोता नहीं, राम सीता के वियोग में रोते रहे किन्तु सीता जंगल में भी प्रसन्न बनी रहीं, आत्मबल के योग पर (दम पर)।
- आत्मा को भूल जाओगे तो शरीर तुम्हे नचायेगा और नृतक बना देगा। आज तक ये नचा ही रहा है।
- 12 भावना भाओं 1200 नहीं। 1200 भावना बाहर ही भटकायेगी
- संसार का स्वरूप ही दूर के ढोल सुहावने जैसा है।
- जो पर्याय बुद्धि रखता है वही रोता है, तत्व ज्ञान रखने वाला नहीं।
- हमेशा रोना अच्छा नहीं, एक आध बार तो फिर भी ठीक माल मिल जाता है।
- जैसे राष्ट्रपति भवन राष्ट्रपति का नहीं वैसे ही देवों के भवन देवों के नहीं मात्र रहने को मिले हैं। किरायेदार हैं कुछ भी कर नहीं सकते।

०००

१५-२-२१। इतिहास को जान वर्तमन सुधारो रविवार

जिस प्रकार जो बुरी चीज है उसे नीली स्याही से न लिखकर लाल स्यायी से लिखा जाता है, इसी प्रकार हमारे इतिहास की तो एक भी पंक्ति लाल मसी (स्याही) बिना छुटी नहीं। इतिहास पुरा क्रिमिनल केश (लड़ाकू) की तरह लाल ही दिख रहा है। केबायोक्षेत्र के कारण स्वर्णिम अक्षर में एक भी पंक्ति नहीं लिखी।

"जिस प्रकार चमगादड़ काले रंग की बहुत तेजी से चलने वाला पक्षी है। एक मिनिट में हजारों बार आपके पास से गुजर जायेगी पर आपसे टकरायेगी नहीं वह प्राचीन मन्दिरों में लटके रहते हैं दिखते नहीं पर इनके मल मूत्र की गंदगी को देखने से ज्ञात हो जाता है यहाँ चमगादड़ है इसी प्रकार हमारा इतिहास भी गंदगी के साथ ही है और विपरित बुद्धि से लटके हुये, भटके हुये है।"

जिस प्रकार भामण्डल अथवा तालाब/बावडी आदि में देखने से 7 भव दिखने लगते हैं। समोशरण (धियान) विरागता की उज्ज्वलता का ऐसा प्रभाव होता है इसके माध्यम से हम अपने इतिहास को देख वर्तमान में सुधार कर सकते है।

विद्या - वाणी

○ परोक्ष ज्ञान में वे बातें आती ही नहीं जो प्रत्यक्ष ज्ञान में आती है, ये मात्र श्रद्धान का विषय है।

○ जो इतिहास पर विश्वास नहीं करता भूगोल - गोलाकार भ्रमण करता रहता है।

○ स्मृति में वर्तमान गौण हो जाता है।
○ अपना प्रायःकर कम स्मरण में रहता है, दूसरे का ही ज्यादा स्मरण में रहता है। इष्ट और अनिष्ट रूप में वही-वही स्मरण में आता है।
○ जिनका जीवन स्वर्णिम अक्षर में लिखा गया उनके इतिहास को पढ़कर ही हम अपने लाल स्याही से लिखे गये इतिहास को स्वर्णिम बना सकते हैं।
○ जैसे क्षत्रिय रानी राजा के रणागंण में जाते समय रक्त से लाल तिलक करती है वैसे ही हमें आत्मा के प्रति होना है। आत्मा और राष्ट्र की बात करो बाकी सब छोड़ दो।
○ रणागंण विषयातीत होने का प्रशस्ति पत्र है उसी से स्फूर्ति आयेगी तभी आत्मा की एवं राष्ट्र की रक्षा हो पायेगी।
○ दूसरे राष्ट्रों ने भारत के बारे में बहुत कुछ लिखा है अतः अब तो आंखे खोलो।
○ भगवान हमारा सम्पूर्ण इतिहास जान सकते हैं/जाना है किन्तु अनुभव तो हमारा हमारे ही पास रहेगा। हम अपने अनुभव के विषय में किसी दूसरे से पूछ रहे हैं ये सबसे बड़ा अविवेक है।
○ माँ अतीत के बारे में बता सकती हैं, अनुभव तो स्वयं हमने ही किया। प्रभात उठा भरकारता संकल्प किया अब नहीं करूंगा परन्तु बाहर की हवा लगते ही सब भूल जाता है।
○ अपने पंखों को काम में लो पर दूसरे से टकराये नहीं ध्यान रखो। सुनते हैं सोनोग्राफी का आविष्कार का चमगादड़ के पंख के साथ संबंध है।

- हमारा इतिहास हमें ही अच्छा नहीं लगेगा, दूसरों की क्या बात कहें इसलिये अब तो भीतरी अजरत्व, अमरत्व अविनाशीत्व गुण को पहचानो।
- आचार्यों ने इतिहास खराब होते हुये भी हे भव्य! देवात्म आदि कहकर संबोधन किया ताकि किसी भी प्रकार रास्ते पर आ जाये।
- संवेदन सदैव तात्कालिक ही होता है, यह कभी भी दिखाई नहीं देता।
- समोशरण में ऐसी बावड़ी/वापिका है जहाँ बिना हेल्प के भी सेल्फी निकलती है।
- स्वर्णाक्षर के दो अर्थ = सु सुन्दर रूपेण अर्पित, स्व के द्वारा अर्जित/कमाई
- लाल चिट्ठी का उपयोग अहित की सूचनार्थ होता है।
- परीक्षा में भी लाल स्याही से हासिया बना होता है, इसके भीतर लिखने पर जाँच नहीं होती थी। निवेदन करने पर एक-आध नम्बर मिलते थे।
- जैसे वर्षाकाल में बिजली की चमक से आँखें मुंदिया जाती हैं वैसे ही निगोद की अनंत पर्यायों को सुनने मात्र से दिमाग गरम हो जाता है मात्र केवलज्ञान का ही विषय है।
- अतीत अनागत को जान सकते हैं पर संवेदन/अनुभव वर्तमान का ही होता है।
- वीतराग संवेदन ही मात्र ग्राह्य है, शेष सब छोड़ने योग्य है। शुक्ललेश्या रूप सफेद पत्र से ही वह संवेदन प्राप्त होगा।

०००

१८-२-२१ बांधो मत- बंधना सीखो सोमवार

युग के आदि में क्षायिक सम्यग्दृष्टि, ज्येष्ठ - श्रेष्ठ चक्रवर्ती महाराज भरत ने कह दिया जो तद्भव मोक्षगामी भी है उसने कहा कि जितने भी साधु आयेंगे, मेरे यहाँ ही आयेंगे, सबके यहाँ आहार हो ये भाव नहीं कर रहा है ऐसे में एक भी महाराज का पड़गाहन नहीं मिला, क्योंकि दिगम्बर मुनिराज की कोई भी चर्या बाहय होकर नहीं होती।

विद्या - वाणी

- दूसरे के आंगन में खड़े होकर कभी भी दूसरे के ग्राहक को अपने यहाँ मत ले जाइये।
- चौके में सब भूल जाते है, भूलना ठीक नहीं, विवेक से काम लेना चाहिए। (महाराज बेटे का नाम ही विवेक है।)
- कौनसी गलती हो गयी महाराज? एक ने तो कहा - महाराज जी आशीर्वाद दें आपका आहार हो जाये।
- धन्य कुमार का भजन बहुत ही अच्छा लगता है। उसने तो भक्ति की किन्तु आप गलती न करीयो।
- महाराज के २८ गुण तो याद रखते हो, श्रावक (दाता) के ७ गुण याद ही नहीं हैं, उसमे एक मुख्य गुण है विवेक।
- जहाँ लाना होता है, वहाँ बना भी होता है। विवेक के बिना आहार तो दूर कुछ भी नहीं कर पाओगे।
- पराधीन मुनिवर की चर्या - बुद्धिमान श्रावक की बुद्धि भी उस समय काम नहीं करती, इसलिए विवेक से ही काम लेना चाहिए।
- समोसरण से भी महाराज आहार पर उठते होंगे तभी तो ये प्रसंग आया।

○○○

16-2-21 प्रतिशत नहीं शतप्रतिशत देखो मंगलवार

जिस प्रकार सेना में आगे बढ़ना सीखाया जाता है उसी प्रकार पीछे लौटना भी सीखाया जाता है, पीछे लौटती है आगे बढ़ने के लिए, दुश्मन समझ नहीं पाता और परास्त हो जाता है। इसी तरह मुनिमहाराज भी छठवें गुणस्थान में आते नहीं आना पड़ता है। ऊपर चढ़ने हेतु हजारों बार छठवें में आते हैं। इसी तरह कोई भी कार्य में सफलता हासिल करनी है तो नीचे जाकर भी लक्ष्य ऊपर बढ़ने का ही होना चाहिए।

शिक्षा - सूत्र

- आया बसन्त - पाला उड़न्त सर्दी का अन्त एवं गर्मी का आगमन होता है बसन्त से।
- इतिहास को जाने बिना भविष्य कैसे सुधारोगे। संस्कृति का उत्थान भी तभी संभव है।
- गुरुजी ने जो कहा उसी का अनुकरण एवं अनुसरण कर रहे हैं तभी तो आज प्रतिभामण्डल का विस्तृत-स्वरूप सामने है।
- धीमी गति भले ही हो पर प्रत्येक कदम मजबूती के साथ हो।
- भारतीय शिक्षा एवं चिकित्सा की ओर ध्यान देना है, उस ध्यान से पूर्व ज्ञान को संयत बनाना है। संयत ज्ञान के अभाव में स्वरूप की प्राप्ति संभव नहीं।

- रास्ते में यदि कोई चिन्ह नहीं तो राहगिर के मन में प्रश्न-चिन्ह खड़ा हो जाता है। आज ऐसे ही रास्तों का निर्माण हो रहा है।
- ध्यान से पूर्व ज्ञान को महत्व दें। ज्ञान दर्पण के समान है। उसमें ज्ञेय का आना स्वभाविक है किन्तु सभी ज्ञेय ध्येय बनें, आवश्यक नहीं। बच्चों को इष्ट ध्येय के बारे में बताना परम आवश्यक है।
- रक्तसंचार का रुकना बेहोशी की ओर ले जाता है। अनुपात से रक्तसंचार हो, न कम, न ज्यादा।
- रक्त संचार ठीक हो तभी स्वप्न भी अच्छे आते हैं। जिस निद्रा में बेहोशी होती है वह जीवन को ही बेहोश कर देती है।
- पहले पाठ मुखाग्र कराते थे, विदेशी शिक्षा में मुखाग्र नहीं कराते। जब तक मुखाग्र नहीं तब तक ज्ञेय को विषय बना ही नहीं सकते। ज्ञेय के अभाव में ध्येय भी नहीं बन पायेगा।
- आँख एवं कान इन दोनों को बंद करते ही बाहर से सम्पर्क कट जाता है और भीतर से सम्पर्क जुड़ जाता है।
- दुकान नहीं एक कान बंद करके दुसरे से सुनो तभी बुद्ध ग्रहण कर पाओगे।
- एक भाव, एक शिक्षा, एक दीक्षा, एक चर्या आदि एक बात का बहुत महत्व होता है।
- हीरा कहीं भी रखो सभी दिशा में इसके लहका पहलु उसका मूल्य बताते रहते हैं।
- धन में प्रतिशत है-माल शतप्रतिशत अतः माल खरीदो।

o आज ज्ञापन का नहीं विज्ञापन का जमाना है। जो मौलिक है उसी का मूल्य होता है।

o आस्था यदि मजबूत हो तो पहने आदि की आवश्यकता ही नहीं।

o पहनावे का भी विचारों पर प्रभाव पड़ता है। भारतीय पहनावा हमें ऐसे ही संस्कार देता है।

o विदेश क्यों जाते हो उत्तरप्रदेश की अपेक्षा मध्यप्रदेश में विदेश है। भारत की बात ही निराली है - राष्ट्र नहीं महाराष्ट्र यहाँ है। एक नहीं सौराष्ट्र इसी भूमि पर है।

o उद्देश्य को भूलना नहीं, कार्य एवं आचरण ऐसा हो कि अन्य लोग भी उस पथ का अनुकरण करें, इसी को सही सेल्समेन कहते हैं।

o जैसे किसान गन्ने की ऊँचाई नहीं मोटाई देखता है उसमें रस कितना है इसी प्रकार संख्या पर नहीं क्वालिटी पर हमारा ध्यान सदैव रहता है। फूल पर नहीं फल पर ध्यान रहे।

o भारतीय सिद्धान्त जो मूल है उसका वितरण सब जगह हो यह वितरण (पार) होने का रास्ता है। इसी कारण सभी देशों में अग्रणी है भारत।

o पहले सोचता था प्रतिभास्थली में कौन भर्ती करायेगा, कौन पढ़ायेगा अब जो भर्ती हो जाता है कहता है हम शिक्षा ही पूर्ण नहीं जीवन भी यहीं पूर्ण करेंगे। सृजन से भी बड़ी कभी-कभी जयमाला होती है। आज ही कहा - अब हमें कहीं भी जाना है ही नहीं।

o न जादू है न टोना है, अपनी टोन को (शैली) सही रखना है ताकि सब आपस में मिलकर रहें। ooo

17-8-81। कर्त्तव्य की सीमा बुधवार

"जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति आपको निमन्त्रण दे सकता है, थाली परोस सकता है, ग्रास भी मुंह में दे सकता है किन्तु कर्त्तव्य की एक सीमा है, स्वयं को ही चर्वण करना होता है तभी वह नीचे उतरेगा इसी प्रकार सर्वत्र निमित्त-नैमित्तिक संबंध लगाना। उपादान के बिना कार्य नहीं पर निमित्त भी महत्वपूर्ण है। दोनों को लेकर चलने वाला ही मोक्षमार्ग में आगे बढ़ सकता है।"

विद्या-सूत्र

- सब कार्य हो रहे हैं, सब कार्य कर रहा हूँ इन दोनों में बहुत अन्तर है।
- मैं मुंह चलाऊँ ग्रास आपके पेट में चला जाये, संभव ही नहीं।
- कर्त्तव्य में निमित्त-उपादान दोनों हैं। निमित्त की भी एक सीमा होती है। निमित्त कर्त्ता को उसी रूप में स्वीकारो।
- तीर्थंकर ने भी आगम के अनुसार ही चर्या की, भले ही वे स्वयं दीक्षित होते हैं किन्तु यद्वा-तद्वा प्रवृत्ति उनकी नहीं होती।
- आगम/श्रुत आज भी हम सभी के लिए आदर्श/दर्पण/आईना का काम कर रहे हैं, आगे भी करते रहेंगे।
- जो आगम अनुसार चला उसकी कर्म निर्जरा होती है तथा जो आगम के विपरीत चल रहा है, जानबूझकर कर रहा है कर्म निर्जरा तो दूर, विशेष बंध कर रहा है।
- कर्म निर्जरा सदैव परिणामों पर आधारित है। परिणाम बिगड़े की पेपर बिगड़ा।

- मन तो हमेशा मनगढ़न्त ही चाहता है, आज बाजार में ये सब हो रहा है।
- पंचायत भी इधर-उधर की बात नहीं कर सकती, जो सही है उसी का पक्ष लेना चाहिए।
- जनता के निर्णय के आगे पंचायत क्या कर सकती है, कुछ नहीं कर सकेगी।
- समोशरण भी अन्त समय में छोड़ना होता है, समोशरण में बैठे-बैठे मोक्ष नहीं अतः घर तो छोड़ना ही होगा।
- एक बार योग निरोध हो गये अब समोशरण लगा तो रहो प्रभु मुड़कर नहीं आते।
- आपकी समोशरण तभी तक काम आयेगी जबतक तीर्थंकर देव स्वीकारेंगे।
- तीर्थंकर भी कर्तव्य की सीमा समझते हैं, ये ही उनका बड़प्पन है। हम भी दुर्लभ क्षणों को कर्तव्य में लगायें।
- जो भाव अभी है उससे उत्कृष्ट ही भाव हो, घटिया नहीं, ऐसी प्रभु से प्रार्थना करते हैं।
- निमित्त से उत्साह रहता है। उपादान स्वीकार कर लेता है तो ये अहोभाग्य होता है, सुलभता से मिलना भी महाभाग्य / सौभाग्य समझना चाहिए।

000

विशेष - तुष्टिकरण की नीति छोड़ो संतुष्टिकरण की नीति अपनाओ। राजनेता तुष्टिकरण को अपनाते हैं - परिणामशून्य रहता है। मोक्षमार्ग में ऐसा नहीं करना है।

14-2-2) गुस्से को कहो - पधारो सा गुरुवार

"जिस प्रकार पार्श्वनाथ भगवान ने सभी उपसर्ग एवं कष्टों को सहन कर समता के साथ कर्मों की सेना पर विजय प्राप्त की, केवलज्ञान प्राप्त किया ठीक इसी प्रकार हम लोगों को याद रखना है, तभी संसार से पार हो पायेंगे।"

विद्या - वाणी

- मोक्षमार्ग उनका होता है जो समता से सब कुछ सहन करते हैं।
- पार्श्वनाथ भगवान पर पहले गंधोदक की नहीं तप्त किये लोह रस की वर्षा, पहले फूलों की नहीं पत्थरों की वर्षा हुई। जब पार्श्वनाथ भगवान ने कुछ देखा ही नहीं तब 7 दिन बाद सब नजारा ही बदल गया, केवलज्ञान की प्राप्ति हो गयी।
- पहले जब तक कष्ट नहीं, जीवन में मिष्टता नहीं आती। समता से ही परीक्षा का परिणाम घोषित होने वाला है, किसी किसी को 5 मीनिट में मुक्ति मिल जाती है।
- बिना ब्याज के भी क्यों न मिले लोन / कर्ज लेना अच्छा नहीं।
- हमने किया वह भोगना ही है, इस सिद्धान्त को याद रखो। पार्श्वनाथ भगवान ने कमठ को याद नहीं किया, कमठ ने पार्श्वनाथ को याद किया।
- वीतरागता के द्वारा सबको समान दृष्टि से देखते हैं हमारे प्रभु, इसलिए कमठ को भी सही दृष्टि मिल गयी।
- गुस्सा करना आत्मा का स्वभाव नहीं। शांत रहना स्वभाव है।
- गुस्से से कहो जैसे Well Come किया वैसे ही Well go. मारवाड़ी में "पधारो सा" आने के लिए भी एवं जाने के लिए भी।
- अज्ञान के कारण समता से दूर है, ये अपने को ही धोखा देना है।

ooo

19-2-21) गैया ढोर नहीं शुक्रवार

एक गैया बिचक गई, भीड़ में घुस गई। अब घबराहट और बढ़ गई सब इधर से उधर हो रहे हैं किन्तु उस गैया ने भीड़ में एक को भी छुआ नहीं, बच्चे-बूढ़े एक को भी चोट नहीं आयी, यहाँ थोड़े से लोग हैं फिर भी किसी का कोई ध्यान नहीं बच्चे तो नीचे दब जाते हैं। वो ढोर होते हुये ही भी और आप....

अहिंसा परमोधर्म की जय

०००

20-2-21) बचाओ नहीं पचाओ शनिवार

"जिस प्रकार पहलवान गरिष्ठ आहार करता है, फिर खूब दण्ड लगाता है तब भी कुछ पचने से रह ही जाता है, जब कि किसान जो कुछ भी खाता है, श्रम के द्वारा सब पचा लेता है। इसी प्रकार जो प्राणी राग-द्वेष करता ही रहता है, जठराग्नि तेज तो है किन्तु संसार में ही भ्रमण करता रहता है जो पूरे के पूरे राग-द्वेष को पचा लेता है वह इस संसार से ही मुक्त हो जाता है।"

विद्या-वाणी

० दण्ड लगाना आरोग्य के लिए कारण है और दण्डित करना वैराग्य के लिए कारण।

० दण्ड लगाने से छोटी एवं बड़ी आँतों में मल स्खलन नहीं होता। सक्रियता बनी रहनी चाहिए।

- पहलवान एवं किसान दोनों में बहुत अन्तर है। पहलवान चुन-चुन कर खाता है फिर भी पूरा नहीं पचा पाता। किसान जो मिल जाये वह खाकर भी श्रम द्वारा सब पचा जाता है। पहलवान कालान्तर में हार भी जाता है यह कभी भी हारता नहीं। किसान एवं श्रमण दोनों ही श्रमशील होते हैं। पहलवान ज्यादा खाता है काम कम करता है, किसान कम खाता है पर काम ज्यादा करता है।
- भावों को संभालने हेतु ही द्रव्य का आलम्बन लिया जाता है।
- जिसकी जठराग्नि जितनी तेज उतने ही दिन वह संसार में रहता है। जठराग्नि मंद होते ही समझो चलने की तैयारी है।
- जठराग्नि कभी विश्राम नहीं करती जैसे नाड़ी कभी भी विश्राम नहीं लेती। आप सो भी जायें पर ये कार्य करते रहते हैं। आप डरेंगे या अन्य भाव जैसे करेंगे, इन पर भी वैसा ही प्रभाव पड़ेगा।
- अपने श्रद्धान को मजबूत, ज्ञान को समीचिन एवं आचरण को सदैव मोक्षमार्ग के अनुरूप बनाये रखीये।
- ईमानदारी के साथ काम करो एवं कर्तव्य के प्रति सजग रहो। मुनिमहाराज रात-दिन भीतर से आत्मा के लिए ही उद्यमशील रहते हैं इसीलिए आप ध्यान में भी बैठे रहें उतनी निर्जरा नहीं कर सकते, जितनी मुनि महाराज आहार करते-करते भी कर रहे हैं। आपका वेतन अलग-मुनि का वेतन अलग है।

ááá

प्रातः
२१-२-२१। आलम्बन का महत्व रविवार

किसी भी द्रव्य का आलम्बन निरालम्ब होने के लिए लिया जाता है। जिस प्रकार जल प्राण है किन्तु किसी डूबते हुये के लिए प्राण लेवा भी इसी तरह आलम्बन से भक्ति में डूबा जाता है किन्तु यदि आलम्बन को ही देखते रहोगे तो भक्ति भी नहीं भगवान बनना तो दूर ही रहेगा।

जैसे कमल जल मे रहकर भी जल को ग्रहण नहीं करता इसीलिये वह सर्वत्र खिला रहता है, ग्रहण करते ही जल में मल बन दलदल (कीचड़) बन जाता है इसी तरह जग मे रहकर भी वीतरागी मुनि अलिप्त रहते हैं, यदि संसार में राग-द्वेष करेंगे तो पुनः संसार को ही बढ़ायेंगे।

जिस प्रकार बर्तन को रोज मांजते हो तभी उसमें दूध / दही आदि सुरक्षित रहता है, अन्यथा फट जायेगा इसी तरह अपनी आत्मा को रोज मांजो। बाहर से नहीं भीतर से बर्तन को मांजा जाता है। आप न ही स्वयं मांजते हो तथा न ही हमें मांजने देते हो, ऐसे में हमेशा अशुद्ध ही बने रहोगे।

अपनी हृदय रूपी वेदी को शुद्ध करो तभी भगवान को बैठा पाओगे एवं उनका अभिषेक कर सकोगे।

विद्या - वाणी

- भक्त की दृष्टि सामग्री की ओर न रहकर समग्र कैथनी की ओर होना चाहिए तभी भगवान बन सकेगा।
- संसार रूपी महासागर से पार होने में चांदी - सोने की थाली भी अशुद्ध सिद्ध हो रही है।
- निरालम्ब भगवान के सामने आये हो, आलम्बन भी डूबने का साधन बन रहा है।
- भगवान कभी भी आपके रत्नों के सिंहासन पर नहीं बैठते वे तो आस्था रूपी वेदी पर विराजमान होते हैं। सिंहासन से 4 अंगुल ऊपर रहते हैं किन्तु आस्था की वेदी को छूकर बैठते हैं।
- हमारे यहाँ दो महिने से आहार नहीं हुआ ये तो कहने वाले खूब हैं, पड़ोस में भी तीन महिने से आहार नहीं हुआ अतः पहले वहाँ हो जाये ये विरले ही कहते हैं।
- बातें लम्बी - चौड़ी नहीं, भाव लम्बे - चौड़े होने चाहिए। भाव बहुत ही वामन बन जाते हैं।
- छोटे कद वाले भी भगवान के कद के समान होते हैं किन्तु छोटे भाव वाले कभी नहीं।
- बनिया तराजु की डण्डी ही देखता रहता है इसीलिये बनिया को मुक्ति नहीं, क्षत्रिय को ही मुक्ति होती है।
- क्षत्रिय कभी भी तराजु की ओर दृष्टि नहीं रखता अपितु जो रखता है उसे भी सीधा कर देता है। कोशागार को भी लाइन पर ले आता है, स्वयं कोश को छूता तक नहीं।

o बाहर से तो सोला रखते हो भीतर सत्रह (17) है।

o शुरु में तो ठीक, बाद मे सभी अहमिन्द्र हो जाते हैं।

o जो भगवान की भक्ति भक्त बनकर करता है, भगवान उसे सामने नहीं अपने बाजु में बैठा लेते है अर्थात् भगवान बना देते हैं।

o भगवान की उदारता से ही हम सब का उद्धार संभव है किन्तु तब जब उनके मार्ग पर हम चलेंगे।

o राग-द्वेष के कारण आज तक इस बर्तन को भाजा ही नहीं। राग-द्वेष को भाजना ही सही भजन कहलाता है

o हवा के कारण दीपक की लौ इधर-उधर जाती है, हवा बंद तो लौ ऊर्ध्वगमन करती है इसी तरह राग-द्वेष की हवा को बंद करते ही जीव की ऊर्ध्वगति होती है।

o शरीर को एवं घर को जेल (कारागृह) मानो तभी तो संसार से छूट पाओगे।

o घर की एक-एक मंजील बढ़ाने पर खुश होते हो। वह जेल की मंजील बढ़ा रहे हो।

o संसार-भ्रमण का केन्द्र (संबंध) शरीर है। शरीर को महान कारागृह समझने वाला ही वास्तविक समझदार है।

राग से ऊपर उठो। पर प्रभाव से राग होता है, यह राग ही

o पराधीनता का कारण है। आज तक स्वाधीन नहीं हो पाये, यही अपराध कराता है।

o आलम्बन दुर्ध्यान से सद्ध्यान की ओर जाने का रास्ता है पर आलम्बन का ध्येय मात्र निरालम्ब होना ही।

o o o

विश्व मातृभाषा दिवस

२१-२-२१ भारतीय भाषा सम्मेलन प्रवचनांश मध्याह्न

- जब महाविद्यालय, विश्वविद्यालय बोलते हो तो फिर प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय क्यों नहीं बोलते स्कूल क्यों बोलते हो।
- विश्व मातृभाषा दिवस मतलब तीर्थंकर की वाणी लोकसम्पूर्ण जीवों के लिए समझ में आती है देव - मानव - पशु-पक्षी सभी अपनी भाषा में समझ जाते हैं।
- काम को पुरुषार्थ की संज्ञा दी इसी कारण काम पुरुषार्थ वासना नहीं वासना को नियन्त्रण करने की उपासना है।
- विद्या का आलय नहीं रहा, विद्या का ही लय हो गया आज।
- तीन तलाक मतलब मन शुद्ध है वचन शुद्ध है और काय शुद्ध है।
- महाकाव्य ऐसा हो जो कालजयी हो, मृत्युञ्जयी हो। इसीलिये आगम में इसे प्रबन्ध-काव्य की संज्ञा दी है।
- शोषण करने वाला कभी भी शासन नहीं कर सकता है।
- 15000 वर्षों में भारत ने कभी भी किसी राष्ट्र पर आक्रमण नहीं किया। हाँ, किसी ने यदि भारत पर आक्रमण किया तो प्रतिक्रमण अवश्य किया।
- श्रमण एवं श्रावक दोनों ही प्रतिक्रमण के पश्चात् मन में शान्ति का अनुभव करते हैं।
- ग्रन्थमय रहने वाला कभी निर्ग्रन्थ नहीं हो सकता।
- जब जागे तभी सवेरा, उसके लिए जो जागना चाहता है, जो खुर्राटे ले रहा है उसे उठना है ही नहीं। अब कोई गांधी नहीं आने वाले नहीं हैं। ०००

22-2-21 मत करो प्रकृति विरुद्ध आचरण सोमवार

"अमेरीका में विगत वर्षों में तज्ञ इंजीनियरों के द्वारा बनाये लगभग 1700 बांध (पुल) ध्वस्त कर दिया। क्यों कि उन पुलों से लाभ की जगह हानि अधिक हो रही थी। प्रकृति के विरुद्ध किया गया प्रत्येक आचरण अक्षम्य अपराध है।"

विद्या-वाणी

0 नदी तभी तक अच्छी लगती है जब तक कि दोनों तटों के मध्य प्रवाहित हो रही है। तटों का उल्लंघन किया नहीं कि वह बाढ़ का रूप ले सब कुछ स्वाह करने लग जाती है। मनोरम दृश्य अब विकराल दिखने लगता है।

0 प्रकृति का असंतुलन प्रकृति के विरुद्ध/विपरित चलने के कारण ही होता है।

0 बाढ़ के दो स्वरूप हैं- स्वभाविक एवं वैभाविक। स्वभाविक से इतनी हानि नहीं जितनी वैभाविक से है।

0 अमेरिका विकसित राष्ट्र है किन्तु आप विकासशील ही मान रहे है, विकासित अपने आपको मानते ही नहीं।

0 बिन जानन ते दोष गुणन को कैसे तजिए गहिए... अष्टपाहुड़ मानों या नहीं ये श्रमण एवं श्रावक दोनों के लिए लागु है।

0 नर्मदा पर अनेक पुल (बांध) बने। बर्गी, ओंकारेश्वर, पुनासा, सरदार सरोवर, ये सब पानी को रोकना हानिकारक है

0 प्रकृति का कभी अवरोध नहीं कर सकते, वहाँ बोध ही समाप्त हो जाता है जहाँ अवरोध होता है।

- ज्ञान के प्रवाह को बांधने का नाम ही ध्यान है। यह ध्यान अन्तर्मुहूर्त से अधिक टिक नहीं सकता।
- संज्ञी पंचेन्द्रिय में ही पागलपन पाया जाता है उसमें भी सर्वाधिक मनुष्य में, कुत्ते भी पागल होते हैं।
- प्रकृति के विपरित मत चलो, आज श्रावण में तो पानी नहीं बाद में बर्फ के पिघलने से बाढ़ आ जाती है।
- आज का विज्ञान प्रलय को निमन्त्रण दे रहा है। अब वैज्ञानिक भी कह रहे हैं, पानी को कोई रोक नहीं सकता।
- नदी बह रही है - बहने दो। स्वच्छ नदी देखना मनोरंजन है प्रलय नहीं।
- बांध में दरार तो बचाना कठीन जैसे बुद्धि में दरार तो कोई नहीं बचायेगा। ज्ञान को स्थिर बनाओ इधर-उधर ध्यान तो प्रलय होगा।
- कितना भी होशियार बच्चा क्यों न हो 8 वर्ष बाद ही विद्यालय में भर्ती करो, नहीं तो वह गुरुजी को भी पढ़ाने लगेगा। आज ये ही हो रहा है।
- दूसरो की देखा देखी ने बुद्धि का प्रमाद कर रहा है भारत, प्रकृति के विरुद्ध चल रहा है।
- बांध से विद्युत उत्पादन कर रहे हैं, लोभ में आ जाते हैं, इसलिए सूर्य-प्रकाश में ही अपनी दिनचर्या करें।
- उत्पादन करोगे धरती प्रसन्न होगी, उत्पात करोगे तो यह धरती अवश्य ही नाराज होगी।
- पानी का संग्रह, जीवन का ही विनाश कर देगा। मिट्टी तो काम की नहीं रहती।

संस्मरण

0 बचपन में एक बार पंचकल्याणक देखने गये। पुना के पास धरण बांध था। 1957 के लगभग की बात है। वर्षा तेज हो गयी। उस डैम में दरार आने लगी। सेना ने मिट्टी के बोरे रखे किन्तु स्थिति अनियन्त्रित देख आसपास के नगरों / गांवों में संकेत दिया कि अपने आपको बचा सको तो बचा लो। अन्ततोगत्वा 60 Km. की रफ्तार से पानी सर्वत्र फैलने लगा। तीन मंजिल पर पशु-जनता आदि रहे। विद्युत खम्भे आदि सब डूब गये। पुना को पुनः बसाना पड़ा। एक लेख पढ़ा- वहाँ कौवा भी पानी पीने नहीं आता था। संग्रह का यह परिणाम निकला।"

0 आचार्यों ने कृपाकर सूत्र दिये - मूर्छा परिग्रह आदि इन्हें याद रखो।

0 मूर्छा एक दरार है जो माता-पिता, भाई-भाई, एक शब्द-दूसरे शब्द में दरार। दरार पड़ने के बाद कोई बचाने वाला नहीं है।

0 माँ बच्चे को भोजन देगी उतना ही जितना पचा सकता है। मूर्छा करेगा - उदर उठायेगा।

0 प्रलय कभी भी घटित हो सकता है इसलिये सोच-समझकर मूर्छा से बचो।

0 चम्बल वाले आये हैं - उस समय लोहे का पुल बना था। स्टीमर भी थे। धौलपुर से चम्बल पारकर मुरैना की ओर गये थे। मूर्छा नहीं करना।

000

23-2-21 "इतराओ नहीं, जेल में हो" मंगलवार

आप जेल में बंद व्यक्ति को ही कैदी मान रहे हैं जब की अनादि से हम-सब इस शरीर रूपी कैद में ही भव-भ्रमण कर रहे हैं। जैसे कैदी जेल से भागने का प्रयास करता है, उसी तरह इस शरीर रूपी जेल से भागने का प्रयास क्यों नहीं करते, इसके छूटते ही संसार से मुक्ति मिल जायेगी। आज तक एक भी कैदी भागकर नहीं निकला।

विद्या-वाणी

- जैसे स्वर्ण पाषाण को तपाकर उसको शुद्ध (स्वर्ण को) किया जाता है, जेलर भी प्रशिक्षण देकर कैदियों को नागरिक बना रहे हैं।
- शिक्षण के बिना कोई भी अच्छाई की ओर बढ़ सकता एवं न ही बुराई का विमोचन कर सकता है।
- शरीर को पुष्ट-समृद्ध-बलशाली करने का मतलब है हमारा जेल मजबूत बना रहे।
- जो संसार-शरीर-भोग से निर्विण्ण होता है, वही निरीह हो पाता है एवं कामचलाऊ अर्थात अनिवार्य को करता रहता है।
- दादा जी एक को ही नाति-पोता मानते हैं, दृष्टि बदलो, बाहर तो निकलो एक नहीं अनेक नाति-पोते आपके हो जायेंगे।
- दूसरों को पराया समझोगे अनेकों की दृष्टि में आप भी पराये हो जाओगे। अभेद मानकर चिंतन करो। वस्तुत: यहाँ अपना-पराया कोई नहीं है। पराया आपके घर का सदस्य रहा होगा और आप भी उसके घर के सदस्य, यह अनादि से चल रहा है। ०००

२५-२-२। "आश्चर्य की बात है" बुधवार

"महानगरी में शोरूम खोलने से भी अधिक ठेला पर माल बेचने वाला कमा लेता है। खुद का मकान खुद की दुकान, हार्डवेस भी होता है। इसलिए बाहरी चमक-दमक पर लोग भागते हैं यह आश्चर्य की बात है। निगोद से निकल आठवर्ष अन्तर्मुहूर्त में कल्याण करने वाले जीव के बारे में सोचो जो सच में ही आश्चर्य की बात है।"

विद्या-वाणी

- आज के विज्ञान ने अध्ययन की शैली भी बदल डाली। मोबाइल पर पढ़ने वाले किताब को देखकर पूछेंगे - What is this?
- महानगर की ऊँची इमारतों में बने एसी कमरे में रहने वाला सूर्य को देखकर पूछेगा - What is this?
- शुद्ध हवा-पानी, शुद्ध सनलाइट अब खत्म हो रही है।
- सूर्य स्नान, वायु स्नान, मिट्टी स्नान तो रहा ही नहीं जल स्नान हेतु जल शुद्ध नहीं मिल रहा।
- अस्पताल में ऑक्सीजन हेतु शुद्ध प्राणवायु नहीं, एयर कंडीशन है मतलब कंडीशन सब जगह लग गयी।
- विज्ञान क्या देगा? नया-नया, क्या इसी का नाम आप आश्चर्य मानते हो। इस आश्चर्य से कभी भी आश्चर्य चकित नहीं होओ ये तो परिवर्तन भर है।
- जैसे एक ही शरीर के आश्रित अनेक निगोदिया जीव रहते हैं वैसे आज एक ही दरवाजे में बने फ्लैटों में हजारों रहते हैं।

सीढ़ी
- चढ़ना तो दूर, चलने में घुटने दर्द करते हैं, नीचे बैठ नहीं सकते, कुर्सी चाहिए - आश्चर्य की बात है।
- जमीन पर पैर नहीं रखो - सबको उड़ना है। ये आश्चर्य की बात है।
- तीर्थंकर अधर में विहार करते हैं, ये आश्चर्य ध्यान में रखो।
- मोबाइल का मनगढ़ंत हो सकता है, सर्वज्ञ का तो गढ़ंत ही है।
- हर बात में विज्ञान को लाना ही सर्वज्ञ पर श्रद्धान ही नहीं ये बता रहा है।
- परोक्ष ज्ञान से क्षायिक प्रत्यक्ष ज्ञान की तुलना करना ही गलत है।
- सर्वज्ञ द्वारा कथित महापुरुषों के मुख से कानों में पड़ रहा है ये आश्चर्य है। उनके वचनों पर श्रद्धान करो, तभी बेड़ा पार होना संभव।
- निगोद से सीधा यहाँ आकर 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त में मुनि बन केवलज्ञान को पा मुक्ति प्राप्त कर लेता है - यह आश्चर्य की बात है।
- एक सर्वज्ञ भी दूसरे सर्वज्ञ का संवेदन नहीं कर सकते। वर्तमान का ही संवेदन अतीत एवं अनागत का भी संवेदन नहीं कर सकते। - ये आश्चर्य की बात है।
- "अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य" अल्प आरम्भ और अल्प परिग्रह मनुष्य आयु का कारण है। तभी बिना उपदेश के भी एक निगोदिया सीधे वहाँ से निकल मोक्ष चला जाता है।
- पहले लाइन वाले टेलिफोन होते थे - तार जुड़ते ही काम होता था आज गूगल आ गया - आश्चर्य की बात है। अपनी योग्यता से पेज को मिलाइये।

- सम्यग्दर्शन के साथ द्रव्य श्रुत की व्याप्ति तीन काल में घटित नहीं होती। दर्शन-ज्ञान-चारित्र एक साथ
- पशु-पक्षियों को हो रहा है - आपको नहीं ये आश्चर्य की बात है।
- ४½ महिने में अथवा सम्मूर्छन है तो अन्तर्मुहूर्त में सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान एवं संयमासंयम एक साथ होता है।
- पहले सम्यग्दर्शन होता है फिर चारित्र धारण करते हैं, यह धारणा ही गलत है। (आगम विरुद्ध धारणा है)
- पारणा सही नहीं तब तक धारणा टूटती नहीं।
- सम्यग्दर्शन के साथ आश्चर्य का होना दोष है।
- चार बार स्वाध्याय करने वालों का ये हाल है, हमारी कुटिया ही अच्छी है, हॉल का प्रबन्धन और महंगा/खर्चीला है।
- राघव मच्छ कोई स्वाध्याय नहीं करता, फिर भी सम्यग्दर्शन हो जाता है, बात रुचि की है। श्रद्धान की है।

०००

- कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो प्रकाश में नहीं आते किन्तु प्रकाश करते रहते हैं।
- एक समय में जघन्य से एक उत्कृष्ट से 108 जीव मुक्त हो सकते हैं, सम्भव है इसीलिए मुनिमहाराज के आगे 108 लगाते हैं। क्षपक श्रेणी 108 एवं उपशम श्रेणी 54 जीव चढ़ते हैं।
- आयु का स्थानान्तरण नहीं हो सकता, न ही आयु के बिना इधर-उधर भाग सकता है।

२५-२-२१, वेदीका शिलान्यास समारोह गुरुवार

0 पत्थर के मन्दिर बनने में वर्षों लगते हैं तब जाकर हजारों वर्षों तक लाखों भव्य जीव लाभान्वित होते हैं।

0 इन जिनालयों के माध्यम से इस चोगले (आसपास) को साधना/उपासना एवं आतिथ्य सत्कार करके प्रभावना का भी सुअवसर प्राप्त होगा।

0 संस्मरण - "कुन्दकुन्द आचार्य ने निर्वाण भक्ति में कहा - "रेवा उभयतडग्गे" रेवा अर्थात नर्मदा नदी के दोनों तटों से अनेक सिद्धात्माओं ने सिद्धत्व की प्राप्ति की। इसी बात को लेकर खातेगांव, हरदा, इटारसी, औरंगाबाद आदि आसपास के लोग इन्दौर के प्रतिष्ठित पण्डित नाथूलाल जी को लेकर कुण्डलपुर में सर्वप्रथम आये थे। यहाँ के बारे में बताया और कहा महाराज इस क्षेत्र का भी उद्धार हो जाये। एक बार यात्रा करो, सब अवगत हो जायेगा। हम स्थान सर्वप्रथम आये तब लगा कि यहाँ विकास की पूर्ण संभावना है।"

0 लोगों के लिए पहले ठहरने की व्यवस्था की। लक्ष्मी यहीं से निकला है। तपस्या का फल है - दान में पैसा देना। उसका सदुपयोग और ज्यादा कठीन है।

0 एक मुहूर्त दूसरे मुहूर्त को भी आकृष्ट करता है। वैसे ही यह गुरुपुष्य योग का मुहूर्त सिद्ध हो।

0 नाभि कुण्ड है यह नर्मदा का - जैन ही नहीं जैनेतर लाखों में यहाँ श्रद्धा के साथ आते हैं। यहाँ अभक्ष्यभक्षण न हो, सभी अपने अपने इष्ट का मात्र गुणगान करें तभी पवित्रता कायम रहेगी। 000

26-2-21 "जितनी चाबी भरी राम ने..." शुक्रवार
आयु के अभाव में एक सेकण्ड भी जीव रह नहीं सकता, मरण को प्राप्त हो जाता है। "आयुक्षयेन मरणं" दीर्घ संहनन धारी हो, शलाका-महापुरुष हो आयु के अभाव में बैठे-बैठे ही लुढ़क जाते हैं।

विद्या-वाणी

0 आश्चर्य होता है आयु है तो दीर्घकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) तक वह नोकर्म ज्यों का त्यों बना रहता है। विज्ञान ने भी माना जीवाश्म अथवा अवशेष जिसमें 100 मीटर तक के भी कंकाल मिलते हैं।

0 संघातन इतनी हुई कि दीर्घकाल तक वह परिसातन क्रिया चलती ही रही।

0 आज पहाड़ों की भी उम्र विज्ञान ज्ञात कर लेता है - विज्ञान।

0 आयु पूर्ण होते ही पहाड़ भी नदी एवं नदी पहाड़ बन जाती है। अरबों-खरबों भी खर्च कर दो तो इन्हें बना नहीं सकते।

0 रुग्णावस्था में वर्षों दवाई लेकर अथवा दवाई नहीं है तो भी खांसते-खांसते निकाल देता है। यह अकाट्य नियम है कि ये सब खेल आयु कर्म का है।

0 विज्ञान इस आयु को नहीं पहचानता। मैटर कह देता है पर यह जीवन है / life है।

0 आयु प्राण समाप्त होते ही सिद्ध बन जाते हैं - "सिद्धा न जीवा"

0 कर्म सिद्धान्त कौन समझनेवाला कर्तृत्व लगाता है, कर्तव्य से विमुख हो जाता है।

000

२१-१०-१२। सफलता की कुंजी शनिवार

"जिस प्रकार प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी कठीन प्रश्न पत्र को भी कम समय में हल करके कक्षा से बाहर आ जाता है, लोग आश्चर्य से देखते हैं उसे। वह केवल एकाग्रचित्त होकर प्रश्न-पत्र हल करता है ऐसे ही मोक्षमार्ग में श्रमण करते हैं। इधर-उधर देखते ही नहीं तभी सफलता प्राप्त होती है।"

विद्या वाणी

○ नरक में महोत्सव नहीं, सूर्य दिखता ही नहीं, स्वागत का काम नहीं, शोक-भय-अरति का ही वातावरण रहता है यदि यहाँ हो तो कैसे करोगे। आचार्य कहते हैं- श्रमण तो चलाकर ऐसे वातावरण में तत्त्व चिंतन करते हैं।

○ श्मसान में वियोग में सभी परिजन झुलसते रहते हैं परन्तु ये कोई नहीं सोचता कि वो अकेला हमारे बिना कैसे रहेगा।

○ जैसे जन्म से अकेले आया वैसे ही संघ से भी अकेले ही विदा होना है।

○ शास्त्रों का प्रत्येक शब्द-वाक्य उपयोगी है किन्तु आज मतलब का तो पढ़ते हैं एवं अपना ही अर्थ लगा लेते हैं।

○ जो स्वरूपस्थ (अर्हत् परमेष्ठी) हो चुके हैं उनको ध्यान में लाओ - उन्होंने गाफिल होने की समस्त घाटियाँ पार कर दी हैं। संयोग-वियोग से ऊपर उठ चुके हैं।

○ मुमुक्षु जंगल में भी उन वीतराग महाराज के दर्शन कर अपने आपको धन्य मानता है।

o देव पूजा की थाली ले परिवार सहित बैठे हैं और वे स्थान से बाहर आते ही आकाश में चले गये। बड़ा अद्भुत लगता है।

o सभी साधक दीक्षा की तिथी से शरीर विदा होने की तिथी तक अपनी परीक्षा के प्रश्न-पत्र लिखते ही रहते हैं। साधना के बल पर उसमें शत-प्रतिशत सफल भी होते हैं।

o हास्य को पीने का प्रयास करो और शोक भी आ जाये तो अशोक वृक्ष को याद करो।

o श्रावक चाहता है साधु हमेशा आशीर्वाद का हाथ उठाकर ही रखे पर है तो वह प्रमाद का ही प्रतीक।

o प्रथमानुयोग के कथानकों को पढ़कर लगता है- सफलता की घड़ी दूर है- पर है तो यही।

o इस परीक्षा में जब तक 100 में से 100 अंक नहीं आयेंगे, देव भी पूजने नहीं आयेंगे।

o प्रभु से मांगना गलत है, भाव तो रख ही सकते हैं।

o दया के मूर्ति, क्षायिक ज्ञान के धनी भगवन् संसार को देखकर कैसे सुखी हैं- मुझे आश्चर्य होता है।

o o o

संस्मरण ईसरी में वर्णीजी (जिनेन्द्रजी) को जब गरम पूड़ी से आराम मिला, पेट साफ हुआ तो कहा - ये सफल प्रयोग हुआ, एक नया जीवन जैसा लग रहा है। एनिमा आदि से छुटकारा मिल गया। इससे बहुत हल्का लग रहा है।

२४-२-२१ पहचानो भीतर की शक्ति को रविवार

"जिस प्रकार पंख वाले जीवों को बिना ट्रेनिंग के भी उड़ना आता है उसके लिए शिक्षा की आवश्यकता नहीं पड़ती इसी प्रकार पंख नहीं है फिर भी मनुष्यों में ऐसी ऋद्धि प्राप्त हो जाती है वे मुनिराज आकाशमार्ग में गमन करते हैं, अकृत्रिम चैत्यालय आदि की वंदना करते हैं।"

विद्या-सूत्र

○ विज्ञान बताता है एक मक्खी में भी विमान से तेज गति/वेग पाया जा सकता है। कितनी क्षमता है चारइन्द्रिय के पास।

○ कर्मोदय के कारण इस तरह की शक्ति मिलती है, छोटी सी चिड़िया भी आसमान की ऊँचाइयाँ छूती है, वह कभी भी गिरती नहीं है।

○ कार विदेश से ला सकते हो परन्तु सड़क तो देशी ही है। ध्यान रखना विदेश से लाकर देश में चला रहे हो।

○ अभिमान होना एवं हीन-हिन होना ये सब मन की करामात है। ज्ञान को पाकर यदि अभिमान अथवा हीनहीन होते हो तो वह ज्ञान . अभिशाप सिद्ध होता है।

○ अपनी आवाज से दूसरों को बाधा न पहुँचे यदि पहुँचाते हो तो नीचे (नरक) जाकर वह भी आपको बाधा पहुँचायेगा।

○ यहाँ भागने की सुविधा है देव या नरक में भागने की सुविधा नहीं।

○ जैसे यहाँ मोबाइल का नेटवर्क होता है वैसे देवों में अवधिज्ञान की सीमा होती है/सीमा में ही वह काम करता है।

o अभिमान, प्रतिशोध, मात्सर्य के कारण हम ज्ञान का दुरुपयोग ही अधिक करते हैं।

o हम यहाँ आपके पुण्य से नहीं, अपने पुण्य से आये हैं,

o बहुत ज्यादा सोचने से यह मन निष्प्रयोजन ही कषाय करता रहता है।

o कर्म बंध किये हैं उनका आज विचार करते हैं तो शान्त दशा में कोने में बैठ कर मन रोता है।

o पश्चाताप की अग्नि में झुलसते रहना ही प्रतिक्रमण आलोचना, गर्हा आदि है।

o दूसरों के लिए किये कार्य से शक्ति तो लग जाती है पर फल नहीं लगते बल्कि कांटे और लग जाते हैं और विषैले फल लग जाते हैं।

o ऋद्धि होने पर भी उपयोग नहीं करते, करते भी हैं तो वंदना आदि में हम अभी उन्हें याद करके ही अपने को संतुष्ट मानते हैं।

~~इसके~~ अधिकार रखें बिना अधिकरण का संरक्षण नहीं होता, अधिकरण अर्थात आधार की रक्षा करना परम अनिवार्य है।

o जैन समाज ने ~~ह~~मेशा अपव्यय को रोका अपव्यय से बचाकर राशि का सही जगह उपयोग उदारता के साथ किया। परिणाम शिक्षा में प्रतिभास्थली एवं चिकित्सा में पूर्णायु / भाग्योदय आज दिख रहा है।

o जैसे दो संघ विहार करके आये वैसे हुये संघ विहार भी कर सकता है इसलिये अतिविश्वास में न रहो।

o o o

24-2-2। रविवारीय प्रवचनांश। अपराह्न,

- सम् उपसर्ग पूर्वक संग्रह शब्द बना समीचीन गृह्णाति इति संग्रह परि उपसर्ग पूर्वक परिग्रह बना - परि आ समन्तात् इति परिग्रह दोनों में बहुत अन्तर है। संग्रह के साथ मुर्छा नहीं लगी परिग्रह के साथ मुर्छा लगी है।
- द्रव्य को ही नहीं भावों को धर्म माना है उसी से कर्मनिर्जरा, निर्मोहपना आता है।
- द्रव्य से तो त्याग कर दिया परन्तु प्रकारान्तर से अभी भी छोड़ा नहीं, इसका नाम धर्म है ही नहीं।
- सरकार का एजेण्डा - जनता की मांग को पूरा करना, शराब की दुकाने गली-गली में खोलना एवं घरों तक पहुँचाना / हमारा भी एजेण्डा है - हम इसका समर्थन नहीं करेंगे - 3
- अकुआ के दुग्ध एवं सिन्थेटिक दुग्ध दोनों में विशेष अन्तर नहीं दोनों ही प्राणलेवा है। कदाचित् अकुआ के दुग्ध को औषध रूप में ग्रहण कर जीवनदायी बनाया जा सकता है किन्तु सिन्थेटिक दुग्ध मात्र हानिकारक है।
- कोरोना को भगाने की क्षमता भारत के पास ही मिली। गंवार भले ही है पर विज्ञान को भी पीछे कर दिया क्योंकि भारत के पास विज्ञान नहीं वितराग विज्ञान है।
- आयुर्वेद जिनवाणी का ही एक अंश और अंग है।
- आयुर्वेद में यंत्रों की अपेक्षा मन्त्रों का प्रयोग होता है, भगवान के दर्शन एवं शुद्ध औषधी मन्त्रों से मिलती है।
- उत्पादन के साथ वितरण अनिवार्य है जैसे - भोजन किया पचाना भी जरूरी है।

०००

26 मुनि
मिलन समारोह

1-3-21 ट्रायल बोल सोमवार

जिस प्रकार एक विद्यार्थी किसी प्रश्न को अधूरा हल कर पाता है इसका अर्थ ये नहीं की वह गलत है, जितना लिखा है वह सही है। कार्य अधूरा है विलम्ब हो सकता है, होता है इसी तरह मोक्षमार्ग में लगा रहना चाहिए।

विद्या-वाणी

- समय-समय पर जो अनुभव प्राप्त होते हैं, उन्हें प्राप्त कर लेना चाहिए।
- वैश्विक कष्ट-बाधा के समय श्रावक हो या साधु दोनों को विकेन्द्रिकरण अनिवार्य है।
- विसंवाद से रहित हो, सभी को धर्म का लाभ हो इस तरह से व्यवस्थित करना आप्त का लक्षण है।
- दीक्षित होना अलग बात है फिर शिक्षा एवं संघ के साथ निर्वाह होना महत्त्वपूर्ण है। परिसर में एकता होने पर ही यह संभव है।
- प्रभावना, एकान्त एवं सुरक्षा की दृष्टि अकोदिया में चातुर्मास किया इससे क्षेत्र एवं समाज को लाभ भी मिला।
- प्यासे को पानी वहीं जाकर पिलायें ऐसा तो है नहीं पाइप लाइन (नल) की व्यवस्था भी होती है।
- अभी कहा - ये एक व्यवस्था थी। हाँ ये ट्रायल बोल थी। सब लोगों का अनुभव अच्छा था।
- गुरुजी - हम स्वयं चल रहे हैं, कोई चलना चाहता है तो थोड़ा सा सहारा दे दिया।

1-3-91 विवेक रूपी दीपक पूजन के बाद

जिस प्रकार दिया तले अंधेरा मतलब दीपक के नीचे अंधेरा होता है, बुझने वाला होता है, इसमें धुंआ होता है। किन्तु रत्न दीपक बुझता नहीं, हवा से स्पंदित भी नहीं, आंखों को भी अच्छा लगता है, इसी प्रकार श्रावक के सप्त गुणों में विवेक रूपी दीपक होता है, जो रत्नदीपक से भी बढ़कर है। विवेक से ही सभी द्रव्य का सही उपयोग हो सकता है।

विद्या - सूत्र

- शास्त्रों में द्वितीय शुक्ल ध्यान की उपमा रत्नदीपक से दी है।
- जुलुस आदि में सिर पर गैसबत्ती आदि लेकर चलते हैं - वह स्वयं अंधेरे में रहता है परन्तु हजारों को प्रकाशित करता रहता है। हमारी चर्या ऐसी ही हो स्वयं भी प्रकाशित रहते हैं- दूसरों को भी प्रकाश प्रदान करते रहें। गुरुजी ने ऐसा ही किया था।
- उन्होंने साहित्य की रचना प्रकाश में आने हेतु नहीं की थी, सहित का भाव साहित्य, दूसरों को प्रकाश प्रदान करने के लिए साहित्य की रचना की थी।
- उन जैसी साधना तो नहीं पर उनका अनुचर सदैव बना रहूँगा।
- प्रकाश में नहीं आना बहुत बड़ा गुण - स्वभाव अथवा वृत्ति है।
- जैसे तिगड्डा पर आपस में मिल जाते हैं, जंक्शन पर गाड़ियाँ आती हैं पर ज्यादा समय नहीं रह पाते।
- प्रत्यक्ष में आज्ञा का पालन और परोक्ष में आज्ञा का पालन जमीन-आसमान का अन्तर है। कर्तव्य मानकर परोक्ष आज्ञा का पालन करें।
- कम से कम संसार का समय बच जाये ऐसी साधना करना है।

ooo

२-३-९१ वैराग्य एवं आरोग्य का उपाय मंगलवार

"जिस प्रकार जो रोटी बनाता है तो उसको सेकते समय शुरुआत में थोड़ा चटका लगता है, हाथ भी जल जाता है परन्तु उसी रोटी को खाने से सबका पेट दर्द ठीक हो जाता है। इसी तरह तपस्या में भी शुरुआत में मोही से निर्मोही बनने पर होता है। मोह के क्षय से सभी कर्म नष्ट हो जाते हैं।"

विद्या-वाणी

संस्मरण "बात महावीर जयन्ती के पूर्व की है। रजवास से आहार लेकर चले। मदनपुर, हसैरा आदि होते हुये मड़ावरा आये। गर्मी तेज, लू चल रही थी। दूर से ही शिखर दिखे। पूरे गांव में शिखर ही शिखर सब अलग-अलग प्रकार से बनाये हुये। पंचकल्याणक हेतु मूर्तियाँ रखी थीं आड़ी, लोगों ने कहा इनको खड़े करके प्रतिष्ठा करानी है। उस समय ऐसी प्रभावना आज प्रभाव दिख रहा है। मात्र अचेतन धन ही नहीं प्रतिभास्थली हेतु चेतन धन भी खूब मिला इस बुन्देलखण्ड की इस तन्दूरी में। तप्ताम् करी इति तन्दूरी। जब धरती तप जाती है उसी को तन्दूरी कहते हैं।

- बुन्देलखण्ड में धार्मिक संस्कार स्वभाविक है, इनकी दुकान का पता नहीं हमारी दुकान तो बहुत अच्छी चली।
- चेतन एवं अचेतन धनराशि सबसे अधिक बुन्देलखण्ड से मिली। नेमावर में सबसे अधिक राशि बुन्देलखण्ड से आ

- हम कभी भी जबरदस्ती करते नहीं। समाज के लोग उत्साहित होकर अच्छे कार्य में लगा रहे हैं। संस्कारों को जीवित करने में खर्च कर रहे हैं।
- बड़े-बड़े पंचकल्याणक आदि करते हैं पर अपव्यय नहीं करते, बचाकर धार्मिक कार्यों में लगाते हैं फलस्वरूप अगले जीवन की यात्रा का भी प्रबंध कर रहे हैं।
- पुण्य के उदय से कितना भी मिले पर उससे परहेज रखना क्यों कि जब उससे मोक्ष ही मिलने वाला है तो स्वर्ग का वैभव तो बिना मांगे मिलेगा भूसा की तरह।
- कर्मक्षयात् = कर्म क्षय के लिए ये सब कर रहे हैं।
- केवु उपाय क्या पुन ही उपाय है कि जो भी संग्रह किया वह काम में आने वाला नहीं है। तरण नहीं वितरण के बिना।"
- नाव को तरण कहते हैं- इस छोर से उस छोर जाना है तो वितरण जरूरी है।
- आप जिस अनुपात में कमाते हैं उस अनुपात में वितरण नहीं करते - सही बताओ, ऐसा है ना?
- थोड़ा-थोड़ा सुरक्षित करें - समय पर काम आयेगा।
- सर्व (सकल) दत्ति = कन्या का दान कर दिया।
- दान से ही वैराग्य सुरक्षित एवं आरोग्य अर्थात् मुक्ति की प्राप्ति होगी।
- राजा क्षत्रिय होता है, कोश की चाबी नहीं रखता, तलवार एवं ढाल रखता है। बनिया तो धर्म कांटे को भी दबाता रहता है।

ooo

वर्धमानसागर (जी/संघ)
मिलन
3-3-21 मजबूती उपादान की बुधवार

जिस प्रकार कोई कन्सट्रक्शन (नवनिर्माण) का कार्य करते हैं उसमे पिलर (स्तम्भ) खड़े करते हैं वह छत को सहारा देने के लिये खड़े किये जाते हैं परन्तु यदि उस प्लार (स्तम्भ) को भी सहारा देना पड़े तो वह क्या दूसरे को सहारा दे पायेगा? नहीं दे पायेगा ठीक इसी तरह आचार्य कुन्द ने कहा - मोक्षमार्ग में अतिबाल एवं अतिवृद्ध को दीक्षा नहीं है अर्थात् शुरुआत से सपोर्ट नहीं हो कालान्तर में आवश्यक पड़े तो फिर भी ठीक जैसे भक्त प्रत्याख्यान में करते हैं।

विद्या - सूत्र

- जिन लिंग की दीक्षा हेतु महान पुण्य चाहिए साथ ही संहनन भी चाहिए।
- इचलकरंजी जी के ब्रह्मचारी (वर्धमान सागर जी) जो आये थे अमरकंटक जा रहे थे - दीक्षा की भावना व्यक्त की थी। हमने कहा - भावना अच्छी है किन्तु दक्षिण की गाड़ी (शरीर) है शीत-उष्ण उस ओर के लोग सहन कैसे करेंगे। उधर का खानपान, रहन-सहन आदि भी अलग है।
- आयुकर्म भिन्न है एवं संहनन भिन्न, यह नामकर्म है।
- आज तीन हीन संहनन ही होते हैं इसलिए मरुस्थल, एवं जांगल (जंगल) इस क्षेत्र का भी ध्यान रखें।
- गाड़ी तो बहुत अच्छी हो पर घासलेट तेल से चलाना अच्छा नहीं माना जाता, रोड भी अच्छी हो।

- पात्र को प्रोत्साहन दें किन्तु दीक्षा हेतु तो जल्दबाजी नहीं कर सकते। शरीर की क्षमता देखना भी आवश्यक है।
- कई बार पाया/देखा गया - आहार की क्षमता है ही नहीं लेकिन इच्छा खूब है आयु कर्म भी शेष है ऐसे में आर्त-रौद्र परिणाम होते हैं।
- स्वयं को संस्कारित रखना पहले आवश्यक है। उपादान में मजबूती होती है तो निमित्त भी साथ हो जाते हैं नहीं तो पचासों आचार्य भी मिलकर सल्लेखना नहीं करा सकते।
- भगवती आराधना में आया - पानी-पानी कह रहा है, थाली सामने रख दी, लिया नहीं जा रहा। आत्मा पर दृष्टि गयी, परिणाम बदले, सर्वार्थसिद्धि पहुँच जाता है।
- श्रुतकेवली कल्पोऽपि = इनको भी अंतिम क्षण में णमोकार मंत्र मुख से निकलना बहुत कठिन है।
- उठना-बैठना नहीं हो रहा, भूख पूर्व के अनुसार ही लग रही है, ऐसे में देते हैं तो गड़बड़ नहीं देते तो भी ठीक नहीं है।
- समयसार पढ़ना बहुत सरल है लेकिन मूलाचार की चर्या निभाना बहुत कठिन है।
- दक्षिण से सम्मेदशिखर जी हेतु शान्तिसागर जी महाराज आ रहे थे, संघ के एक मुनिराज को भगन्दर हो गया। पुनः वापिस लौटना पड़ा। ○ सिंह वृत्ति रखो - सियार वृत्ति नहीं।
- भाव एवं शरीर (द्रव्य) दोनों मिलकर काम करेंगे।
- शरीर रुलाना एवं संसार में रुलाना चाहता है किन्तु हम रुयें/रोयें नहीं।
- चिरायु की नहीं श्रेयायु की तो कामना करते हैं।

ooo

५-३-२१ कैसे बनें मनोविजयी गुरुवार

"जब बालक छोटा होता है तो उसके कान छेदे जाते हैं। एक अथवा अधिक स्थान पर छेदते हैं क्योंकि वहाँ बिन्दु (Point) रहते हैं मन को नियन्त्रित करने हेतु कान आदि इन्द्रिय की तरह न तो नियत स्थान है तथा न ही नियत विषय, इसलिए इसका निग्रह नहीं हो पाती। अच्छे-अच्छे साधक भी चंगुल में फँस जाते हैं उस मन के कारण"

विद्या - सूत्र

- "मूलगुण को, इन्द्रिय जय न कि, मनोविजय" अर्थात् मन का विषय पाठ्यक्रम में है ही नहीं।
- पांच इन्द्रियों को वश में किये बिना कोई भी कभी भी मनोविजयी हो ही नहीं सकेगा।
- पांचो इन्द्रियाँ कभी भी प्रश्न नहीं करती, मन ही हमेशा प्रश्न करता है।
- आपका निर्णय ठीक परन्तु आपके मन का निर्णय ठीक नहीं
- इन्द्रियों के विषय अपने-अपने हैं जब कि मन का अपना कोई विषय नहीं, सब कुछ पराया ही है, ऐसे मन प्राणी को पाल रखा है आपने।
- इन्द्रियाँ कभी भी स्वछंद नहीं होती, मन ही स्वछंद होता है। मन अपने छंद का निर्माण करे, स्वछंद न हो।
- आगम में मन को निग्रह करने का कहा, मनोविजयी शब्द नहीं इसलिये इन्द्रियों पर जय प्राप्त करो, मन का तो निग्रह होगा ही।

ooo

तत्त्व-चर्चा

दिगम्बरत्व क्या ?

- दिगम्बरत्व के बिना तीन काल में मोक्षमार्ग/श्रामण्य बन ही नहीं सकता।
- अहिंसा महाव्रत का पालन दिगम्बरत्व के बिना सम्भव ही नहीं। परिग्रह को पाप मानना मात्र महाव्रती के वश की बात है सबके वश की नहीं।
- "प्रतिशोध में, बोध भी अन्धा होता, शोध तो दूर" जैसे - मासोपवासी महाराज निदान से कुणिक बन श्रेणिक के यहाँ हुये उसी तरह साधक यदि प्रतिशोध करता है तो संसार का ही विस्तार कर लेता है।
- मोक्षमार्ग में मंजिल तक पहुँचना है तो कुछ भी चेवश मत करो।
- सावधानी का नाम समीति है। दूसरों से करवा नहीं सकते।
- संकल्प का पालन करने के लिये समीति का पालन करना अनिवार्य है।
- पांच पापों का त्याग करना ही चारित्र है। गृहस्थ में पांच पापों का त्याग हो ही नहीं सकता। आंशिक (अणु) रूप में भले ही होवें।
- स्वाध्याय को छः आवश्यक में नहीं रखा परन्तु प्रत्येक आवश्यक में स्वाध्याय गर्भित ही है। स्वाध्याय प्रेमीयों को बुरा लगा किन्तु कांटा निकालने के लिए पहले तो सुई चुभोई जाती है।

ॐॐॐ

5-3-२। वस्त्र जरूरी क्यों शुक्रवार

आप लोग जिस किसी वस्तु का संपादन कर वस्तु का उपयोग करते हैं किन्तु उसकी संरचना कैसे हुई पता नहीं लगाते/सोचते नहीं। जैसे - वस्त्र को ही लो। अच्छे वस्त्र हो तो बैठने - उठने - चलने - फिरने में अच्छा अनुभव करते हैं यदि घटिया वस्त्र हो तो कैसा अनुभव करते हो। अब वह वस्त्र ताना - बाना से बनती है, सूत से बनती है।

वस्त्र नहीं पहने तो...। छठे काल में वही होने वाला है। वस्त्र के बिना शील - संयम की बात ही नहीं, मर्यादा गायब हो जायेगी। वस्त्र नहीं तो आपका सारा परिचय ही समाप्त हो जायेगा। वस्त्रधारी तो ऊपर सोलहवें स्वर्ग तक चला जाता है, बिना वस्त्र वाले नीचे नरक में रहते हैं। छठम काल में तो नरक ही जाना है। कालचक्र किस तरह से परिवर्तन होता है किन्तु अभी पंचमकाल है। इन वस्तुओं से मर्यादा को कायम करो।

इतना अवश्य है। 16 स्वर्ग से ऊपर तो वस्त्र वाले नहीं जा सकते। वस्त्रों का त्याग करना होगा - मुनि बनना होगा, अब तो वस्त्र त्याग करना चाहते हो तो। शील, संयम, मर्यादा वस्त्र के माध्यम से ही बनी रह सकती है। तत्त्व को जानने वाले आप लोग जितना चाहो जितना आवश्यक है उतना उपयोग करते जाओ, ज्यादा आगे न भी बढ़े, कोई बात नहीं।

000

6-3-91 कैसे बचें ध्वनि-प्रदूषण से शनिवार

"जिस प्रकार रेल्वे स्टेशन अथवा भीड़-भाड़ वाले स्थान पर भी आप सामने वाले की बात सुन लेते हो क्यों कि आपका ध्यान उसी पर केन्द्रित रहता है उसी प्रकार धीरे बोलने पर भी आप सुन सकते हो मात्र जरूरत है तो एकाग्रता की। इतनी जोर से माइक में चिल्लाने की क्या आवश्यकता है। ये भी एक प्रकार का पागलपन है, माइक काहे के लिए लगाया है। उसकी आवाज भी बहुत धीरे होनी चाहिए।"

विद्या-वाणी

- आपको मन-वचन एवं काय बल मिले हैं, इसका दुरुपयोग नहीं सदुपयोग करो निश्चित इनमें अतिशय घटित होगा।
- आज प्रदर्शन का भाव आ गया, दर्शन अब गौण हो गये।
- पंचकल्याण एक पावन महोत्सव है किन्तु संगीत से उसमें प्रदूषण फैल जाता है।
- सिद्धचक्र विधान जिसमें सिद्धों की आराधना है, समयसार है, मुनिमहाराज बनकर सिद्ध अवस्था तक का वर्णन बहुत अच्छा है परन्तु संगीत के कारण सब गड़बड़ हो जाता है। कई बार मैं बैठना चाहता हूँ पर ये देवियाँ माने तब तो... । आवाज तेज से प्रदूषण होता है।
- भोजन न हो, भजन हो ठीक है किन्तु कैसे भजन करें ये भी तो ज्ञात हो।

० अपने यहाँ कायोत्सर्ग का कहा। तीनों बल नियन्त्रित होंगे एवं असंख्यात गुणी निर्जरा तो होगी ही। शरीर से भी ध्यान हटा लेते हैं तो दूसरों की बात ही कहाँ?

० एक स्वर में पूजन - पाठ इत्यादि करना आम्नाय स्वाध्याय है। सुनने वाले को आनंद एवं स्वयं को शान्ति का अनुभव होगा।

० जितना बलों का प्रयोग कम उतनी ही शक्ति (अनुभाग) बढ़ता ही जायेगा।

० खर्चा कम आमद ज्यादा लक्षण है सेठ बनने का और आमद कम खर्चा ज्यादा लक्षण है यहाँ से जाने का।

० मनोबल जिसका प्रबल होगा वही गुस्से को पी सकता है। सामने वाला क्रुद्ध भी बोले उसे पी डालो, इससे उसको कष्ट होगा, हम क्या कर सकते हैं।

० बार-बार कहो प्रभाव नहीं, ऊंगली मुंह पर, सब चुप बैठ गये।

० मतलब मिलट्री शासन चाहते हैं।

० जैसे ऑपरेशन थियेटर में डाक्टर घण्टों भी रहें तो भी बोलता नहीं ऐसे ही चौके / रसोई घर में होना चाहिए।

० भोजन करके ऑपरेशन नहीं, ऑपरेशन करके भोजन करते हैं तभी सफलता भी मिलती है।

० जैन दर्शन जैसी दण्डसंहिता / प्रायश्चित आदि का विधान अन्यत्र कहीं देखने को उपलब्ध नहीं होता।

० अपना काम छोड़कर पूरा समय आप ही को दे दूंगा तो भूल जाऊंगा। इसीलिये बाद में... इशारा कर देता है। कितनी भूख है वैभ(व) प्रभाभगवान

- एकदम से विमान नहीं उतरता इसी प्रकार हम भी एकदम से कोई भी कार्य नहीं। पहले उसको घुमा देते हैं।
- चौके में जितनी शान्ति रखोगे उतना ही लाभ देने एवं देखने वाले दोनों को मिलेगा।
- उमास्वामी महाराज के सूत्र विधि-द्रव्य दातृ पात्रविशेषात्तद् विशेषः। ये श्रावक का शिक्षाव्रत भी है, अवश्य ध्यान में रखें।
- आप सीनियर (Senior) तो हो चुके हैं परन्तु See near नहीं हो पा रहे हैं।
- आप पास (Pass) में नहीं आ पा रहे, इसीलिए तो By-Pass निकल रहे हैं।
- असर कम होता जा रहा है असरदार अर्थात असरदार बनें तभी असर होगा।
- आज विज्ञान की शक्ति तो बढ़ रही है पर वातावरण पर क्या रियेक्शन हो रहे हैं कोई नहीं सोच पा रहा है। अब तो वायर वाले नहीं वायर लेस आ रहे हैं।
- मनुष्य की आवाज से कोलाहल (प्रदूषण) फैलता है, और पक्षीयों की आवाज से कलरव (सभी सुनने को लालायित रहते है।
- आज का एक सूत्र, गांठ बांधलें- "तुमसे मेरे कर्म कटे मुझसे, तुम्हें क्या मिला?"
- शब्द की गति को पहचानो। बहुत तीव्र गति होती है। परमाणु के बाद शब्द की ही नम्बर है वह भी दो समय में सम्पूर्ण लोक में फैल जाता है।

000

7-3-21 विश्वास का रंग रविवार

प्रश्न- हाथी चढ़, घोड़ा चढ़यो, बैठ पालकी माँय,
कब के थाके है सखी, अबे दबावत पांव।

उत्तर- भू सूत्यो, भूखा मर्यो, कीनो उग्र विहार,
तब के थाके है सखी, अबे दबावत पांव।

कर्म सिद्धान्त पर विश्वास करने वाला ही ऐसा कर पाता है। जो परिश्रम एवं कर्तव्य से विमुख है तो उसे मिलने वाला भी नहीं। जमीन पर लेटा, करपात्री बन पदयात्रा की तभी आज इतना ठाठ-बाठ देखने को मिल रहा है।

विद्या - वाणी

- क्या - कब - क्यों - कैसे इत्यादि प्रश्न उठते ही नहीं उठ भी जायें तो आज मानते नहीं अपितु जानते और हैं।
- आज प्रत्यक्ष कुछ नहीं, जो है वह परोक्ष ही मिल रहा है। श्रुतज्ञान परोक्ष ज्ञान है, मतिज्ञान सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष है अतः इसमें भी कुछ संवेदन है किन्तु श्रुतज्ञान के साथ संवेदन की बात नहीं, यह मान्यता पर आधारित है।
- श्रुतज्ञान में ऐसा चक्कर है, अरहे-अरहे उसमें फँस जाओ। अपने को संभालना है तो मतिज्ञान से संभालो।
- श्रुतज्ञान मान्यता के आधार पर कार्य करता है। देव-गुरु-शास्त्र के ही वचन हैं, विश्वास करो तभी रंग चढ़ेगा।
- श्रुतज्ञान बोलता है जबकि मतिज्ञान तो गूंगा है।

०००

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	23/10/2020	भारतीय संस्कृति-स्वस्थ संस्कृति	नेमीनगर (जैन कॉलोनी) इन्दौर	3
2	31/10/2020	संकल्प से परिवर्तन		4
3.	05/11/2020	नौकर नहीं, उद्योगपति बनें	विजयनगर - इन्दौर	5
4.	06/11/2020	श्वान से लें शिक्षा		6
5.	07/11/2020	बीजत्व नष्ट करने का उपाय		7
6.	08/11/2020	भाव प्रधान है धर्म		8
7.	09/11/2020	दान करो अगरबत्ती सा		9
8.	10/11/2020	हथकरघा के वस्त्रों का लाभ		10
9.	11/11/2020	ऐसे बनेगा जिन मन्दिर		11
10.	12/11/2020	लाभ देशी वस्त्रों के		12
11.	13/11/2020	पहली रोटी गैया की (प्रातः)		13
12.	13/11/2020	मन्दिर शिलान्यास (मध्याह्न)		14
13.	14/11/2020	बिन पानी सब सून		17
14.	15/11/2020	कैसे हों भगवान के दर्शन (प्रातः)		18
15.	15/11/2020	पिच्छिका परिवर्तन समारोह (मध्याह्न)	विजयनगर	19
16.	16/11/2020	पशुपती की अर्चना	महालक्ष्मीनगर	20
17.	17/11/2020	जाने मतलब ऋषभ विहार का	दूधिया	22
18.	18/11/2020	बचें विरुद्ध राज्यातिक्रम से	डबलचौकी	23
19.	19/11/2020	विश्व ने माना- आयुर्वेद की शक्ति को	भमोरी	24
20.	20/11/2020	राम-राज्य लाना है तो	बेडामऊ	25
21.	21/11/2020	भावों का परिणाम	हतनोरी	26
22.	22/11/2020	दया को याद करता यादव	बागन खेड़ा	28
23.	23/11/2020	नदी सम पवित्र, सागर सम विशाल	कन्नौद	29
24.	24/11/2020	भला विराजो जी	खातेगाँव	30
25.	25/11/2020	भाव पलटने से पासा पलटता	खातेगाँव	31

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
26.	26/11/2020	जड़ कर्मों की शक्ति जानों	खातेगाँव	32
27.	27/11/2020	अन्तिम परीक्षा	सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर	33
28.	28/11/2020	संगत का असर		34
29.	29/11/2020	माँगने की आदत		35
30.	30/11/2020	अब तो आंखे खोलो		36
31.	01/12/2020	घर में रहें- नारियल की तरह		37
32.	02/12/2020	संस्मरण- खरबूजा को देखकर.......		38
33.	03/12/2020	धरती की महानता		39
34.	04/12/2020	आओ बदले हाथ की रेखायें		40
35.	05/12/2020	उपासना अहिंसा महादेवता की		41
36.	06/12/2020	दर्पण बोलता है		42
37.	07/12/2020	अपनाओ सिंह की प्रवृत्ति		44
38.	08/12/2020	विकृति से प्रकृति की ओर		45
39.	09/12/2020	नागरिक बनो- देश बनेगा		47
40.	10/12/2020	वीतरागता तैराती-राग डूबोता		49
41.	11/12/2020	अब तो दूर हो राग रूपी चिपकन		52
42.	12/12/2020	स्वाश्रित जीवन		54
43.	13/12/2020	आओ लौट चलें....		55
44.	14/12/2020	तन मिला तुम तप करो		59
45.	15/12/2020	बदलो दृष्टि- बदलेगी सृष्टि		61
46.	16/12/2020	सुनो तो समझो		64
47.	17/12/2020	पहचानो असली हीरे को		66
48.	18/12/2020	फार्मूला जहर उतारने का		67
49.	19/12/2020	कर्मों का खेल		69
50.	20/12/2020	कर्त्तत्व बुद्धि रखो		71
51.	21/12/2020	अतिथी संविभाग- धन के करो सही भाग		72

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
52.	22/12/2020	कषाय रूपी अग्नि से बचें	सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर	74
53.	23/12/2020	स्वरूप प्रथम प्रतिमा का (प्रातः)		77
54.	23/12/2020	जो मिला उसका उपयोग करो (मध्याह्न)		80
55.	24/12/2020	स्वतंत्र रहे पर स्वछंदन हो (प्रातः)		82
56.	24/12/2020	अन्तर जानें सावद्य एवं आरम्भ में (मध्याह्न)		85
57.	25/12/2020	दान का पात्र कौन?		86
58.	26/12/2020	मुर्छा करके समुर्छन मत बनों		88
59.	27/12/2020	रोना धर्म-पर के लिए		90
60.	28/12/2020	मोक्षमार्ग जटील किन्तु कुटील नहीं		91
61.	29/12/2020	नहीं चाहिए ऐसी कृपा		93
62.	30/12/2020	असम्बद्ध प्रलाप से बचों		95
63.	31/12/2020	वर्ष का ही नहीं- संसार का भी अंत हो		97
64.	01/01/2021	2021 में 21 काम करना है 19 नहीं		99
65.	02/01/2021	कैसे होगी इष्ट की उपलब्धि		101
66.	03/01/2021	टिकिट कौन सा है?		102
67.	04/01/2021	See near कहते हैं सिनियर		104
68.	05/01/2021	सब कुछ आकाश नगर सम		107
69.	06/01/2021	लोकतंत्र में लोभतंत्र नहीं		108
70.	07/01/2021	वास्तविक स्वाद लेना सीखो		110
71.	08/01/2021	कर्म कैसे करें		111
72.	09/01/2021	शिक्षा देती प्रकृति		112
73.	10/01/2021	आओ निर्भिक बनें		114
74.	11/01/2021	भारत में जो है वह कहीं नहीं		116
75.	12/01/2021	अब उड़ जा रे पंछी		118
76.	13/01/2021	आया अकेला-जाये अकेला		120
77.	14/01/2021	फोटोग्राफी हो तो ऐसी		122

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
78.	15/01/2021	औषध नहीं शोधकर खाओ	सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर	124
79.	16/01/2021	आयुर्वेद है महत्वपूर्ण रसायन		127
80.	17/01/2021	योग्य राजा का हो संरक्षण		129
81.	18/01/2021	प्रतिक्षा का आनन्द		131
82.	19/01/2021	मोती खाने एवं चढाने के		133
83.	20/01/2021	पंचमकाल में धर्म की गंगा		134
84.	21/01/2021	एकता का सूत्रपात - पंचायती मन्दिर		136
85.	22/01/2021	कर्त्तव्य की गोली खाओ		137
86.	23/01/2021	दिशा हो नदी की तरह		141
87.	24/01/2021	सीढ़ी में सोना नहीं		147
88.	24/01/2021	दीवाली नहीं होली मनाओ		149
89.	25/01/2021	आत्म अनुभव आसान नहीं पर असंभव भी नहीं		151
90.	26/01/2021	स्वाभिमान रूपी शेर को जगाओ		152
91.	27/01/2021	धर्मध्यान की सच्ची परिभाषा		155
92.	28/01/2021	मत डरो पूरक परीक्षा से		157
93.	29/01/2021	संसार एक जादू का खेल है		159
94.	30/01/2021	फास्ट लाइफ मतलब जल्दी-जल्दी मरना		161
95.	31/01/2021	आरोग्य ही बढ़ाता वैराग्य		163
94.	01/02/2021	क्या होती है स्वस्थ भूख		164
95.	02/02/2021	देव भी पानी भरते हैं		165
96.	03/02/2021	उठ जाग मुसाफिर		167
97.	04/02/2021	भावों का कमाल		168
98.	05/02/2021	बल मिलता Balance से		170
99.	06/02/2021	आओ करें जीवन का मूल्यांकन		171
100.	07/02/2021	मार्ग हल्का बनने का (प्रातः)		173
101.	07/02/2021	अपने मत को दान बनाओ (मध्याह्न)		174

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
102.	08/02/2021	मैली चादर को साफ करो	सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर	175
103.	09/02/2021	आओ सीखें भ्रामरी वृत्ति		176
104.	10/02/2021	आओ जानें परम शत्रु - परम मित्र को		177
105.	11/02/2021	अविवेक सबसे बड़ा अभिशाप		179
106.	12/02/2021	कर्म-सिद्धान्त पर विश्वास करें		180
107.	13/02/2021	रोता कौन ?		181
108.	14/02/2021	इतिहास को जान वर्तमान सुधारो		183
109.	15/02/2021	बांधो मत - बंधना सीखो		186
110.	16/02/2021	प्रतिशत नहीं शतप्रतिशत देखो		187
111.	17/02/2021	कर्त्तव्य की सीमा		190
112.	18/02/2021	गुस्से को कहो - पधारो सा		192
113.	19/02/2021	गैया ढोर नहीं		193
114.	20/02/2021	बचाओ नहीं पचाओ		193
115.	21/02/2021	आलम्बन का महत्त्व		195
116.	22/02/2021	मत करो प्रकृति विरुद्ध आचरण		199
117.	23/02/2021	इतराओ नहीं, जेल में हो		202
118.	24/02/2021	आश्चर्य की बात है		203
119.	25/02/2021	वेदीका शिलान्यास समारोह		206
120.	26/02/2021	जितनी चाबी भरी राम ने...		207
121.	27/02/2021	सफलता की कुंजी		208
122.	28/02/2021	पहचानो भीतर की शक्ति को		210
123.	01/03/2021	ट्राइल बोल		213
124.	01/03/2021	विवेक रूपी दीपक		214
125.	02/03/2021	वैराग्य एवं आरोग्य का उपाय		215
126.	03/03/2021	मजबूती उपादान की		217
127.	04/03/2021	कैसे बनें मनोविजयी		219
128.	05/03/2021	वस्त्र जरूरी क्यों ?		221
129.	06/03/2021	कैसे बचें ध्वनि-प्रदूषण से		222
130.	07/03/2021	विश्वास का रंग		225